A Guide to
Inner Awakening

All is One

सुखमनी बाणी

HINDI

विषय सूची

प्रस्तावना	....	2
विविधता में एकता	....	3
उद्देश्य	....	4
शलोकों की सूची	....	5

प्रस्तावना

सुखमनी पाँचवे नानक, गुरु अर्जन साहिब द्वारा राग गौरी में रचित एक काव्य रचना है। यह सिखों के बीच बहुत लोकप्रिय है, और इसे आमतौर पर सम्मान के लिए "सुखमनी साहिब" के रूप में संदर्भित किया जाता है। गुरु ग्रंथ साहिब में 'शीर्षक' काव्य रचनाओं में सुखमनी सबसे लंबी है। लोग हमेशा से एक ऐसे पारस पत्थर या मणि की तलाश में रहे हैं जो उनके जीवन में चमत्कारिक रूप से खुशियाँ ला सके। गुरु अर्जन सुखमनी के माध्यम से बताते हैं कि खुशी का जादुई पत्थर कोई भौतिक पत्थर या जपने के लिए कुछ मंत्र नहीं है, बल्कि यह दिव्य ज्ञान है जो आंतरिक दोषों द्वारा प्रेरित दुख को नष्ट करता है। वह ज्ञान सुखमनी है जो हमें हुक्म - दिव्य इच्छा को स्वीकार करने में मदद करती है, और हमारा मन दिव्य गुणों में इस तरह से लीन हो जाता है कि लगातार बदलती बाहरी परिस्थितियों में भी आंतरिक शांति बरकरार रहती है। हम केवल अनुष्ठानिक पढ़ने/अनुष्ठान के लिए सुखमनी पढ़कर उस शाश्वत शांति को प्राप्त नहीं कर सकते।

सुखमनी के संदेश को आत्मसात करने से शांति/खुशी मिलती है। सुखमनी की रचना : इस काव्य रचना में 24 श्लोक और अष्टपदी हैं। श्लोक और अष्टपदी काव्य रचनाएँ हैं। श्लोक दो या कुछ अधिक पंक्तियों की रचना होती है। सुखमनी में श्लोक आमतौर पर दो पंक्तियों के होते हैं। अष्टपदी का अर्थ है आठ छंदों की रचना। सुखमनी की प्रत्येक अष्टपदी में दस पंक्तियाँ होती हैं। पहली अष्टपदी के बाद दो पंक्तियों रहाओ होता है। सुखमनी की प्रत्येक अष्टपदी को समझने के लिए हमें 'रहाओ' पंक्तियों के संदेश को हमेशा याद रखना चाहिए।

भाई इंदरजीत सिंघ गोराया
(व्याख्याकार)

विविधता में एकता

आज मुझे कनाडा में रहते हुए 45 साल हो गए हैं। पिछले 40 वर्षों से व्यापारिक कार्यों के सिलसिले में मैंने कई देशों की यात्रा की, कई धर्मों के लोगों से मुलाक़ात हुई और उनके धर्म को नज़दीक से जानने का अवसर मिला। धर्म के क्षेत्र में मुझे लोगों में बहुत सी समानताएँ नज़र आईं। धार्मिक परंपराओं के अलावा, धार्मिक कर्मकांड भी अक्सर एक जैसे ही प्रतीत होते हैं। लेकिन अफ़सोस की बात यह है कि धार्मिक विभाजन आज भी अपने चरम पर है। इतना ही नहीं, परिवारों में आ रही गिरावट और बदसलूकी से भी हम अनजान नहीं हैं।

मैं गुरबाणी को पढ़ने और सुनने का इच्छुक हूँ और यह महसूस करता हूँ कि गुरबाणी का संदेश किसी एक संस्थागत धर्म या मज़हब की स्थापना के लिए नहीं है, बल्कि पूरी मानवता की आत्मिक उन्नति के लिए है। सांझे ईश्वर के साझे मानवीय मूल्य और नैतिक सिद्धांत पर किसी एक मज़हब का अधिकार नहीं है; ये तो पूरी मानवता की साझी विरासत हैं।

इसी संदेश को लोगों तक पहुँचाने के लिए हमने **"एको है भाई एको है"** (All is One) की ओर से एक विनम्र प्रयास किया है, ताकि गुरबाणी की इन शिक्षाओं का अधिक से अधिक प्रचार हो सके। ये शिक्षाएँ न केवल व्यक्तिगत और पारिवारिक संबंधों में सच्चाई और आत्मीयता को पहुँचाएँ, बल्कि समाज में भी आपसी प्रेम और स्नेह की भावना को मजबूती से स्थापित करें। मुझे पूरा विश्वास है कि गुरबाणी की ये गहराई भरी शिक्षाएँ परिवारों, देशों और तथाकथित धर्मों के बीच की दूरियाँ कम कर सकती हैं।

किताबों के अलावा, हम आप सभी की सेवा में एक ऑनलाइन यूनिवर्सिटी और एक गुरबाणी ऐप भी प्रस्तुत करेंगे, जहाँ लोग अपनी भाषा में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का संदेश समझ सकें।

मन्जीत सिंघ नरवाल
'एको है भाई एको है'
(आल इज़ वन)

उद्देश्य

गुरबाणी में दर्शाई गई जीवन-शैली समूची मानवता के लिए लाभदायक है, क्योंकि इसमें दी गई मर्यादाएँ और मूल्य हर एक मनुष्य पर समान रूप से लागू होते हैं। इसमें संकलित मधुर बातें सभी के लिए साझे रूप में खुली बाँहों की भांति अपनत्व की भावना के समान हैं। गुरु साहिबानों द्वारा दिए गए इस अनमोल संदेश को जो भी वास्तव में अपनाता है, वह नम्रता भाव से एक विद्यार्थी के रूप में अपने जीवन में सुधार की दिशा में निरंतर लगा रहता है और समाज में फैली कुरीतियों को समाप्त करने के लिए अपनी आवाज़ बुलंद करता है।

गुरबाणी की जीवन-शैली को साझा करने के उद्देश्य से श्री मनजीत सिंह नरवाल जी ने **"एको है भाई एको है"** (All is One) नामक संस्था की स्थापना कर एक सराहनीय कार्य किया है। इस माध्यम से उन्होंने गुरबाणी के सरल अर्थ चुनिंदा विद्वानों से करवाने का बीड़ा उठाया है। यह प्रयास गुरबाणी के खोजी विद्वानों को प्रोत्साहन देने और उनके कौशल को निखारने में भी लाभकारी सिद्ध हो रहा है। इन प्रेरणादायक कार्यों के लिए उन्होंने अपने व्यापारिक आय का 25% हिस्सा गुरबाणी के प्रचार हेतु समर्पित करने का निर्णय लिया है। इस के अंतर्गत सुखमनी साहिब की रचना को संगतों तक निःशुल्क पहुँचाने का एक विनम्र और समर्पित प्रयास किया गया है, ताकि अधिक से अधिक लोग इसके आत्मिक शांति देने वाले संदेश से लाभान्वित हो सकें।

हम अरदास करते हैं कि परमात्मा हमें शुभ बुद्धि प्रदान करे, ताकि हम निष्काम भावना से गुरबाणी का प्रेमपूर्ण संदेश घर-घर पहुँचा सकें और उसे अपने जीवन का अटूट हिस्सा बना सकें।

पुष्पिंदर सिंघ

शलोकों की सूची

1. आदि गुरए नमह 6
2. दीन दरद दुख 14
3. बहु सासत्र बहु सिमृती 21
4. निरगुनीआर इआनिआ 29
5. देनहारु प्रभ 36
6. काम क्रोध अरु लोभ 44
7. अगम अगाधि 51
8. मनि साचा 60
9. उरि धारै जो अंतरि नामु 67
10. उसतति करहि अनेक 74
11. करण कारण प्रभु 82
12. सुखी बसै मसकीनीआ 90
13. संत सरनि जो जनु 97
14. तजहु सिआनप 104
15. सरब कला भरपूर 111
16. रूपु न रेख 118
17. आदि सचु 125
18. सति पुरखु 132
19. साथि न चालै 140
20. फिरत फिरत 147
21. सरगुन निरगुन 155
22. जीअ जंत के ठाकुरा 162
23. गिआन अंजनु गुरि 169
24. पूरा प्रभु आराधिआ 176

गउड़ी सुखमनी मः ५ ॥

राग गौड़ी में पाँचवें नानक जी की बाणी/शब्द। सुखमनी इस काव्य रचना का शीर्षक है। सुखमनी का अर्थ है - सुख के लिए मणि।

ੴ सतिगुर प्रसादि

एक ईश्वर है, जो सभी में, सभी स्थानों पर, सभी समयों में मौजूद है। इसे गुरु की कृपा/ज्ञान से महसूस किया जा सकता है।

सलोकु ॥

श्लोक ॥

आदि गुरए नमह ॥ जुगादि गुरए नमह ॥
सतिगुरए नमह ॥ स्री गुरदेवए नमह ॥१॥

मैं उस ईश्वर को नमस्कार करता हूँ जो सभी का मूल है। मैं उस ईश्वर को नमस्कार करता हूँ जो आरंभ से ही हर समय मौजूद है। मैं उस सनातन ईश्वर को नमस्कार करता हूँ। मैं उस ईश्वर को नमस्कार करता हूँ जो सभी से श्रेष्ठ है।

असटपदी ॥

(अष्टपदी - आठ पदों की रचना)

सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥
कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥

मैं सृष्टिकर्ता का ध्यान करूँ, और ऐसा करके अपने भीतर शांति का अनुभव करूँ। मैं सृष्टिकर्ता का ध्यान करूँ ताकि अपने भीतर से सभी अशुद्धियों और बुराइयों से छुटकारा पा सकूँ।

सिमरउ जासु बिसुंभर एकै ॥
नामु जपत अगनत अनेकै ॥

मैं सृष्टि के प्रभु का ध्यान करूँ और दिव्य गुणों को आत्मसात करके आंतरिक शांति की बहुलता प्राप्त करूँ।

बेद पुरान सिंमृति सुधाख्यर ॥
कीने राम नाम इक आख्यर ॥

सर्वव्यापी प्रभु का ध्यान करने से हमें ऐसा ज्ञान प्राप्त होता है जो सभी पवित्र ग्रंथों का सार है।

किनका एक जिसु जीअ बसावै ॥
ता की महिमा गनी न आवै ॥

यदि इस ज्ञान का एक छोटा सा अंश भी आत्मसात हो जाए; तो हमारा मन अनमोल हो जाता है (ज्ञान में)।

काँखी एकै दरस तुहारो ॥
नानक उन संगि मोहि उधारो ॥१॥

हे प्रभु! मैं भी उस दिव्य बुद्धि की खोज करता हूँ; मुझे दिव्य बुद्धि का सानिध्य प्रदान करके (दुष्प्रवृत्तियों से) मुक्ति दिलाओ।

सुखमनी सुख अंमृत प्रभ नामु ॥
भगत जना कै मनि बिस्राम ॥ रहाउ ॥

दिव्य बुद्धि वह पारस पत्थर है जो शाश्वत शांति प्रदान करता है; इस बुद्धि के प्रति समर्पित होने से हमारा मन शांति में रहता है।

प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै ॥
प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै ॥

सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से हम अनंत इच्छाओं के गर्भ में नहीं फँसते; सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से दोषों से होने वाले सभी कष्ट दूर हो जाते हैं।

प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै ॥
प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥

सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से हम विवेक की मृत्यु से बच जाते हैं; सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से हम अपने भीतर के वास्तविक शत्रुओं (दुष्प्रवृत्तियों) से छुटकारा पा लेते हैं।

प्रभ सिमरत कछु बिघनु न लागै ॥
प्रभ कै सिमरनि अनदिनु जागै ॥

सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से (दुष्प्रवृत्तियों की) कोई बाधा नहीं रहती; सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से हम सदैव दोषों के प्रति सतर्क रहते हैं

प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै ॥
प्रभ कै सिमरनि दुखु न संतापै ॥

सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से सभी भय दूर हो जाते हैं; सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से सभी कष्ट समाप्त हो जाते हैं

प्रभ का सिमरनु साध कै संगि ॥
सरब निधान नानक हरि रंगि ॥२॥

हम दिव्य बुद्धि को आत्मसात करके ही सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहते हैं; सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने में ही शांति के सभी खजाने हैं

प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि ॥
प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि ॥

सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से हम सारी शक्ति, पूर्णता और गुण प्राप्त करते हैं; सारा ज्ञान, चिंतन और बुद्धि सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने में है।

प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा ॥
प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा ॥

सारी साधना और उपासना सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने में है; सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से हम अपने अंदर से अहंकार से छुटकारा पा लेते हैं

प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी ॥
प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी ॥

सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहना ही असली तीर्थ है; सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहना ही असली ईश्वरीय सम्मान है

प्रभ कै सिमरनि होइ सु भला ॥
प्रभ कै सिमरनि सुफल फला ॥

सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से हमेशा अच्छाई आती है; सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से हमें सुंदर ईश्वरीय गुण प्राप्त होते हैं

से सिमरहि जिन आपि सिमराए ॥
नानक ता कै लागउ पाए ॥३॥

जो व्यक्ति वास्तव में स्वयं के प्रति सजग हो जाता है, वह सृष्टिकर्ता के प्रति सजग होने की ओर मुड़ जाता है। मैं खुद को ऐसे ईश्वरीय प्रेमियों के हवाले कर देता हूँ (मैं ऐसी ही जीवन शैली की कामना करता हूँ)।

प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा ॥
प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥

सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहना जीवन जीने का एक श्रेष्ठ तरीका है; जब हम सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहते हैं, तो हम बुराइयों से मुक्त होकर ऊँचे उठते हैं।

प्रभ कै सिमरनि तृसना बुझै ॥
प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ॥

सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से सभी अनंत इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं; सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से सजगता आती है।

प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा ॥
प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ॥

सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से बुराइयों से पैदा होने वाला भय समाप्त हो जाता है। सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से आंतरिक शांति की सभी लालसाएँ पूरी हो जाती हैं।

प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ॥
अंमृत नामु रिद माहि समाइ ॥

सृष्टिकर्ता के स्मरण से हम अपने भीतर से विकारों की गंदगी से छुटकारा पाते हैं; और शाश्वत दिव्य ज्ञान हृदय/चेतना में आता है।

प्रभ जी बसहि साध की रसना ॥
नानक जन का दासनि दसना ॥४॥

दिव्य ज्ञान में रहने वालों के व्यवहार में दिव्य सृष्टिकर्ता प्रतिबिंबित होता है; मैं ऐसे दिव्य प्रेमियों की सेवा करूँ (उनके जैसा बनूँ)।

प्रभ कउ सिमरहि से धनवंते ॥
प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते ॥

जो सृष्टिकर्ता को ध्यान में रखकर जीते हैं वे वास्तविक धनवान हैं; जो सृष्टिकर्ता को ध्यान में रखकर जीते हैं वे सम्माननीय हैं

प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान ॥
प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान ॥

जो सृष्टिकर्ता को ध्यान में रखकर जीते हैं वे वास्तविक स्वीकृत हैं; जो सृष्टिकर्ता को ध्यान में रखकर जीते हैं वे सच्चे नेता हैं

प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे ॥
प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे ॥

जो सृष्टिकर्ता को ध्यान में रखकर जीते हैं वे वास्तव में आत्मनिर्भर हैं; जो लोग सृष्टिकर्ता को ध्यान में रखकर जीते हैं, वे सभी तरह से संतुष्ट रहते हैं।

प्रभ कउ सिमरहि से सुखवासी ॥
प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी ॥

जो लोग सृष्टिकर्ता को ध्यान में रखकर जीते हैं, वे शांति से रहते हैं। जो लोग सृष्टिकर्ता को ध्यान में रखकर जीते हैं, वे बुराइयों में नहीं फँसते

सिमरन ते लागे जिन आपि दइआला ॥
नानक जन की मंगै रवाला ॥५॥

जो लोग सृष्टिकर्ता को ध्यान में रखकर जीते हैं, वे बुराइयों में नहीं फँसते; मैं ऐसे ईश्वर प्रेमियों से जीवन जीने का तरीका सीखना चाहता हूँ।

प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी ॥
प्रभ कउ सिमरहि तिन सद बलिहारी ॥

जो लोग सृष्टिकर्ता का ध्यान करते हैं, वे ही सच्चे परोपकारी हैं; मैं उन लोगों के प्रति समर्पित हूँ जो सृष्टिकर्ता का ध्यान करते हैं

प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावे ॥
प्रभ कउ सिमरहि तिन सूखि बिहावै ॥

जो लोग सृष्टिकर्ता का ध्यान करते हैं, वे ही वास्तव में सुंदर हैं; जो लोग सृष्टिकर्ता का ध्यान करते हैं, वे शांति से रहते हैं

प्रभ कउ सिमरहि तिन आतमु जीता ॥
प्रभ कउ सिमरहि तिन निरमल रीता ॥

जो लोग सृष्टिकर्ता का ध्यान करते हैं, वे भ्रष्ट मन के प्रलोभनों पर विजय प्राप्त करते हैं; जो लोग सृष्टिकर्ता का ध्यान करते हैं, वे ही भले हैं।

प्रभ कउ सिमरहि तिन अनद घनेरे ॥
प्रभ कउ सिमरहि बसहि हरि नेरे ॥

जो लोग सृष्टिकर्ता का ध्यान करते हैं, वे हमेशा शाश्वत आनंद में रहते हैं। जो लोग सृष्टिकर्ता का ध्यान करते हैं, वे सृष्टिकर्ता के करीब होते हैं।

संत कृपा ते अनदिनु जागि ॥
नानक सिमरनु पूरै भागि ॥६॥

जो लोग ईश्वरीय ज्ञान को आत्मसात करते हैं, वे बुराइयों के प्रति सजग/सतर्क होते हैं; केवल उन्हें ही सृष्टिकर्ता के ध्यान में जीने का तरीका प्राप्त होता है।

प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे ॥
प्रभ कै सिमरनि कबहु न झूरे ॥

आंतरिक शांति के सभी प्रयास सृष्टिकर्ता का ध्यान करने से सफल होते हैं; सृष्टिकर्ता का ध्यान करने से सभी मानसिक उथल-पुथल समाप्त हो जाती हैं

प्रभ कै सिमरनि हरि गुन बानी ॥
प्रभ कै सिमरनि सहजि समानी ॥

सृष्टिकर्ता का ध्यान करने से दिव्य गुणों पर आधारित एक नया आंतरिक आकार बनता है; सृष्टिकर्ता का ध्यान करने से हम शाश्वत संतुष्टि में विलीन हो जाते हैं

प्रभ कै सिमरनि निहचल आसनु ॥
प्रभ कै सिमरनि कमल बिगासनु ॥

सृष्टिकर्ता का ध्यान करने से हम अपने भीतर शांति प्राप्त करते हैं; सृष्टिकर्ता के प्रति सजग होने से हम भीतर से खिल उठते हैं

प्रभ कै सिमरनि अनहद झुनकार ॥
सुखु प्रभ सिमरन का अंतु न पार ॥

जब हम सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहते हैं तो भीतर निर्बाध सद्भाव कायम रहता है; सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से मिलने वाली शांति का कोई अंत नहीं है

सिमरहि से जन जिन कउ प्रभ मइआ ॥
नानक तिन जन सरनी पइआ ॥७॥

जो लोग सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने की कृपा प्राप्त कर रहे हैं; मैं उनके प्रति समर्पित हूँ (ऐसी जीवन शैली की तलाश करता हूँ)

हरि सिमरनु करि भगत प्रगटाए ॥
हरि सिमरनि लगि बेद उपाए ॥

वास्तविक भक्ति (दिव्य गुणों में जीना) सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से प्राप्त होती है; सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से दिव्य ज्ञान प्राप्त होता है

हरि सिमरनि भए सिध जती दाते ॥
हरि सिमरनि नीच चहु कुँट जाते ॥

सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से हम पूर्ण, शुद्ध और भीतर से योगदानकर्ता बन जाते हैं; सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से हम बुराइयों के नीच चक्रों से ऊपर उठ जाते हैं

हरि सिमरनि धारी सभ धरना ॥
सिमरि सिमरि हरि कारन करना ॥

सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से हम अपने आप पर विजय प्राप्त करने में सक्षम हो जाते हैं; सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से हम वह करते हैं जो करने की आवश्यकता है

हरि सिमरनि कीओ सगल अकारा ॥
हरि सिमरन महि आपि निरंकारा ॥

सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से दिव्य गुणों पर आधारित संपूर्ण नया स्व भीतर निर्मित होता है; सृष्टिकर्ता के प्रति सजग रहने से हम भीतर सृष्टिकर्ता के साथ एक हो जाते हैं

करि किरपा जिसु आपि बुझाइआ ॥
नानक गुरमुखि हरि सिमरनु तिनि पाइआ ॥८॥१॥

जिन्होंने स्वयं पर दया करके स्वयं का विश्लेषण और ज्ञान प्राप्त किया है; केवल वे ही आत्मज्ञान को आत्मसात करते हैं

सलोकु ॥

दीन दरद दुख भंजना घटि घटि नाथ अनाथ ॥
सरणि तुम्मारी आइओ नानक के प्रभ साथ ॥१॥

हे प्रभु! आप दीन-दुखियों के कष्टों को दूर करते हैं और प्रत्येक प्राणी में निवास करते हैं (आपकी अनुभूति हमें विकारों के नीच जीवन से मुक्त करती है); आप मेरे भीतर भी निवास करते हैं। मैं आपकी शरण में आया हूँ। (मैं स्वयं को आपके अधीन करता हूँ)।

असटपदी ॥

जह मात पिता सुत मीत न भाई ॥
मन ऊहा नामु तेरै संगि सहाई ॥

आंतरिक शांति, जिसके लिए कोई बाहरी संबंध किसी काम नहीं आते उस शांति के लिए, प्रिय मन! एकमात्र सहायता दिव्य ज्ञान है।

जह महा भइआन दूत जम दलै ॥
तह केवल नामु संगि तेरै चलै ॥

वह मार्ग जिस पर चलते हुए तुम क्रूर विकारों से बर्बाद हो जाते हो दिव्य बुद्धि तुम्हें बचाने के लिए साथ चलती है

जह मुसकल होवै अति भारी ॥
हरि को नामु खिन माहि उधारी ॥

जहाँ केवल आंतरिक विकारों के कारण परेशानियाँ ही आती हैं; दिव्य मार्गदर्शन को आत्मसात करने से तुम उन परेशानियों से शीघ्र ही मुक्त हो जाते हो

अनिक पुनहचरन करत नही तरै ॥
हरि को नामु कोटि पाप परहरै ॥

जहाँ सभी बाहरी अनुष्ठान भी तुम्हें विकारों से नहीं बचा सकते; दिव्य बुद्धि को आत्मसात करने से हम अपने भीतर के विकारों से छुटकारा पा लेते हैं

गुरमुखि नामु जपहु   मन मेरे ॥

नानक पावहु   सूख घनेरे ॥१॥

प्रिय मन! अपने जीवन में दिव्य ज्ञान को लागू करने के लिए गुरु के मार्गदर्शन को आत्मसात करें। ऐसा करने से, आपको अपने भीतर भरपूर शांति मिलेगी

सगल सृसटि को राजा   दुखीआ ॥

हरि का नामु जपत   होइ सुखीआ ॥

पूरी दुनिया का शासक भी (आंतरिक दिव्यता की अनदेखी करके) बुराइयों में ग्रस्त रहता है; लेकिन, जो दिव्य हुकम/ज्ञान में रहता है, वह हमेशा शांति में रहता है

लाख करोरी बंधु न परै ॥

हरि का नामु जपत   निसतरै ॥

हम धन के ढेर इकट्ठा करके अंतहीन भूख/इच्छाओं को समाप्त नहीं कर सकते। दिव्य ज्ञान को आत्मसात करके हम कभी न खत्म होने वाली इच्छाओं से छुटकारा पा सकते हैं

अनिक माइआ रंग   तिख न बुझावै ॥

हरि का नामु जपत   आघावै ॥

बाहर सभी प्रकार की मनभावन चीजों को इकट्ठा करके आंतरिक भूख को संतुष्ट नहीं किया जा सकता। आंतरिक संतुष्टि दिव्य ज्ञान को आत्मसात करने से आती है

जिह मारगि   इहु जात इकेला ॥

तह हरि नामु संगि   होत सुहेला ॥

जहाँ हम जीवन के पथ पर अकेले महसूस करते हैं (आंतरिक अराजकता के कारण)। दिव्य हुकम/मार्गदर्शन का प्रयोग करने से जीवन शांत और सुंदर हो जाता है।

ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ ॥
नानक गुरमुखि परम गति पाईऐ ॥२॥

प्रिय मन! हमेशा ईश्वरीय ज्ञान का ध्यान रखें गुरु के मार्गदर्शन से ईश्वरीय ज्ञान का प्रयोग करके स्वयं को (दुष्प्रवृत्तियों के सभी बंधनों से) मुक्त करें।

छूटत नही कोटि लख बाही ॥
नामु जपत तह पारि पराही ॥

कोई भी बाहरी शक्ति आपको आंतरिक दुर्गुणों से मुक्त नहीं कर सकती केवल ईश्वर के अनुसरण से दुर्गुणों से मुक्ति शीघ्र प्राप्त होती है

अनिक बिघन जह आइ संघारै ॥
हरि का नामु ततकाल उधारै ॥

आंतरिक दुर्गुणों के कारण हमारे मार्ग में आने वाली सभी बाधाएँ, ईश्वरीय ज्ञान को आत्मसात करने से दूर हो जाती हैं

अनिक जोनि जनमै मरि जाम ॥
नामु जपत पावै बिस्राम ॥

दुष्प्रवृत्तियों में लीन होकर हम आंतरिक अस्थिरता के चक्र में पीड़ित रहते हैं; ईश्वरीय ज्ञान में रहने से हमें अपने भीतर शांति मिलती है

हउ मैला मलु कबहु न धोवै ॥
हरि का नामु कोटि पाप खोवै ॥

अहंकार की गंदगी जो बाहरी नहाने से कभी दूर नहीं होती; ईश्वरीय मार्गदर्शन को आत्मसात करने से अहंकार से जुड़े बहुत से दुर्गुण/पाप गायब हो जाते हैं

ऐसा नामु जपहु मन रंगि ॥
नानक पाईऐ साध कै संगि ॥३॥

हमें अपने भीतर ऐसे ईश्वरीय ज्ञान का प्रयोग करना चाहिए; यह ईश्वरीय ज्ञान गुरु की संगति/मार्गदर्शन से प्राप्त होता है

जिह मारग के गने जाहि न कोसा ॥
हरि का नामु ऊहा संगि तोसा ॥

कोई नहीं जानता कि हमारा जीवन पथ/समय कितना लंबा है; जीवन के इस पथ पर ईश्वरीय ज्ञान वास्तविक खजाने के रूप में हमारे साथ रहता है/मदद करता है

जिह पैडै महा अंध गुबारा ॥
हरि का नामु संगि उजीआरा ॥

जो जीवन दुर्गुणों और अज्ञानता के अंधकार में व्यतीत हो रहा है; ईश्वरीय ज्ञान हमारे जीवन पथ में स्पष्टता लाने के लिए प्रकाश बन जाता है

जहा पंथि तेरा को न सिञानू ॥
हरि का नामु तह नालि पछानू ॥

जीवन में हम यह नहीं पहचान पाते कि क्या सही है और क्या गलत; ईश्वरीय ज्ञान हमें वहां सत्य को पहचानने में मदद करता है।

जह महा भइआन तपति बहु घाम ॥
तह हरि के नाम की तुम ऊपरि छाम ॥

भयंकर दुर्गुणों की आग हमारे जीवन पथ को जला देती है; ईश्वरीय ज्ञान ही एकमात्र आश्रय है जो हमें दुर्गुणों की गर्मी से बचाता है

जहा तृखा मन तुझु आकरखै ॥
तह नानक हरि हरि अंमृतु बरखै ॥४॥

प्रिय मन! जीवन के पथ पर अनंत इच्छाएँ आपको लुभाती रहती हैं; ईश्वरीय ज्ञान को आत्मसात करने से हमें अमर आंतरिक शांति की वर्षा प्राप्त होती है

भगत जना की बरतनि नामु ॥
संत जना कै मनि बिस्रामु ॥

ईश्वर के प्रेमी ईश्वरीय ज्ञान को बहुमूल्य व्यावहारिक संपत्ति मानते हैं; ईश्वरीय ज्ञान को आत्मसात करने से उन्हें अपने भीतर शाश्वत शांति मिलती है

हरि का नामु दास की ओट ॥
हरि कै नामि उधरे जन कोटि ॥

ईश्वरीय ज्ञान ईश्वर के प्रेमियों के लिए वास्तविक सहारा है; ईश्वरीय ज्ञान का प्रयोग करके लाखों लोग विकारों से होने वाले सभी कष्टों से मुक्त हो जाते हैं।

हरि जसु करत संत दिनु राति ॥
हरि हरि अउखधु साध कमाति ॥

ईश्वरीय प्रेमी दिन-रात ईश्वरीय इच्छा/ज्ञान का प्रयोग करते हैं; ईश्वरीय ज्ञान वह औषधि है जिसके माध्यम से वे संक्रामक विकारों से मुक्त हो जाते हैं।

हरि जन कै हरि नामु निधानु ॥
पारब्रहमि जन कीनो दान ॥

ईश्वरीय प्रेमी ईश्वरीय ज्ञान के खजाने को प्राप्त करते हैं और उसका पालन-पोषण करते हैं। यह खजाना भगवान का वास्तविक आशीर्वाद है।

मन तन रंगि रते रंग एकै ॥
नानक जन कै बिरति बिबेकै ॥५॥

जो लोग हमेशा ईश्वरीय ज्ञान के रंग/प्रेम में डूबे रहते हैं। सही और गलत का बोध उनकी चेतना में स्वाभाविक रूप से होता है।

हरि का नामु जन कउ मुकति जुगति ॥
हरि कै नामि जन कउ तृपति भुगति ॥

ईश्वरीय ज्ञान ईश्वर के प्रेमियों के लिए विकारों से मुक्ति का मार्ग है। ईश्वरीय ज्ञान उन्हें अपने भीतर शाश्वत संतुष्टि प्रदान करता है

हरि का नामु जन का रूप रंगु ॥
हरि नामु जपत कब परै न भंगु ॥

ईश्वरीय ज्ञान ईश्वर के प्रेमियों की वास्तविक पहचान है; ईश्वरीय ज्ञान का प्रयोग करने से दुर्गुणों से कोई भी बाधा/चुनौतियाँ नहीं रह जाती

हरि का नामु जन की वडिआई ॥
हरि कै नामि जन सोभा पाई ॥

ईश्वरीय ज्ञान ईश्वर के प्रेमियों को गौरव प्रदान करता है; ईश्वरीय ज्ञान को आत्मसात करना ही वास्तविक सम्मान और प्रशंसा है

हरि का नामु जन कउ भोग जोग ॥
हरि नामु जपत कछु नाहि बिओगु ॥

ईश्वरीय ज्ञान ही आध्यात्मिक लोगों के जीवन का मार्ग है; ईश्वरीय इच्छा/मार्गदर्शन को आत्मसात करने से भीतर कोई दुख नहीं रहता

जनु राता हरि नाम की सेवा ॥
नानक पूजै हरि हरि देवा ॥६॥

आध्यात्मिक लोग हमेशा ईश्वरीय इच्छा/मार्गदर्शन की सेवा करते हैं; ईश्वरीय ज्ञान/मार्गदर्शन के प्रति समर्पण ही वास्तविक पूजा है

हरि हरि जन कै मालु खजीना ॥
हरि धनु जन कउ आपि प्रभि दीना ॥

ईश्वरीय ज्ञान ईश्वर के प्रेमियों का वास्तविक धन है; उन्हें यह खजाना भीतर के भगवान से मिलता है

हरि हरि जन कै ओट सताणी ॥
हरि प्रतापि जन अवर न जाणी ॥

ईश्वरीय ज्ञान समर्पित लोगों के लिए मजबूत सहारा है; जो लोग ईश्वरीय ज्ञान की शक्ति को संजोते हैं, वे कभी भी दुर्गुणों से कुछ नहीं चाहते

ओति पोति जन हरि रसि राते ॥
सुँन समाधि नाम रस माते ॥

समर्पित लोग ईश्वरीय ज्ञान में संतुष्ट रहते हैं; ईश्वरीय ज्ञान का प्रयोग करने के आनंद में वे भीतर शांति में रहते हैं

आठ पहर जनु हरि हरि जपै ॥
हरि का भगतु प्रगट नही छपै ॥

समर्पित लोग हर समय ईश्वरीय ज्ञान का प्रयोग करते हैं; ईश्वरीय ज्ञान को आत्मसात करने वाले लोग हमेशा सत्य और निष्ठा के साथ खड़े होते हैं। वे कभी झूठ के पीछे नहीं छिपते

हरि की भगति मुकति बहु करे ॥
नानक जन संगि केते तरे ॥७॥

वास्तविक भक्ति (दिव्य गुणों में जीना) हमें अनेक दुर्गुणों से मुक्त करती है; समर्पित लोगों के जीवन से प्रोत्साहित होकर अनेक लोग दिव्य ज्ञान को आत्मसात करके दुर्गुणों के कचरे से छुटकारा पा लेते हैं

पारजातु इहु हरि को नाम ॥
कामधेन हरि हरि गुण गाम ॥

दिव्य ज्ञान जीवन में शांति और आनंद लाता है; दिव्य ज्ञान को आत्मसात करना ही जीवन की वास्तविक इच्छा को पूरा करने का तरीका है

सभ ते ऊतम हरि की कथा ॥
नामु सुनत दरद दुख लथा ॥

दिव्य ज्ञान का प्रयोग करना सबसे श्रेष्ठ कार्य है; दिव्य ज्ञान को सुनने/आंतरिक रूप से ग्रहण करने से हम सभी आंतरिक दुखों से छुटकारा पा सकते हैं

नाम की महिमा संत रिद वसै ॥
संत प्रतापि दुरतु सभु नसै ॥

दिव्य ज्ञान की महिमा आध्यात्मिक लोगों के हृदय/चेतना में निवास करती है; वह महिमा भीतर से सभी बुराइयों को नष्ट कर देती है

संत का संगु वडभागी पाईऐ ॥
संत की सेवा नामु धिआईऐ ॥

ऐसे समर्पित लोगों की संगति/मार्गदर्शन ही वास्तविक सौभाग्य है; उनके मार्गदर्शन के माध्यम से दिव्य ज्ञान का प्रयोग करना ही वास्तविक सेवा है

नाम तुलि कछु अवरु न होइ ॥
नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ ॥८॥२॥

दिव्य इच्छा/ज्ञान के बराबर कुछ भी नहीं है; उन लोगों को दुर्लभ समझें जो दिव्य ज्ञान को आंतरिक रूप से ग्रहण करने के लिए गुरु के मार्गदर्शन के अधीन हो जाते हैं

सलोकु ॥

बहु सासत्र बहु सिमृती पेखे सरब ढढोलि ॥
पूजसि नाही हरि हरे नानक नाम अमोल ॥१॥

मैंने यह समझने के लिए सभी धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया है कि भीतर की दिव्य इच्छा/ज्ञान से अधिक मूल्यवान कुछ भी नहीं है

असटपदी ॥

जाप ताप गिआन सभि धिआन ॥
खट सासत्र सिमृति वखिआन ॥

ध्यान और विद्वत्तापूर्ण ज्ञान के सभी बाह्य अनुष्ठानिक तरीके और धार्मिक ग्रंथों का अनुष्ठानिक वाचन।

जोग अभिआस करम ध्रम किरिआ ॥
सगल तिआगि बन मधे फिरिआ ॥

योग परंपरा और धार्मिक अनुष्ठान या ब्रह्मचर्य का पालन करने के लिए घर छोड़ना।

अनिक प्रकार कीए बहु जतना ॥
पुँन दान होमे बहु रतना ॥

और आस्था और धर्म के नाम पर कई अन्य कार्य या दान के नाम पर मूल्यवान चीजें देना।

सरीरु कटाइ होमै करि राती ॥
वरत नेम करै बहु भाती ॥

या अपने शरीर के टुकड़ों को आग में जलाना (ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए शारीरिक कष्ट सहना) धार्मिक उपवास और पूजा के कार्य करना।

नही तुलि राम नाम बीचार ॥
नानक गुरमुखि नामु जपीऐ इक बार ॥१॥

इनमें से कोई भी अनुष्ठान कभी भी ईश्वरीय ज्ञान के आंतरिककरण के बराबर नहीं हो सकता। प्रिय मन! दिव्य ज्ञान को आत्मसात करने के लिए गुरु के मार्गदर्शन का पालन करके इसे स्वयं देखें

नउ खंड पृथमी फिरै चिरु जीवै ॥
महा उदासु तपीसरु थीवै ॥

कोई व्यक्ति पूरी दुनिया में भ्रमण कर सकता है, और लंबी आयु प्राप्त कर सकता है। कोई व्यक्ति भौतिक वस्तुओं का त्याग करके खुद को महान संत कह सकता है

अगनि माहि होमत परान ॥
कनिक अस्व हैवर भूमि दान ॥

कोई व्यक्ति किसी पवित्र अग्नि में अपने जीवन की आहुति दे सकता है। या लोकप्रिय मान्यताओं के अनुसार सोना, घोड़े और भूमि दान कर सकता है

निउली करम करै बहु आसन ॥
जैन मारग संजम अति साधन ॥

कोई व्यक्ति योग संप्रदाय के सभी आसन और क्रियाओं का अभ्यास कर सकता है। या जैन धर्म द्वारा बताए गए सभी प्रकार के आत्म-नियंत्रण का अभ्यास कर सकता है

निमख निमख करि सरीरु कटावै ॥
तउ भी हउमै मैलु न जावै ॥

कोई व्यक्ति अपने शरीर के टुकड़े कर सकता है। यह सब करने के बाद भी, व्यक्ति अपने भीतर से अहंकार की गंदगी से छुटकारा नहीं पा सकता है (ये बाहरी कार्य आंतरिक स्वतंत्रता में मदद नहीं करते हैं)

हरि के नाम समसरि कछु नाहि ॥
नानक गुरमुखि नामु जपत गति पाहि ॥२॥

ईश्वरीय इच्छा/ज्ञान की स्वीकृति के बराबर कुछ भी नहीं है। प्रिय मन! अहंकार से मुक्ति का मार्ग ईश्वरीय इच्छा/ज्ञान का प्रयोग करने के लिए गुरु के मार्गदर्शन का पालन करना है।

मन कामना तीरथ देह छुटै ॥
गरबु गुमानु न मन ते हुटै ॥

किसी की इच्छा हो सकती है कि वह पवित्र स्थान पर मर जाए (जैसा कि कुछ धर्मों में पवित्र माना जाता है)। लेकिन अहंकार की आंतरिक अशुद्धता से कभी छुटकारा नहीं पाया जा सका।

सोच करै दिनसु अरु राति ॥
मन की मैलु न तन ते जाति ॥

हम तीर्थों पर पवित्र जल में दिन-रात स्नान करते हैं। लेकिन वह बाहरी जल हमारे मन में मौजूद बुराइयों की गंदगी को कभी नहीं धो पाता।

इसु देही कउ बहु साधना करै ॥
मन ते कबहू न बिखिआ टरै ॥

हम अपने शरीर को स्वच्छ और सुंदर बनाने के लिए सब कुछ करते हैं; लेकिन हमारा मन बुराइयों की गंदगी/कुरूपता से कभी दूर नहीं होता।

जलि धोवै बहु देह अनीति ॥
सुध कहा होइ काची भीति ॥

हम अपने शरीर को बाहर से पवित्र जल में धोते रहते हैं; लेकिन हम भूल जाते हैं कि बाहरी नहाने से आंतरिक शुद्धता प्राप्त नहीं की जा सकती।

मन हरि के नाम की महिमा ऊच ॥
नानक नामि उधरे पतित बहु मूच ॥३॥

प्रिय मन! ईश्वरीय इच्छा/हुकम का मनन करने की महिमा महान है। बड़े-बड़े पापियों ने ईश्वरीय बुद्धि के आगे झुककर अपने जीवन को अच्छा बनाया (स्वयं को बुराइयों से मुक्त किया)

बहुतु सिआणप जम का भउ बिआपै ॥
अनिक जतन करि तृसन ना ध्रापै ॥

हम सांसारिक और धार्मिक रूप से बहुत बुद्धिमान हो सकते हैं, लेकिन फिर भी हम हमेशा बुराइयों के शिकार होने के जोखिम में रहते हैं। हम सभी बाहरी धार्मिक अनुष्ठानों और ज्ञान से अनंत इच्छाओं से छुटकारा पाने में असमर्थ हैं

भेख अनेक अगनि नही बुझै ॥
कोटि उपाव दरगह नही सिझै ॥

हम अलग-अलग धार्मिक वस्त्र और पोशाक पहन सकते हैं, लेकिन यह हमें बुराइयों की आंतरिक आग से नहीं बचा सकता। जब हम बाहरी अनुष्ठानों में लीन होते हैं, तो हम आंतरिक ईश्वर तक पहुँचने में विफल हो जाते हैं

छूटसि नाही   ऊभ पइआलि ॥
मोहि बिआपहि   माइआ जालि ॥

हमारे सभी बाहरी प्रयास हमें भीतर की असामंजस्यता से मुक्त होने में मदद करने में विफल होते हैं। हमारा मन हमेशा भ्रामक बाहरी दर्द और सुखों -माया- के मोह के जाल में फंसा रहता है

अवर करतूति सगली   जमु डानै ॥
गोविंद भजन बिनु   तिलु नही मानै ॥

धर्म और आस्था के नाम पर सभी बाहरी कार्य केवल उन बुराइयों को अप्रत्यक्ष रूप से खिलाने के तरीके हैं। हम अपने जीवन में ईश्वरीय बुद्धि का प्रयोग किए बिना आंतरिक सम्मान का एक कण भी प्राप्त नहीं कर सकते

हरि का नामु जपत   दुखु जाइ ॥
नानक बोलै   सहजि सुभाइ ॥४॥

हम आंतरिक पीड़ा से तभी छुटकारा पा सकते हैं, जब ईश्वरीय इच्छा/हुकुम को आंतरिक रूप से आत्मसात करना और उसका प्रयोग करना हमारे मन के लिए स्वाभाविक हो जाता है।

चारि पदारथ   जे को मागै ॥
साध जना की   सेवा लागै ॥

अगर आप किसी ऐसी चीज की कामना करते हैं जो आपको सुंदर बना सके तो गुरु के ज्ञान की सेवा करें (जीवन में लागू करने के लिए ज्ञान के आगे झुकें)।

जे को   आपुना दूखु मिटावै ॥
हरि हरि नामु   रिदै सद गावै ॥

अगर आप अपने दुखों से छुटकारा पाना चाहते हैं तो ईश्वरीय इच्छा/ज्ञान को आत्मसात करें

जे को अपुनी सोभा लोरै ॥
साधसंगि इह हउमै छोरै ॥

अगर आप वास्तविक गौरव की कामना करते हैं तो गुरु की संगति/ज्ञान का अनुसरण करके अहंकार को मिटा दें

जे को जनम मरण ते डरै ॥
साध जना की सरनी परै ॥

अगर आप खुद को रोजाना होने वाली मौतों के चक्र से बचाना चाहते हैं; गुरु की शरण में जाएं (ईश्वरीय ज्ञान के आगे झुकें)

जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा ॥
नानक ता कै बलि बलि जासा ॥५॥

जो कोई भी गुरु की शरण में जाकर ईश्वर को पाना चाहता है। मैं उसके जीवन से सीखने के लिए उसके आगे झुकता हूं

सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु ॥
साधसंगि जा का मिटै अभिमानु ॥

वही श्रेष्ठ है जिसने गुरु की ज्ञान के आगे झुककर अहंकार से छुटकारा पा लिया है

आपस कउ जो जाणै नीचा ॥
साधसंगि जा का मिटै अभिमानु ॥

जो विनम्रता से रहता है उस को श्रेष्ठ समझो।

जा का मनु होइ सगल की रीना ॥
हरि हरि नामु तिनि घटि घटि चीना ॥

जिसका मन विनम्रता और प्रेम से भरा है; वह सभी में ईश्वरीय इच्छा की उपस्थिति को पहचानता है

मन अपुने ते   बुरा मिटाना ॥
पेखै   सगल सृसटि साजना ॥

अंदर से बुराई को दूर करके हम अपने आस-पास की सारी सृष्टि में प्यारे भगवान को देख सकते हैं

सूख दूख   जन सम द्रिसटेता ॥
नानक   पाप पुँन नही लेपा ॥६॥

जिसने समृद्धि और विपत्ति को समान समझा है। वह कभी पाप और पुण्य की कर्मकांडीय परिभाषाओं में नहीं पड़ता।

निरधन कउ   धनु तेरो नाउ ॥
निथावे कउ   नाउ तेरा थाउ ॥

हमारे बेचारे मन (दुष्प्रवृत्तियों में तबाह) की असली दौलत ईश्वरीय इच्छा/ज्ञान है। दुष्प्रवृत्तियों में फंसा मन बेकार ही भटक रहा है। ईश्वरीय इच्छा/मार्गदर्शन स्वीकार करने से वह शांत हो जाता है

निमाने कउ   प्रभ तेरो मानु ॥
सगल घटा कउ   देवहु दानु ॥

जो मन दुष्प्रवृत्तियों में अपना सारा आत्म-सम्मान और मान खो चुका है, वह ईश्वरीय हुक्म/ज्ञान को आत्मसात करके गौरव प्राप्त करता है। सृष्टिकर्ता प्रभु प्रत्येक हृदय/चेतना को ईश्वरीय मार्गदर्शन प्रदान करता है

करन करावनहार   सुआमी ॥
सगल घटा के   अंतरजामी ॥

सृष्टिकर्ता प्रभु सभी में रहता है और कार्य करने की क्षमता प्रदान करता है। हम सभी के भीतर का प्रभु हमारी ज़रूरतों को अच्छी तरह जानता है।

अपनी गति मिति जानहु आपे ॥
आपन संगि आपि प्रभ राते ॥

और वह सृष्टिकर्ता प्रभु अपनी शक्ति को जानता है (प्रभु की शक्ति का अनुमान लगाने की कोई ज़रूरत नहीं है) सृष्टिकर्ता प्रभु हमेशा हमारे भीतर रहता है।

तुम्मरी उसतति तुम ते होइ ॥
नानक अवरु न जानसि कोइ ॥७॥

प्रिय प्रभु! इस तथ्य के बाद कि हम आपके द्वारा बनाए गए हैं, मैं आपकी प्रशंसा में और क्या कह सकता हूँ; कोई और ऐसा कभी नहीं कर सकता।

सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥
हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥

सर्वोत्तम धर्म/विश्वास है जीवन में हमेशा अच्छा करने के लिए दिव्य ज्ञान का प्रयोग करना।

सगल कृआ महि ऊतम किरिआ ॥
साधसंगि दुरमति मलु हिरिआ ॥

अनुष्ठानों में सबसे अच्छा अनुष्ठान है; गुरु के निर्देशों का पालन करना ताकि भीतर से बुरी मानसिकता की गंदगी को बाहर निकाला जा सके।

सगल उदम महि उदमु भला ॥
हरि का नामु जपहु जीअ सदा ॥

सबसे अच्छा प्रयास है एकाग्र मन से दिव्य इच्छा/ज्ञान का प्रयोग करना।

सगल बानी महि अंमृत बानी ॥
हरि को जसु सुनि रसन बखानी ॥

वह जीवन जीने का तरीका अमर है जिसमें हम दिव्य ज्ञान को सुनते/आंतरिक रूप से ग्रहण करते हैं ताकि हम इसे अपने जीवन में लागू कर सकें

सगल थान ते ओहु ऊतम थानु ॥
नानक जिह घटि वसै हरि नामु ॥८॥३॥

सबसे अच्छी जगह वह मन है जिसने दिव्य हुकम/ज्ञान को आंतरिक रूप से आत्मसात कर लिया है।

सलोकु ॥

निरगुनीआर इआनिआ सो प्रभु सदा समालि ॥
जिनि कीआ तिसु चीति रखु नानक निबही नालि ॥१॥

हे मेरे गुणहीन और अज्ञानी मन! रचनहार भगवान का हमेशा हमेशा का ध्यान कर जिसने तुम्हें बनाया है, उसे याद रखो। वही तुम्हारे साथ चलता है।

असटपदी ॥

रमईआ के गुन चेति परानी ॥
कवन मूल ते कवन द्रिसटानी ॥

सर्वव्यापी रचयिता के गुणों को याद रखो; तुम्हारी उत्पत्ति से लेकर अब तक जो कुछ भी तुम देखते हो, वह सब उसी की रचना है।

जिनि तूँ साजि सवारि सीगारिआ ॥
गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥

जिसने तुम्हें बनाया और जीवन से सजाया है; जिसने तुम्हें माँ के गर्भ से लेकर (तुम्हारी रचना के दौरान) सुरक्षित रखा है।

बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध ॥
भरि जोबन भोजन सुख सूध ॥

लेकिन, तुमने अपना बचपन दूध के मोह में बिताया और तुम्हारी जवानी भोजन और खाने-पीने की चीजों से जुड़े सुखों में खो गई।

बिरधि भइआ ऊपरि साक सैन ॥
मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन ॥

तुम अपने रिश्तों की सेवा करते-करते बूढ़े हो गए। और बाद में जब तुम थक गए/बूढ़े हो गए, तो तुम्हें उन रिश्तों से उम्मीदें ही रह गईं।

इहु निरगुनु गुनु कछू न बूझै ॥
बखसि लेहु तउ नानक सीझै ॥१॥

इन सब में उलझे रहने के कारण, मेरे गुणहीन मन को रचयिता का मूल्य समझ में नहीं आया। हे प्रभु! इस गुणहीन मन को उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने के लिए आभार के गुण की आशीष दें

जिह प्रसादि धर ऊपरि सुखि बसहि ॥
सुत भ्रात मीत बनिता संगि हसहि ॥

भगवान की कृपा से तुम (हे मन!) इस धरती पर आराम से रहते हो; तुम दोस्तों और परिवार के साथ आनंद मनाते हो।

जिह प्रसादि पीवहि सीतल जला ॥
सुखदाई पवनु पावकु अमुला ॥

जिसने तुमको पानी देकर जीने का आशीर्वाद दिया है। जीवन को सहारा देने वाली हवा और कीमती आग जो आपके जीवन की सेवा करती है

जिह प्रसादि भोगहि सभि रसा ॥
सगल समग्री संगि साथि बसा ॥

जो सभी प्रकार के स्वादिष्ट खाद्य पदार्थों से आशीर्वाद देता है; और आपके जीवन में उपयोग की जाने वाली हर चीज देता है

दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ॥
तिसहि तिआगि अवर संगि रचना ॥

भगवान, जिसने आपको हाथ, पैर, कान, आंख और जीभ दी है; और फिर भी, आप उस सृष्टिकर्ता को छोड़ देते हैं और खुद को दूसरों (दुर्गुणों) से जोड़ लेते हैं

ऐसे दोख मूड़ अंध बिआपे ॥
नानक काढि लेहु प्रभ आपे ॥२॥

दुर्गुणों का यह संदूषण अज्ञानता और मूर्खता में अंधे मन में होता है; दूषित मन दोषों से छुटकारा पाने में असमर्थ है। अपने आप को प्रभु के सामने समर्पित कर दो, और उनसे मुक्ति पाने के लिए मदद मांगो।

आदि अंति जो राखनहारु ॥
तिस सिउ प्रीति न करै गवारु ॥

सृष्टिकर्ता शुरू से अंत तक मेरा रक्षक है (हमारे जीवन की पूरी यात्रा में) लेकिन मेरा मूर्ख मन खुद को सृष्टिकर्ता से नहीं जोड़ता

जा की सेवा नव निधि पावै ॥
ता सिउ मूड़ा मनु नही लावै ॥

सृष्टिकर्ता की इच्छा/हुकम का पालन करके हम आंतरिक शांति के सभी खजाने प्राप्त करते हैं। लेकिन, मेरा मूर्ख मन खुद को सृष्टिकर्ता से कभी नहीं जोड़ता

जो ठाकुरु सद सदा हजूरे ॥
ता कउ अंधा जानत दूरे ॥

सृष्टिकर्ता, जो हमेशा मेरे साथ है मेरा अंधा मन सोचता है कि सृष्टिकर्ता काफी दूर है।

जा की टहल पावै दरगह मानु ॥
तिसहि बिसारै मुगधु अजानु ॥

सृष्टिकर्ता, जिसकी सेवा/आज्ञाकारिता सम्मान (आंतरिक स्वतंत्रता) लाती है मेरा मूर्ख मन उस सृष्टिकर्ता प्रभु को भूल गया है।

सदा सदा   इहु भूलनहारु ॥
नानक   राखनहारु अपारु ॥३॥

मेरा मन हमेशा गलतियाँ करने में लगा रहता है; यह भूल जाता है कि अनंत रक्षक प्रभु हमेशा मेरे साथ हैं

रतनु तिआगि   कउडी संगि रचै ॥
साचु छोडि   झूठ संगि मचै ॥

हमारा मन व्यर्थ बाहरी सुखों में व्यस्त रहता है और भीतर के असली रत्न सृष्टिकर्ता को छोड़ देता है। अनंत सृष्टिकर्ता को छोड़ कर, हमारा मन क्षणभंगुर बाहरी सुखों की इच्छा करता है

जो छडना   सु असथिरु करि मानै ॥
जो होवनु   सो दूरि परानै ॥

जो कुछ भी अस्थायी है, हमारा मन उसे स्थायी मानता है; और जो हमेशा हमारे भीतर है, हमारा मन उस सृष्टिकर्ता से खुद को दूर कर लेता है

छोडि जाइ   तिस का स्रमु करै ॥
संगि सहाई   तिसु परहरै ॥

यह उन सभी चीजों के लिए सभी प्रयास/संघर्ष करता है जो अंततः छोड़ देती हैं; और उस रचयिता को छोड़ देते हैं जो हमेशा साथ रहता है

चंदन लेपु   उतारै धोइ ॥
गरधब प्रीति   भसम संगि होइ ॥

मन उस गधे की तरह है जो चंदन के लेप को नापसंद करता है, लेकिन कीचड़ में गंदा होना पसंद करता है

अंध कूप महि पतित बिकराल ॥
नानक काढि लेहु प्रभ दइआल ॥४॥

मैं प्रार्थना करता हूँ, हे प्रभु! दुर्गुणों के गहरे और अँधेरे गड्ढे में गिरे इस मन को उठाओ और बचाओ

करतूति पसू की मानस जाति ॥
लोक पचारा करै दिनु राति ॥

हम बाहरी तौर पर इंसान हैं, लेकिन हमारे कर्म जानवरों जैसे हैं (हमारे कर्म दुर्गुणों से प्रेरित हैं, न कि मानवता से) हमारा सारा प्रयास/संघर्ष दूसरों के सामने खुद को साबित करने के लिए है।

बाहरि भेख अंतरि मलु माइआ ॥
छपसि नाहि कछु करै छपाइआ ॥

हम बाहर से अच्छे इंसान होने का दिखावा करते हैं, लेकिन अंदर दुर्गुणों की गंदगी से भरे होते हैं। हम छिपाने की बहुत कोशिश करते हैं, लेकिन इस आंतरिक गंदगी को छिपा नहीं पाते (यह हमारे कार्यों में सामने आती है)

बाहरि गिआन धिआन इसनान ॥
अंतरि बिआपै लोभु सुआनु ॥

बाहर से हम ज्ञान, ध्यान और शुद्धि का प्रदर्शन करते हैं। लेकिन अंदर से लालच हमें खा रहा है।

अंतरि अगनि बाहरि तनु सुआह ॥
गलि पाथर कैसे तरै अथाह ॥

हम अंदर से इच्छा और क्रोध की आग से जल रहे हैं। और बाहरी तौर पर हम अधिक आध्यात्मिक दिखने के लिए राख (कुछ धर्मों में वैराग्य के संकेत के रूप में निर्धारित) लगाते हैं। जैसे आप अपनी गर्दन के चारों ओर पत्थr पहन कर तैर नहीं सकते, वैसे ही अच्छे दिखने के हमारे सभी बाहरी दिखावे बेकार हैं

जा कै अंतरि बसै प्रभु आपि ॥
नानक ते जन सहजि समाति ॥५॥

जिनके भीतर सृष्टिकर्ता के लिए प्रशंसा/कृतज्ञता रहती है; वे सहज रूप से अपने भीतर सृष्टिकर्ता में लीन होते हैं।

सुनि अंधा कैसे मारगु पावै ॥
करु गहि लेहु ओड़ि निबहावै ॥

प्रिय मन! हालाँकि अंधे खुद रास्ता नहीं देख सकते, लेकिन जब कोई उनका हाथ थाम लेता है तो वे उन्हें उनकी मंजिल तक पहुँचा सकते हैं

कहा बुझारति बूझै डोरा ॥
निसि कहीऐ तउ समझै भोरा ॥

यदि आप बहरे व्यक्ति के सामने पहेली रखते हैं, तो वह इसे हल नहीं कर सकता है, और शब्दों को गलत समझ सकता है (क्योंकि वह सुन नहीं सकता है)

कहा बिसनपद गावै गुँग ॥
जतन करै तउ भी सुर भंग ॥

गूंगा गाता नहीं है। यदि वह कोशिश करता है तो उसकी आवाज़ विफल हो जाती है

कह पिंगुल परबत पर भवन ॥
नही होत ऊहा उसु गवन ॥

यदि कोई अपंग पहाड़ पर घर बनाता है, तो वह वहाँ अपने आप नहीं चल सकता

करतार करुणा मै दीनु बेनती करै ॥
नानक तुमरी किरपा तरै ॥६॥

हे मेरे मन! प्रार्थना करो! हे प्रभु, केवल आप ही इस पतित मन (दुष्प्रवृत्तियों में लुटे हुए) की सहायता कर सकते हैं और उसे बचा सकते हैं।

संगि सहाई सु आवै न चीति ॥
जो बैराई ता सिउ प्रीति ॥

हमारा सहायक और सहारा, सृष्टिकर्ता हमेशा हमारे साथ रहता है, लेकिन हम उसे याद नहीं करते। इसके बजाय हम उन दुर्गुणों से प्रेम करते हैं जो हमारे असली शत्रु हैं।

बलूआ के गृह भीतरि बसै ॥
अनद केल माइआ रंगि रसै ॥

बाहरी सुखों में मग्न होकर हम रेत के महल में रह रहे हैं (जो क्षणभंगुर है)

द्रिड़ु करि मानै मनहि प्रतीति ॥
कालु न आवै मूड़े चीति ॥

हम भ्रष्ट मन पर इतना भरोसा करते हैं कि जो कुछ भी इसमें आता है, हम उस पर दृढ़ता से विश्वास करते हैं।

मन के पीछे चलते हुए हम इतने मूर्ख बन जाते हैं कि भूल जाते हैं कि बाहर की हर चीज़ मृत्यु/अंत के अधीन है।

बैर बिरोध काम क्रोध मोह ॥
झूठ बिकार महा लोभ ध्रोह ॥

मन के पीछे चलते हुए हम घृणा, संघर्ष, वासना, भावनात्मक लगाव, झूठ, दुर्गुण, लालच और छल का अभ्यास करते हैं।

इआहू जुगति बिहाने कई जनम ॥
नानक राखि लेहु आपन करि करम ॥७॥

हम इन दुर्गुणों में जीते और मरते हैं। हे प्रभु! दया करो और मुझे इन दुर्गुणों से बचाओ।

तू ठाकुरु तुम पहि अरदासि ॥
जीउ पिंडु सभु तेरी रासि ॥

हे सृष्टिकर्ता! आप हमारे स्वामी हैं; मैं आपको अपनी प्रार्थना अर्पित करता हूँ। मेरा जीवन, मेरा भौतिक अस्तित्व, सब कुछ आपका दिया हुआ है।

तुम मात पिता हम बारिक तेरे ॥
तुमरी कृपा महि सूख घनेरे ॥

आप मेरे माता-पिता हैं; हम आपके बच्चे हैं; आपकी कृपा से, मुझे सभी खुशियाँ मिलती हैं।

कोइ न जानै तुमरा अंतु ॥
ऊचे ते ऊचा भगवंत ॥

आपकी सीमाएँ कोई नहीं जानता; हे सर्वोच्च, परम उदार प्रभु!

सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी ॥
तुम ते होइ सु आगिआकारी ॥

सारी सृष्टि आपकी दिव्य इच्छा/हुकम में काम करती है; आपकी आज्ञा में जीना भी आपकी कृपा में है।

तुमरी गति मिति तुम ही जानी ॥
नानक दास सदा कुरबानी ॥८॥४॥

आप ही अपनी स्थिति और सीमा जानते हैं; मैं हमेशा के लिए बलिहार हूँ (मैं खुद को आपकी इच्छा/हुकम के अधीन करता हूँ)।

सलोकु ॥
देनहारु प्रभ छोडि कै लागहि आन सुआइ ॥
नानक कहू न सीझई बिनु नावै पति जाइ ॥१॥

प्रिय मन! आप प्रदाता प्रभु को त्याग देते हैं, और खुद को बुराइयों में संलग्न करते हैं; इस तरह से आप कभी सफल नहीं होंगे। इसके बजाय आप आंतरिक दिव्य से दूर होकर सारा सम्मान खो देते हैं

असटपदी ॥

दस बसतू ले पाछै पावै ॥
एक बसतु कारनि बिखोटि गवावै ॥

प्रिय मन! आप सृष्टिकर्ता द्वारा आपको प्रदान की गई सभी चीज़ों के लिए उस एक कृतघ्नता के कारण शिकायत करने में अपना जीवन बर्बाद करते हैं

एक भी न देइ दस भी हिरि लेइ ॥
तउ मूड़ा कहु कहा करेइ ॥

इस एक कमजोरी - कृतघ्नता के कारण, आप उन सभी चीज़ों का आनंद खो देते हैं जो आपको प्रदान की गई है। हे मेरे मूर्ख मन! इसमें प्रभु क्या करेंगे?

जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा ॥
ता कउ कीजै सद नमसकारा ॥

आपने प्रदाता प्रभु से कोई सम्बन्ध नहीं बनाया (आप कृतघ्न हो गए हैं) आपको बस प्रभु को प्रणाम/धन्यवाद करना है।

जा कै मनि लागा प्रभु मीठा ॥
सरब सूख ताहू मनि वूठा ॥

याद रखें, जो लोग अपने अन्दर निर्माता के साथ प्रेम का सम्बन्ध बनाते हैं; उन्हें अपने अन्दर सभी प्रकार की खुशी और शान्ति का अनुभव होता है।

जिसु जन अपना हुकमु मनाइआ ॥
सरब थोक नानक तिनि पाइआ ॥१॥

जिसने भी निर्माता को अपना स्वामी मान लिया है; उसे भरपूर मात्रा में आंतरिक खुशी और शान्ति प्राप्त हुई है।

अगनत साहु अपनी दे रासि ॥
खात पीत बरतै अनद उलासि ॥

निर्माता की कृपा से प्राप्त जीवन हमें अपने भण्डार से सब कुछ प्रदान करता है; हम इसे मजे से खाते-पीते और खर्च करते हैं

अपुनी अमान कछु बहुरि साहु लेइ ॥
अगिआनी मनि रोसु करेइ ॥

लेकिन, जब हम जीवन के नियम के अनुसार कुछ खो देते हैं; तब हमारा मन उसके प्रति क्रोध और निराशा प्रदर्शित करता है

अपनी परतीति आप ही खोवै ॥
बहुरि उस का बिस्वासु न होवै ॥

इस तरह हम अपना आत्मविश्वास खो देते हैं; और हमें जीवन पर भरोसा करना मुश्किल लगता है।

जिस की बसतु तिसु आगै राखै ॥
प्रभ की आगिआ मानै माथै ॥

लेकिन, अगर हम जीवन प्रदाता को सामने रखते हैं; और इच्छा/हुकम को स्वीकार/पालन करते हैं।

उस ते चउगुन करै निहालु ॥
नानक साहिबु सदा दइआलु ॥२॥

ईश्वरीय इच्छा/बुद्धि पर ध्यान देने से जीवन का आनंद कई गुना बढ़ जाता है; और मन को एहसास होता है कि प्रदाता प्रभु हमेशा दयालु हैं (मन शिकायतों/निराशा में जीना छोड़ देता है)।

अनिक भाति माइआ के हेत ॥
सरपर होवत जानु अनेत ॥

प्रिय मन! यह मायावी बाहरी सुखों के प्रति प्रेम/आसक्ति क्षणभंगुर है। यह कभी स्थिर नहीं रहती।

बिरख की छाइआ सिउ रंगु लावै ॥
ओह बिनसै उहु मनि पछुतावै ॥

जैसे, यदि आप पेड़ की छाया से प्रेम करते हैं, तो जब वह बदलेगी (जो समय के साथ बदलेगी) तो आप निराश होंगे

जो दीसै सो चालनहारु ॥
लपटि रहिओ तह अंध अंधारु ॥

बाहर जो कुछ भी दिखाई देता है, वह स्थायी नहीं है लेकिन मेरे प्यारे मन! तुम केवल बाहरी दुनिया में ही लीन हो।

बटाऊ सिउ जो लावै नेह ॥
ता कउ हाथि न आवै केह ॥

जैसे, यदि आप किसी गुजरते हुए यात्री से आसक्त हो जाते हैं, तो उसके चले जाने पर आप निराश होंगे

मन हरि के नाम की प्रीति सुखदाई ॥
करि किरपा नानक आपि लए लाई ॥३॥

प्यारे मन! ईश्वरीय बुद्धि/इच्छा से प्रेम करना शाश्वत शांति का स्रोत है; अपने आप पर दया करो, और अपने आप को भीतर के ईश्वर के अधीन कर दो

मिथिआ तनु धनु कुटंबु सबाइआ ॥
मिथिआ हउमै ममता माइआ ॥

प्यारे मन! यह शरीर, भौतिक संपदा, बाहरी संबंध, कुछ भी हमेशा के लिए नहीं रहता। इन सब पर गर्व करना मोह है

मिथिआ राज जोबन धन माल ॥
मिथिआ काम क्रोध बिकराल ॥

बाहरी शक्ति, यौवन और धन कभी भी हमेशा के लिए नहीं रहते। इनमें अतिशयता वासना और क्रोध में जीवन बर्बाद कर देती है।

मिथिआ रथ हसती अस्व बसत्रा ॥
मिथिआ रंग संगि माइआ पेखि हसता ॥

आपके हाथी, घोड़े, रथ/वाहन और वस्त्र - कुछ भी स्थायी नहीं है। इन पर अत्यधिक आसक्ति और गर्व करना व्यर्थ है।

मिथिआ ध्रोह मोह अभिमानु ॥
मिथिआ आपस ऊपरि करत गुमानु ॥

छल-कपट, अति-मोह और अहंकार में लिप्त रहना व्यर्थ है।

असथिरु भगति साध की सरन ॥
नानक जपि जपि जीवै हरि के चरन ॥४॥

गुरु के ज्ञान के प्रति समर्पण पर आधारित भक्ति (आंतरिक सुधार) ही एकमात्र ऐसी चीज है जो टिकती है। हम तब जीते हैं जब हम ईश्वरीय आज्ञा/ज्ञान का प्रयोग करते हैं (अन्यथा हम अहंकारी अभिमान और मोह में मरते रहते हैं)

मिथिआ स्रवन पर निंदा सुनहि ॥
मिथिआ हसत पर दरब कउ हिरहि ॥

व्यर्थ हैं वे कान (सुनने की शक्ति) जो दूसरों की निंदा सुनने में लीन रहते हैं। व्यर्थ हैं वे हाथ जो दूसरों के धन/अधिकारों को चुराने में व्यस्त रहते हैं।

मिथिआ नेत्र पेखत पर तृअ रूपाद ॥
मिथिआ रसना भोजन अन स्वाद ॥

व्यर्थ हैं वे आंखें/दृष्टि जो दूसरों के धन और शरीर को देखने में लीन रहती हैं। व्यर्थ हैं वे जीभ जो निंदा और व्यंजनों का स्वाद लेने में लीन रहती है।

मिथिआ चरन पर बिकार कउ धावहि ॥
मिथिआ मन पर लोभ लुभावहि ॥

व्यर्थ हैं वे पैर जो दूसरों का बुरा करने के लिए दौड़ते हैं। वह मन व्यर्थ है जो हमेशा दूसरों के सुख और शांति को चुराने के लालच में लगा रहता है।

मिथिआ तन नही परउपकारा ॥
मिथिआ बासु लेत बिकारा ॥

वह शरीर व्यर्थ है जो दूसरों के कल्याण में नहीं लगा है। वह जीवन व्यर्थ है जो बुराइयों में जीया जा रहा है।

बिनु बूझे मिथिआ सभ भए ॥
सफल देह नानक हरि हरि नाम लए ॥५॥

बिना समझे/समझे सब व्यर्थ है। यह शरीर/जीवन ईश्वरीय इच्छा/ज्ञान को प्राप्त/अवशोषित करने पर ही सार्थक होता है

बिरथी साकत की आरजा ॥
साच बिना कह होवत सूचा ॥

उस व्यक्ति का जीवन व्यर्थ है जो आंतरिक ईश्वर से विरक्त है। वह कभी भी शुद्ध नहीं होता क्योंकि उसके भीतर शाश्वत से कोई संबंध नहीं होता

बिरथा नाम बिना तनु अंध ॥
मुखि आवत ता कै दुरगंध ॥

ईश्वरीय इच्छा का प्रयोग किए बिना, विकारों में अंधा हुआ शरीर/जीवन व्यर्थ है। दुर्गुणों में लिप्त, वह जीवन शुरू से ही बदबूदार होता है

बिनु सिमरन दिनु रैनि बृथा बिहाइ ॥
मेघ बिना जिउ खेती जाइ ॥

जैसे, बिना वर्षा के फसल सूख जाती है; सृष्टिकर्ता के स्मरण के बिना, दिन और रात व्यर्थ बीत जाते हैं

गोबिद भजन बिनु बृथे सभ काम ॥
जिउ किरपन के निरारथ दाम ॥

जब हम ईश्वरीय इच्छा के अधीन नहीं होते हैं, तो केवल बाहरी सुख के लिए हमारे सभी कार्य हमारे जीवन को निरर्थक और उद्देश्यहीन बना देते हैं; एक कंजूस की तरह जो धन इकट्ठा करता है, लेकिन उसका कभी आनंद नहीं लेता धंनि धंनि ते जन

जिह घटि बसिओ हरि नाउ ॥
नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥६॥

धन्य हैं वे लोग जिनकी चेतना ईश्वरीय ज्ञान के आंतरिककरण से आबाद है मैं उनके जीवन के तरीके का अनुसरण करता हूँ

रहत अवर कछु अवर कमावत ॥
मनि नही प्रीति मुखहु गंढ लावत ॥

प्रिय मन! आप अपने धार्मिक नियमों में कुछ और दिखाते हैं, लेकिन करते कुछ और हैं। आपके दिल में आंतरिक ईश्वर के लिए कोई प्रेम नहीं है, और फिर भी आप अपनी बातों/शब्दों में इतनी आध्यात्मिकता दिखाते हैं

जाननहार प्रभू परबीन ॥
बाहरि भेख न काहू भीन ॥

आप कहते हैं कि ईश्वर सब कुछ जानता है, और उसे छद्म रूप से प्रभावित नहीं किया जा सकता

अवर उपदेसै आपि न करै ॥
आवत जावत जनमै मरै ॥

आप दूसरों को यह उपदेश देते हैं, लेकिन इसका बिल्कुल भी पालन नहीं करते इसीलिए तुम दुर्गुणों में मरते रहते हो।

जिस कै अंतरि बसै निरंकारु ॥
तिस की सीख तरै संसारु ॥

जो व्यक्ति ईश्वर के प्रेम में लीन हो जाता है, उसका संपूर्ण आंतरिक संसार ईश्वरीय ज्ञान/मार्गदर्शन द्वारा मुक्त हो जाता है

जो तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥
नानक उन जन चरन पराता ॥७॥

जो लोग आपसे प्रेम करते हैं, हे प्रभु! वे ही आपको समझते हैं; मैं अपने आपको उनके जीवन के तरीके के अधीन करता हूँ।

करउ बेनती पारब्रहमु सभु जानै ॥
अपना कीआ आपहि मानै ॥

मैं अपने भीतर के उस रचयिता से प्रार्थना करता हूँ जो सब कुछ जानता है; वह मुझे बनाता है, और मुझे उसकी अभिव्यक्ति होने का मूल्य प्रदान करता है।

आपहि आप आपि करत निबेरा ॥
किसै दूरि जनावत किसै बुझावत नेरा ॥

रचनाकार, अपने हुकम/बुद्धि के माध्यम से, मुझे उसका बोध प्रदान करता है; लेकिन, अपनी सीमित बुद्धि के कारण कुछ लोग रचयिता को दूर पाते हैं, और कुछ उसे पास मानते हैं

उपाव सिआनप सगल ते रहत ॥
सभु कछु जानै आतम की रहत ॥

हमारे सभी प्रयास हमारी सीमित बुद्धि के कारण ईश्वर की प्राप्ति से वंचित हैं सब कुछ केवल आंतरिक आत्मा को अनुशासित करके (ईश्वरीय इच्छा/हुकम में) प्राप्त किया जा सकता है।

जिसु भावै तिसु लए लड़ि लाइ ॥
थान थनंतरि रहिआ समाइ ॥

जो लोग आंतरिक शुद्धता की ओर आंतरिक अनुशासन से प्रेम करते हैं, वे अपने मन को ईश्वरीय इच्छा/बुद्धि के अधीन कर देते हैं; वह मन सर्वव्यापी रचयिता को समझ लेता है।

सो सेवकु जिसु किरपा करी ॥
निमख निमख जपि नानक हरी ॥८॥५॥

जो लोग सर्वव्यापी रचयिता पर ध्यान केंद्रित करते हैं, वे समर्पित होने का सौभाग्य प्राप्त करते हैं

सलोकु ॥

काम क्रोध अरु लोभ मोह बिनसि जाइ अहंमेव ॥
नानक प्रभ सरणागती करि प्रसादु गुरदेव ॥१॥

जब हम अपने भीतर ईश्वर की शरण में जाते हैं (ईश्वरीय इच्छा के अधीन हो जाते हैं), तो हम वासना, क्रोध, लोभ, आसक्ति और अहंकारी अभिमान सहित सभी दोषों से छुटकारा पा लेते हैं

असटपदी ॥

जिह प्रसादि छतीह अंमृत खाहि ॥
तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि ॥

प्रिय मन! हमेशा उस सृष्टिकर्ता प्रभु को याद करो, जिसकी कृपा से तुम सभी प्रकार के व्यंजनों का आनंद लेते हो

जिह प्रसादि सुगंधत तनि लावहि ॥
तिस कउ सिमरत परम गति पावहि ॥

उस सृष्टिकर्ता प्रभु को याद करने से परम पद/शांति प्राप्त होती है, जिसकी कृपा से तुम अपने शरीर पर सुगंधित तेल और इत्र लगाते हो

जिह प्रसादि बसहि सुख मंदरि ॥
तिसहि धिआइ सदा मन अंदरि ॥

उस सृष्टिकर्ता प्रभु को हमेशा याद रखो, जिसकी कृपा से तुम घर/शांति की स्थिति में रहते हो।

जिह प्रसादि गृह संगि सुख बसना ॥
आठ पहर सिमरहु तिसु रसना ॥

उस सृष्टिकर्ता प्रभु को धन्यवाद दो, जिसकी कृपा से तुम अपने परिवार के साथ शांति से रहते हो।

जिह प्रसादि रंग रस भोग ॥
नानक सदा धिआईऐ धिआवन जोग ॥१॥

उस सृष्टिकर्ता प्रभु को याद रखो, जिसकी कृपा से तुम सभी सुखों का आनंद लेते हो।

जिह प्रसादि पाट पटंबर हढावहि ॥
तिसहि तिआगि कत अवर लुभावहि ॥

उस सृष्टिकर्ता प्रभु को भूलकर व्यर्थ मत भटको, जिसकी कृपा से तुम रेशम और कीमती कपड़े पहनते हो।

जिह प्रसादि सुखि सेज सोईजै ॥
मन आठ पहर ता का जसु गावीजै ॥

उस सृष्टिकर्ता प्रभु को धन्यवाद दो, जिसकी कृपा से तुम आरामदायक बिस्तर पर सोते हो।

जिह प्रसादि तुझु सभु कोऊ मानै ॥
मुखि ता को जसु रसन बखानै ॥

उस सृष्टिकर्ता प्रभु के लिए तुम्हें प्रशंसा व्यक्त करनी चाहिए, जिसकी कृपा से तुम सभी प्रकार के सम्मान का आनंद लेते हो।

जिह प्रसादि तेरो रहता धरमु ॥
मन सदा धिआइ केवल पारब्रहमु ॥

प्रिय मन! हमेशा उस सृष्टिकर्ता प्रभु पर ध्यान केंद्रित करो, जिसकी कृपा से तुम्हारा विश्वास अक्षुण्ण रहता है।

प्रभ जी जपत दरगह मानु पावहि ॥
नानक पति सेती घरि जावहि ॥२॥

उस सृष्टिकर्ता प्रभु को ध्यान में रखकर तुम अपने हृदय के भीतर महिमा और सम्मान प्राप्त करते हो

जिह प्रसादि आरोग कंचन देही ॥
लिव लावहु तिसु राम सनेही ॥

उस सृष्टिकर्ता प्रभु से प्रेम करो, जिसकी कृपा से तुम्हारा शरीर स्वस्थ है।

जिह प्रसादि तेरा ओला रहत ॥
मन सुखु पावहि हरि हरि जसु कहत ॥

प्रिय मन! हमेशा उस सृष्टिकर्ता प्रभु के प्रति कृतज्ञ रहो, जिनकी कृपा से तुम्हारा सम्मान सुरक्षित है।

जिह प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके ॥
मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ता कै ॥

प्रिय मन! हमेशा उस सृष्टिकर्ता प्रभु के प्रति समर्पित रहो, जो तुम्हारी सभी गलतियों के बावजूद तुम्हें आशीर्वाद देते रहते हैं।

जिह प्रसादि तुझु को न पहूचै ॥
मन सासि सासि सिमरहु प्रभ ऊचे ॥

हर सांस के साथ सृष्टिकर्ता को याद करो, जिनकी कृपा से तुम सभी बुराइयों से मुक्त हो।

जिह प्रसादि पाई द्रुलभ देह ॥
नानक ता की भगति करेह ॥३॥

प्रिय मन! हमेशा उस सृष्टिकर्ता प्रभु के प्रति समर्पित रहो, जिनकी कृपा से तुम्हें यह अनमोल शरीर/जीवन मिला है।

जिह प्रसादि आभूखन पहिरीजै ॥
मन तिसु सिमरत किउ आलसु कीजै ॥

हे मन! कभी भी उस सृष्टिकर्ता प्रभु को याद करने में आलस्य मत करो, जिनकी कृपा से तुम अपने आपको सजाते हो

जिह प्रसादि अस्व हसति असवारी ॥
मन तिसु प्रभ कउ कबहू न बिसारी ॥

प्रजापति प्रभु को मत भूलना, जिनकी कृपा से तुम हाथी और घोड़े (सभी बाहरी सुख) का आनंद लेते हो

जिह प्रसादि बाग मिलख धना ॥
राखु परोइ प्रभु अपुने मना ॥

सदैव उस सृष्टिकर्ता प्रभु को याद रखो, जिनकी कृपा से तुम भूमि, बाग और धन का आनंद लेते हो।

जिनि तेरी मन बनत बनाई ॥
ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई ॥

प्रिय मन! हमेशा उस सृष्टिकर्ता प्रभु को याद रखो, जिसने तुम्हें बनाया है।

तिसहि धिआइ जो एक अलखै ॥
ईहा ऊहा नानक तेरी रखै ॥४॥

एक अज्ञेय प्रभु का ध्यान रखो, जो हर जगह तुम्हारी रक्षा करता है।

जिह प्रसादि करहि पुंन बहु दान ॥
मन आठ पहर करि तिस का धिआन ॥

प्रिय मन! हर समय सृष्टिकर्ता प्रभु को याद करो, जिनकी कृपा से तुम दान-पुण्य करते हो।

जिह प्रसादि तू आचार बिउहारी ॥
तिसु प्रभ कउ सासि सासि चितारी ॥

हर साँस में सृष्टिकर्ता प्रभु को याद करो, जिनकी कृपा से तुम चरित्र और व्यवहार में अच्छाई प्राप्त करते हो।

जिह प्रसादि तेरा सुँदर रूपु ॥
सो प्रभु सिमरहु सदा अनूपु ॥

उस सुंदर सृष्टिकर्ता प्रभु को याद करो, जिसने तुम्हें सुंदर बनाया है

जिह प्रसादि तेरी नीकी जाति ॥
सो प्रभु सिमरि सदा दिन राति ॥

हर समय सृष्टिकर्ता प्रभु को याद करो, जिनकी कृपा से तुम्हें यह सुंदर मानव शरीर मिला है।

जिह प्रसादि तेरी पति रहै ॥
गुर प्रसादि नानक जसु कहै ॥५॥

सृष्टिकर्ता प्रभु के प्रति कृतज्ञ होने के लिए गुरु के ज्ञान से स्वयं को प्रबुद्ध करो, जिनकी कृपा से तुम्हारा सम्मान सुरक्षित है

जिह प्रसादि सुनहि करन नाद ॥
जिह प्रसादि पेखहि बिसमाद ॥

प्रभु की कृपा से तुम अपने आस-पास की आवाज़ें सुनते हो; प्रभु की कृपा से तुम अपने आस-पास की सुंदरता देखते हो।

जिह प्रसादि बोलहि अंमृत रसना ॥
जिह प्रसादि सुखि सहजे बसना ॥

प्रभु की कृपा से तुम बोलने की शक्ति रखते हो; प्रभु की कृपा से तुम सभी सुखों का आनंद लेते हो।

जिह प्रसादि हसत कर चलहि ॥
जिह प्रसादि संपूरन फलहि ॥

प्रभु की कृपा से तुम्हारे हाथ और पैर काम करते हैं; प्रभु की कृपा से तुम्हें पूर्ण मानव शरीर प्राप्त होता है।

जिह प्रसादि परम गति पावहि ॥
जिह प्रसादि सुखि सहजि समावहि ॥

प्रभु की कृपा से तुम सर्वोच्च पद (दिव्य ज्ञान) प्राप्त करते हो; प्रभु की कृपा से तुम शांति में लीन हो जाते हो।

ऐसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु ॥
गुर प्रसादि नानक मनि जागहु ॥६॥

तुम ऐसे सृष्टिकर्ता प्रभु को क्यों छोड़कर क्षणभंगुर भौतिक चीज़ों के लिए जाते हो? प्रिय मन! गुरु के ज्ञान के साथ जागें (सृष्टिकर्ता भगवान के प्रति कृतज्ञता में जीने के लिए)।

जिह प्रसादि तूँ प्रगटु संसारि ॥
तिसु प्रभ कउ मूलि न मनहु बिसारि ॥

सृष्टिकर्ता भगवान को कभी नज़रअंदाज़ न करें, जिनकी वजह से आप इस दुनिया में चल रहे हैं।

जिह प्रसादि तेरा परतापु ॥
रे मन मूड़ तू ता कउ जापु ॥

मेरे मूर्ख मन! हमेशा उस सृष्टिकर्ता भगवान को याद रखें, जिनकी वजह से आपको मनुष्य होने का सम्मान मिला है।

जिह प्रसादि तेरे कारज पूरे ॥
तिसहि जानु मन सदा हजूरे ॥

सदैव सृष्टिकर्ता भगवान को अपने साथ रखें, जिनकी वजह से आपके सभी मामले हल हो जाते हैं

जिह प्रसादि तूँ पावहि साचु ॥
रे मन मेरे तूँ ता सिउ राचु ॥

प्रिय मन! सृष्टिकर्ता भगवान के प्रेम में विलीन हो जाएँ, जिन्हें याद करके आप भीतर से शुद्ध हो जाते हैं

जिह प्रसादि सभ की गति होइ ॥
नानक जापु जपै जपु सोइ ॥७॥

सदैव सृष्टिकर्ता भगवान पर ध्यान केंद्रित रखें, जिनकी कृपा से आपका पूरा अस्तित्व अच्छाई प्राप्त करता है

आपि जपाए जपै सो नाउ ॥
आपि गावाए सु हरि गुन गाउ ॥

प्रिय मन! यदि आप प्रभु को याद कर पाते हैं, तो इसे सृष्टिकर्ता का आशीर्वाद मानिए; यदि आप प्रभु को धन्यवाद दे पाते हैं, तो यह भी सृष्टिकर्ता का आशीर्वाद है

प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु ॥
प्रभू दइआ ते कमल बिगासु ॥

यदि आप ज्ञान का प्रकाश प्राप्त कर रहे हैं, तो यह सृष्टिकर्ता प्रभु का आशीर्वाद है; यह सृष्टिकर्ता प्रभु की कृपा है कि आप आंतरिक विकास का अनुभव कर रहे हैं

प्रभ सुप्रसंन बसै मनि सोइ ॥
प्रभ दइआ ते मति ऊतम होइ ॥

यदि आप सृष्टिकर्ता की याद में जी रहे हैं, तो सृष्टिकर्ता आपसे पहले से ही प्रसन्न हैं; यदि आपकी बुद्धि ईश्वर को धन्यवाद देने के लिए उठी है, तो यह सृष्टिकर्ता की कृपा से हुआ है

सरब निधान प्रभ तेरी मइआ ॥
आपहु कछू न किनहू लइआ ॥

सद्गणों के सभी खजाने सृष्टिकर्ता प्रभु की कृपा में हैं; प्रिय मन! हम अपनी सीमित बुद्धि से कुछ भी हासिल नहीं कर सकते

जितु जितु लावहु तितु लगहि हरि नाथ ॥
नानक इन कै कछू न हाथ ॥८॥६॥

प्रार्थना करो, हे सृष्टिकर्ता प्रभु! आप मुझे जो (ज्ञान) देते हैं, मैं उसे लागू करता हूँ। मेरी अपनी सांसारिक चतुराई में कुछ भी अच्छा नहीं है

सलोकु ॥

अगम अगाधि पारब्रहमु सोइ ॥
जो जो कहै सु मुकता होइ ॥

हमारे अंदर जो भगवान हैं, वो हमारे विकारों के कारण हमारी पहुँच से दूर हो गए हैं। गुरु के ज्ञान से मनुष्य पापों से मुक्त हो जाता है।

सुनि मीता नानकु बिनवंता ॥
साध जना की अचरज कथा ॥१॥

मेरे प्यारे मन! मेरी विनती सुनो। गुरु के ज्ञान से मनुष्य के अंदर यह चमत्कार (दुर्गुणों से मुक्ति) घटित होता है।

असटपदी ॥

साध कै संगि मुख ऊजल होत ॥
साधसंगि मलु सगली खोत ॥

गुरु के ज्ञान से मनुष्य के अंदर से सारे दोषों का मैल दूर हो जाता है। गुरु की संगति/ज्ञान से अहंकार समाप्त हो जाता है।

साध कै संगि मिटै अभिमानु ॥
साध कै संगि प्रगटै सुगिआनु ॥

गुरु के ज्ञान से मनुष्य के अंदर समझ का विकास होता है। गुरु की संगति/ज्ञान से ईश्वर का साक्षात्कार होता है।

साध कै संगि बुझै प्रभु नेरा ॥
साधसंगि सभु होत निबेरा ॥

गुरु के ज्ञान से मनुष्य के अंदर विवेक का विकास होता है। सभी संघर्ष (आंतरिक दोषों से उत्पन्न) सुलझ जाते हैं

साध कै संगि पाए नाम रतनु ॥
साध कै संगि एक ऊपरि जतनु ॥

गुरु की संगति/ज्ञान से व्यक्ति को दिव्य गुणों और ज्ञान का रत्न प्राप्त होता है गुरु की संगति/ज्ञान से व्यक्ति के प्रयास आंतरिक ईश्वर के साथ एकता की ओर निर्देशित होते हैं।

साध की महिमा बरनै कउनु प्रानी ॥
नानक साध की सोभा प्रभ माहि समानी ॥१॥

गुरु की महिमा को कोई नहीं समझ सकता; गुरु की महिमा यह है कि गुरु के ज्ञान का प्रयोग करने से, व्यक्ति एक ईश्वर में विलीन हो जाता है।

साध कै संगि अगोचरु मिलै ॥
साध कै संगि सदा परफुलै ॥

गुरु की संगति में (गुरु के ज्ञान का प्रयोग करके), व्यक्ति अज्ञेय ईश्वर से मिलता है; गुरु के ज्ञान से व्यक्ति हमेशा के लिए फलता-फूलता है।

साध कै संगि आवहि बसि पंचा ॥
साधसंगि अंमृत रसु भुँचा ॥

गुरु की संगति (गुरु के ज्ञान का प्रयोग करके) से भीतर के दोष शांत हो जाते हैं; गुरु की संगति (गुरु के ज्ञान का प्रयोग करके) से व्यक्ति को अमर करने वाले ईश्वरीय मार्गदर्शन का सार प्राप्त होता है जो विवेक की मृत्यु से बचाता है

साधसंगि होइ सभ की रेन ॥
साध कै संगि मनोहर बैन ॥

गुरु की संगति/ज्ञान से व्यक्ति के अंदर विनम्रता आती है; गुरु की संगति/ज्ञान से व्यक्ति के अंदर और बाहर आकर्षक व्यवहार विकसित होता है।

साध कै संगि न कतहूँ धावै ॥
साधसंगि असथिति मनु पावै ॥

गुरु की संगति/ज्ञान से मन भटकता नहीं है; गुरु की संगति/ज्ञान से मन स्थिर होता है।

साध कै संगि माइआ ते भिंन ॥
साधसंगि नानक प्रभ सुप्रसंन ॥२॥

गुरु की संगति/ज्ञान से व्यक्ति बाहरी सुख-दुख के भरम से मुक्त हो जाता है; गुरु की संगति/ज्ञान से व्यक्ति को आंतरिक परमात्मा का सुख प्राप्त होता है।

साधसंगि दुसमन सभि मीत ॥
साधू कै संगि महा पुनीत ॥

इन्द्रियाँ जो हमारे शत्रु बन गई हैं और दुर्गुणों में लिप्त हैं, वे गुरु की संगति/ज्ञान से हमारे मित्र/शुभचिंतक बन जाती हैं; गुरु की संगति/ज्ञान से व्यक्ति आंतरिक शुद्धता प्राप्त करता है

साधसंगि किस सिउ नही बैरु ॥
साध कै संगि न बीगा पैरु ॥

गुरु की संगति/ज्ञान से व्यक्ति के भीतर कोई शत्रुता नहीं रहती; गुरु की संगति/ज्ञान से मन भटकता नहीं है

साध कै संगि नाही को मंदा ॥
साधसंगि जाने परमानंदा ॥

गुरु की संगति/ज्ञान से मन बुराई में लिप्त नहीं होता; गुरु की संगति/ज्ञान से व्यक्ति अपने भीतर परम आनंद के स्रोत को महसूस करता है

साध कै संगि नाही हउ तापु ॥
साध कै संगि तजै सभु आपु ॥

गुरु की संगति/ज्ञान से व्यक्ति अहंकार से ग्रसित नहीं होता; गुरु की संगति/ज्ञान से मन स्वार्थ छोड़ देता है

आपे जानै साध बडाई ॥
नानक साध प्रभू बनि आई ॥३॥

ऐसा निस्वार्थ मन स्वयं गुरु की महिमा को जानता है; गुरु की संगति/ज्ञान से मन भीतर के ईश्वर के साथ एकता पाता है

साध कै संगि न कबहू धावै ॥
साध कै संगि सदा सुखु पावै ॥

गुरु की संगति/ज्ञान में मन बुराइयों के पीछे भागना छोड़ देता है; गुरु की संगति/ज्ञान में मन को शाश्वत शांति मिलती है

साधसंगि बसतु अगोचर लहै ॥
साधू कै संगि अजरु सहै ॥

गुरु की संगति/ज्ञान में व्यक्ति को अपने भीतर की वास्तविक ईश्वरीय शक्ति प्राप्त होती है; गुरु की संगति/ज्ञान में मन को असहनीय बाहरी चुनौतियों को सहने की शक्ति का एहसास होता है।

साध कै संगि बसै थानि ऊचै ॥
साधू कै संगि महलि पहूचै ॥

गुरु की संगति/ज्ञान में मन बुराइयों की नीच अवस्था से आध्यात्मिक रूप से ऊपर उठता है; गुरु की संगति/ज्ञान में मन उच्चतर/ईश्वरीय आत्मा के साथ एकता तक पहुँचने के लिए ऊपर उठता है

साध कै संगि द्रड़ै सभि धरम ॥
साध कै संगि केवल पारब्रहम ॥

गुरु की संगति/ज्ञान में व्यक्ति अंदर से बाहर तक अच्छाई करता है; गुरु की संगति/ज्ञान में मन सर्वोच्च भगवान के साथ रहता है

साध कै संगि पाए नाम निधान ॥
नानक साधू कै कुरबान ॥४॥

गुरु की संगति/ज्ञान में व्यक्ति को ईश्वरीय गुणों का खजाना मिलता है; मैं ऐसे गुरु पर बलिहार हूँ (गुरु के ज्ञान के अधीन हूँ)

साध कै संगि सभ कुल उधारै ॥
साधसंगि साजन मीत कुटंब निसतारै ॥

गुरु की संगति/ज्ञान में हमारा पूरा आंतरिक परिवार (चेतना-विचार-बुद्धि) बुराइयों से मुक्त हो जाता है; गुरु की संगति/ज्ञान में यह आंतरिक परिवार सच्चा मित्र बन जाता है जो हमें बुराइयों से बचाता है।

साधू कै संगि सो धनु पावै ॥
जिसु धन ते सभु को वरसावै ॥

गुरु की संगति/ज्ञान में ईश्वरीय गुणों की वह संपदा प्राप्त होती है जो बुराइयों के विरुद्ध हमारी संपूर्णता को मजबूत बनाती है

साधसंगि धरम राइ करे सेवा ॥
साध कै संगि सोभा सुरदेवा ॥

गुरु की संगति/ज्ञान में मन सृष्टिकर्ता भगवान की सेवा करता है, जो धर्मराज हैं गुरु की संगति/ज्ञान में मन ईश्वरीय गुणों से सुशोभित देवता बन जाता है

साधू कै संगि पाप पलाइन ॥
साधसंगि अंमृत गुन गाइन ॥

गुरु की संगति/ज्ञान में पाप/दुर्गुण भीतर से दूर हो जाते हैं; गुरु की संगति/ज्ञान में मन ईश्वरीय गुणों के अमृत का प्रयोग करता है

साध कै संगि स्रब थान गंमि ॥
नानक साध कै संगि सफल जनंम ॥५॥

गुरु की संगति/ज्ञान में मन आध्यात्मिक समझ की ऊंचाइयों तक पहुंचता है; गुरु की संगति/ज्ञान में व्यक्ति का जीवन फलदायी हो जाता है

साध कै संगि   नही कछु घाल ॥
दरसनु भेटत   होत निहाल ॥

गुरु की संगति/ज्ञान में व्यक्ति को कर्मकांडीय कष्टों से गुजरने की आवश्यकता नहीं होती है; गुरु के ज्ञान में व्यक्ति को परम शांति प्राप्त होती है

साध कै संगि   कलूखत हरै ॥
साध कै संगि   नरक परहरै ॥

गुरु की संगति/ज्ञान में दोषों के दाग भीतर से दूर हो जाते हैं; गुरु की संगति/ज्ञान से हम दोषों द्वारा निर्मित आंतरिक नरक से छुटकारा पा लेते हैं

साध कै संगि   ईहा ऊहा सुहेला ॥
साधसंगि बिछुरत   हरि   मेला ॥

गुरु की संगति/ज्ञान से हम अंदर से बाहर तक सहज हो जाते हैं; गुरु की संगति/ज्ञान से मन ईश्वरीय आत्मा से जुड़ जाता है

जो इछै   सोई फलु पावै ॥
साध कै संगि   न बिरथा जावै ॥

जो कोई भी गुरु के ज्ञान से ईश्वरीय मिलन की इच्छा रखता है, वह उसे प्राप्त कर लेता है; गुरु की संगति/ज्ञान से व्यक्ति कभी भी व्यर्थ के कार्यों में लिप्त नहीं होता

पारब्रहमु   साध रिद बसै ॥
नानक   उधरै   साध सुनि रसै ॥६॥

गुरु (ज्ञान) के हृदय में सृष्टिकर्ता भगवान का वास होता है; गुरु की बात मानने से मन दोषों से बच जाता है

साध कै संगि   सुनउ हरि नाउ ॥
साधसंगि हरि   के गुन गाउ ॥

गुरु की संगति/ज्ञान से व्यक्ति ईश्वरीय इच्छा/हुकम को पहचानना और उसका पालन करना जानता है। गुरु की संगति/ज्ञान से व्यक्ति जीवन में ईश्वरीय गुणों का गान/अभ्यास करता है

साध कै संगि   न मन ते बिसरै ॥
साधसंगि सरपर   निसतरै ॥

गुरु की संगति/ज्ञान से व्यक्ति सृष्टिकर्ता भगवान को नहीं भूलता; गुरु की संगति/ज्ञान से मन निश्चित रूप से दोषों से बच जाता है

साध कै संगि   लगै प्रभु मीठा ॥
साधू कै संगि   घटि घटि डीठा ॥

गुरु की संगति/ज्ञान से हम ईश्वर के प्रति प्रेम विकसित करते हैं; गुरु की संगति/ज्ञान से, हम सभी में ईश्वर को देखते हैं

साधसंगि भए   आगिआकारी ॥
साधसंगि गति   भई हमारी ॥

गुरु की संगति/ज्ञान से, मन ईश्वरीय इच्छा/हुकम के प्रति आज्ञाकारी हो जाता है; गुरु की संगति/ज्ञान से, हम उच्च आध्यात्मिक समझ प्राप्त करते हैं

साध कै संगि   मिटे सभि रोग ॥
नानक   साध भेटे संजोग ॥७॥

गुरु की संगति/ज्ञान से सभी रोग (दुर्गुण) भीतर से ठीक हो जाते हैं; गुरु की संगति/ज्ञान से मनुष्य को भीतर के भगवान से मिलना तय है

साध की महिमा बेद न जानहि ॥
जेता सुनहि तेता बखिआनहि ॥

गुरु (ज्ञान) की महिमा बाहरी ज्ञान पर निर्भर नहीं है; बाहरी ज्ञान के लेखक केवल वही लिख सकते हैं, जो वे देखते या सुनते हैं

साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि ॥
साध की उपमा रही भरपूरि ॥

गुरु (ज्ञान) की महिमा सीमित सांसारिक समझ से बहुत दूर है; गुरु (ज्ञान) की महिमा अपने आप में संपूर्ण है (यह हमारे मन में पूर्णता/पूर्णता लाती है)।

साध की सोभा का नाही अंत ॥
साध की सोभा सदा बेअंत ॥

गुरु/ज्ञान की महिमा समझ से परे है; हमें अपने भीतर (गुरु/ज्ञान के साथ) अनंत सम्मान मिलता है।

साध की सोभा ऊच ते ऊची ॥
साध की सोभा मूच ते मूची ॥

गुरु/ज्ञान की महिमा सबसे उच्च है; गुरु के ज्ञान से मिलने वाला सम्मान (ज्ञान का) सर्वोच्च है।

साध की सोभा साध बनि आई ॥
नानक साध प्रभ भेदु न भाई ॥८॥७॥

गुरु/ज्ञान की महिमा हमारे भीतर गुरु के रूप में बस जाती है। गुरु और सृष्टिकर्ता के बीच कोई अंतर नहीं है (गुरु/ज्ञान हमें अपने भीतर सृष्टिकर्ता के साथ एक कर देता है)।

सलोकु ॥

मनि साचा मुखि साचा सोइ ॥

अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ ॥

नानक इह लछण ब्रहम गिआनी होइ ॥१॥

ये दिव्यबोध/ज्ञान के लक्षण हैं : मन भीतर से शुद्ध होने, और बाहरी व्यवहार भी; और सबमें एक को देखना।

असटपदी ॥

ब्रहम गिआनी सदा निरलेप ॥

जैसे जल महि कमल अलेप ॥

जैसे कमल पानी में नहीं मुरझाता, वैसे ही प्रबुद्ध मन विकारों से अप्रभावित रहता है।

ब्रहम गिआनी सदा निरदोख ॥

जैसे सूरु सरब कउ सोख ॥

जैसे सूर्य की गर्मी सब कुछ सुखा देती है, प्रबुद्ध मन भीतर के विकारों को नष्ट कर देता है।

ब्रहम गिआनी कै द्रसटि समानि ॥

जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान ॥

जैसे हवा अमीर और गरीब को समान रूप से प्रभावित करती है, प्रबुद्ध मन सब को समान रूप से देखता है।

ब्रहम गिआनी कै धीरजु एक ॥

जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप ॥

जैसे पृथ्वी को इस बात की परवाह नहीं है कि कोई उसे खोदता है या चंदन से लेप करते हैं, प्रबुद्ध मन धैर्य में अविचलित/स्थिर रहता है।

ब्रहम गिआनी का इहै गुनाउ ॥
नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ ॥१॥

जैसे अग्नि में सब कुछ जलाने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, प्रबुद्ध मन में भीतर से विकारों को खत्म करने का स्वाभाविक गुण होता है।

ब्रहम गिआनी निरमल ते निरमला ॥
जैसे मैलु न लागै जला ॥

जैसे गंदगी पानी में नहीं टिकती, वैसे ही विकारों की गंदगी प्रबुद्ध मन के सामने टिक नहीं सकती। यह भीतर से शुद्ध रहता है

ब्रहम गिआनी कै मनि होइ प्रगासु ॥
जैसे धर ऊपरि आकासु ॥

भूमि के ऊपर विशाल खुले आकाश की तरह, प्रबुद्ध मन ईश्वरीय प्रेम में विशाल और खुला होता जाता है

ब्रहम गिआनी कै मित्र सत्रु समानि ॥
ब्रहम गिआनी कै नाही अभिमान ॥

प्रबुद्ध मन मित्र और शत्रु को समान मानता है; प्रबुद्ध मन में अहंकार नहीं होता।

ब्रहम गिआनी ऊच ते ऊचा ॥
मनि अपनै है सभ ते नीचा ॥

प्रबुद्ध मन ईश्वरीय गुणों को आत्मसात करके आध्यात्मिक रूप से ऊपर उठता है; प्रबुद्ध मन हमेशा विनम्रता में रहता है

ब्रहम गिआनी से जन भए ॥
नानक जिन प्रभु आपि करेइ ॥२॥

प्रबुद्ध मन सृष्टिकर्ता का सच्चा सेवक होता है, क्योंकि उसने सृष्टिकर्ता को अपना ही माना है

ब्रहम गिआनी सगल की रीना ॥
आतम रसु ब्रहम गिआनी चीना ॥

प्रबुद्ध मन हमेशा विनम्रता का अभ्यास करता है; प्रबुद्ध मन अपने भीतर की वास्तविक शांति को पहचानता है।

ब्रहम गिआनी की सभ ऊपरि मइआ ॥
ब्रहम गिआनी ते कछु बुरा न भइआ ॥

प्रबुद्ध मन अपने पूरे आंतरिक संसार (चेतना, बुद्धि, विचारों) पर दया बरसाता है; प्रबुद्ध मन कभी बुराई में लिप्त नहीं होता।

ब्रहम गिआनी सदा समदरसी ॥
ब्रहम गिआनी की द्रसटि अंमृतु बरसी ॥

प्रबुद्ध मन सभी को समान देखता है; प्रबुद्ध मन के पास अमृत दृष्टि होती है (सभी के साथ दयालुता से पेश आता है)।

ब्रहम गिआनी बंधन ते मुकता ॥
ब्रहम गिआनी की निरमल जुगता ॥

प्रबुद्ध मन बुराइयों के बंधनों से मुक्त होता है; प्रबुद्ध मन आंतरिक शुद्धता के मार्ग पर चलता है।

ब्रहम गिआनी का भोजनु गिआन ॥
नानक ब्रहम गिआनी का ब्रहम धिआनु ॥३॥

प्रबुद्ध मन ज्ञान में संतुष्टि पाता है (कभी भी व्यर्थ के अनुष्ठानों में लिप्त नहीं होता); प्रबुद्ध मन हमेशा अपने भीतर के भगवान पर केंद्रित रहता है।

ब्रहम गिआनी एक ऊपरि आस ॥
ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥

प्रबुद्ध मन अपनी आशा केवल अपने भीतर के ईश्वर पर रखता है; प्रबुद्ध मन कभी विनाश के मार्ग पर नहीं चलता, जो बुराइयों के साथ आता है।

ब्रहम गिआनी कै गरीबी समाहा ॥
ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा ॥

एक प्रबुद्ध मन विनम्रता में डूबा रहता है; एक प्रबुद्ध मन दूसरों का भला करने में प्रसन्न होता है।

ब्रहम गिआनी कै नाही धंधा ॥
ब्रहम गिआनी ले धावतु बंधा ॥

एक प्रबुद्ध मन बेकार के कर्मकांडों में लिप्त नहीं होता; एक प्रबुद्ध मन भटकना बंद कर देता है।

ब्रहम गिआनी कै होइ सु भला ॥
ब्रहम गिआनी सुफल फला ॥

एक प्रबुद्ध मन आम भलाई के लिए काम करता है; एक प्रबुद्ध मन दिव्य गुणों में खिलता है।

ब्रहम गिआनी संगि सगल उधारु ॥
नानक ब्रहम गिआनी जपै सगल संसारु ॥४॥

एक प्रबुद्ध मन सभी (चेतना-बुद्धि-विचार-क्रिया) को बचा लेता है; एक प्रबुद्ध मन के भीतर (विचारों का) पूरा संसार दिव्य गुणों का प्रयोग करता है।

ब्रहम गिआनी कै एकै रंग ॥
ब्रहम गिआनी कै बसै प्रभु संग ॥

एक प्रबुद्ध मन दिव्य प्रेम में लीन रहता है; एक प्रबुद्ध मन अपने भीतर के दिव्य के साथ एक रहता है।

ब्रहम गिआनी कै नामु आधारु ॥
ब्रहम गिआनी कै नामु परवारु ॥

एक प्रबुद्ध मन दिव्य गुणों को अपना आधार बनाता है; एक प्रबुद्ध मन दिव्य गुणों को अपना परिवार बनाता है।

ब्रहम गिआनी सदा सद जागत ॥
ब्रहम गिआनी अहंबुधि तिआगत ॥

एक प्रबुद्ध मन हमेशा बुराइयों के खिलाफ जागरूक रहता है; एक प्रबुद्ध मन अहंकारी मानसिकता को छोड़ देता है।

ब्रहम गिआनी कै मनि परमानंद ॥
ब्रहम गिआनी कै घरि सदा अनंद ॥

एक प्रबुद्ध मन अपने भीतर के आनंदमय भगवान के साथ एक रहता है; एक प्रबुद्ध मन अपने भीतर शाश्वत आनंद में रहता है।

ब्रहम गिआनी सुख सहज निवास ॥
नानक ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥५॥

एक प्रबुद्ध मन शांति का निवास है; एक प्रबुद्ध मन बुराइयों में कभी नष्ट नहीं होता है।

ब्रहम गिआनी ब्रहम का बेता ॥
ब्रहम गिआनी एक संगि हेता ॥

एक प्रबुद्ध मन सृष्टिकर्ता भगवान को जानता है; एक प्रबुद्ध मन केवल ईश्वर से प्रेम करता है

ब्रहम गिआनी कै होइ अचिंत ॥
ब्रहम गिआनी का निरमल मंत ॥

एक प्रबुद्ध मन चिंताओं से मुक्त रहता है; एक प्रबुद्ध मन अपने विचारों में शुद्ध/स्पष्ट होता है।

ब्रहम गिआनी जिसु करै प्रभु आपि ॥
ब्रहम गिआनी का बड परताप ॥

एक प्रबुद्ध मन अपने भीतर ईश्वर द्वारा प्रबुद्ध होता है; एक प्रबुद्ध मन शानदार रूप से महान होता है।

ब्रहम गिआनी का दरसु बडभागी पाईऐ ॥
ब्रहम गिआनी कउ बलि बलि जाईऐ ॥

अपने भीतर प्रबुद्ध मन की झलक पाना सौभाग्य की बात है; मैं ऐसे प्रबुद्ध मन पर बलिहार हूँ।

ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर ॥
नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर ॥६॥

वे वास्तविक दिव्य प्राणी हैं जो अपने भीतर प्रबुद्ध मन को साकार/आकार देते हैं। एक प्रबुद्ध मन स्वयं ही निर्माता है

ब्रहम गिआनी की कीमति नाहि ॥
ब्रहम गिआनी कै सगल मन माहि ॥

एक प्रबुद्ध मन अनमोल है; एक प्रबुद्ध मन में सब कुछ (हर चीज का समाधान) है

ब्रहम गिआनी का कउन जानै भेदु ॥
ब्रहम गिआनी कउ सदा अदेसु ॥

एक प्रबुद्ध मन की महिमा समझ से परे है; एक प्रबुद्ध मन के सामने समर्पण करना चाहिए

ब्रहम गिआनी का कथिआ न जाइ अधाख्यरु ॥
ब्रहम गिआनी सरब का ठाकुरु ॥

एक प्रबुद्ध मन की महिमा को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है; एक प्रबुद्ध मन को अपनी संपूर्णता का स्वामी मानना चाहिए।

ब्रहम गिआनी की मिति कउनु बखानै ॥
ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै ॥

एक प्रबुद्ध मन के आध्यात्मिक उत्थान की कल्पना नहीं की जा सकती है; एक प्रबुद्ध मन स्वयं ही ज्ञान के सम्मान को पहचानता है

ब्रहम गिआनी का अंतु न पारु ॥
नानक ब्रहम गिआनी कउ सदा नमसकारु ॥७॥

एक प्रबुद्ध मन की महिमा की कोई सीमा नहीं है; एक प्रबुद्ध मन के सामने समर्पण करना चाहिए।

ब्रहम गिआनी सभ सृसटि का करता ॥
ब्रहम गिआनी सद जीवै नही मरता ॥

एक प्रबुद्ध मन अपने भीतर चरित्र की सुंदरता का निर्माण करता है; एक प्रबुद्ध मन दैवी गुण, कभी भी बुराइयों में नहीं मरते

ब्रहम गिआनी मुकति जुगति जीअ का दाता ॥
ब्रहम गिआनी पूरन पुरखु बिधाता ॥

एक प्रबुद्ध मन हमें बुराइयों में होने वाले कष्टों से मुक्ति दिलाता है; एक प्रबुद्ध मन हमें पूर्ण (ईश्वर के साथ एक) बना सकता है

ब्रहम गिआनी अनाथ का नाथु ॥
ब्रहम गिआनी का सभ ऊपरि हाथु ॥

एक प्रबुद्ध मन उस बुद्धि का स्वामी बन जाता है; जो बुराइयों में अनाथ/व्यर्थ हो गई है। एक प्रबुद्ध मन हमारी आंतरिक दुनिया (हमारी चेतना, बुद्धि और विचारों) का ख्याल रखता है।

ब्रहम गिआनी का सगल अकारु ॥
ब्रहम गिआनी आपि निरंकारु ॥

एक प्रबुद्ध मन हमारे भीतर चरित्र की सुंदरता को आकार देता है; एक प्रबुद्ध मन स्वयं ईश्वर की छवि है।

ब्रहम गिआनी की सोभा ब्रहम गिआनी बनी ॥

नानक ब्रहम गिआनी सरब का धनी ॥८॥८॥

प्रबुद्ध मन का सम्मान ईश्वरीय ज्ञान के साथ है; एक प्रबुद्ध मन वास्तविक धन (ईश्वरीय गुणों) का स्वामी है

सलोकु ॥

उरि धारै जो अंतरि नामु ॥

सरब मै पेखै भगवानु ॥

वह, जो अपने भीतर दिव्य गुणों को आत्मसात करता है; वह, जो सभी में एक भगवान को देखता है।

निमख निमख ठाकुर नमसकारै ॥

नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै ॥१॥

वह, जो हमेशा अपने भीतर ईश्वर के प्रति समर्पित रहता है; वही अछूता/शुद्ध है। वह अपने भीतर के विकारों से मुक्त हो चुका है

असटपदी ॥

मिथिआ नाही रसना परस ॥

मन महि प्रीति निरंजन दरस ॥

जो कभी मिथ्याचार (अस्थायी बाह्य सुख) में लिप्त नहीं होता, बल्कि अपने भीतर परमात्मा (शाश्वत शांति का स्रोत) की खोज करता है

पर तृअ रूपु न पेखै नेत्र ॥

साध की टहल संतसंगि हेत ॥

जो व्यभिचार में लिप्त नहीं होता, बल्कि गुरु के ज्ञान की सेवा/अभ्यास करने के लिए प्रेम विकसित करता है

करन न सुनै काहू की निंदा ॥
सभ ते जानै आपस कउ मंदा ॥

जो अपने कानों को निंदा सुनने में लिप्त नहीं होने देता, बल्कि अपनी कमियों पर ध्यान केंद्रित करता है (सुधारने के लिए)

गुर प्रसादि बिखिआ परहरै ॥
मन की बासना मन ते टरै ॥

जो गुरु के ज्ञान को आत्मसात करके विकारों को छोड़ देता है, और मन की बुरी इच्छाओं को अपने मन से निकाल देता है

इंद्री जित पंच दोख ते रहत ॥
नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस ॥१॥

जो अपनी इंद्रियों को विकारों से बचाता है, वही दुर्लभ और वास्तविक शुद्ध/अछूता है।

बैसनो सो जिसु ऊपरि सुप्रसंन ॥
बिसन की माइआ ते होइ भिंन ॥

वही सृष्टिकर्ता भगवान का सच्चा भक्त है, जिसे मायावी भौतिक सुखों से विरत रहने के लिए दिव्य आशीर्वाद प्राप्त होता है।

करम करत होवै निहकरम ॥
तिसु बैसनो का निरमल धरम ॥

उस भक्त की भक्ति वास्तव में शुद्ध होती है, जो बाहरी कर्मकांडों के बजाय आंतरिक शुद्धि की ओर प्रयास करता है।

काहू फल की इछा नही बाछै ॥
केवल भगति कीरतन संगि राचै ॥

जो दैवीय गुणों को आत्मसात करता है, और भक्ति को भौतिक इच्छाओं को संतुष्ट करने का साधन नहीं बनाता है।

मन तन अंतरि सिमरन गोपाल ॥
सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥

जो पूरी तरह से सृष्टिकर्ता भगवान पर केंद्रित है, जो उसे अंदर से आशीर्वाद देते हैं।

आपि द्रड़ै अवरह नामु जपावै ॥
नानक ओहु बैसनो परम गति पावै ॥२॥

सृष्टिकर्ता भगवान का वह भक्त आध्यात्मिक रूप से ऊँचा उठता है, जो दिव्य गुणों का अभ्यास करता है, तथा दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करता है

भगउती भगवंत भगति का रंगु ॥
सगल तिआगै दुसट का संगु ॥

सृष्टिकर्ता भगवान का भक्त सच्ची भक्ति (दिव्य गुणों का आंतरिककरण) में लीन रहता है, तथा दुष्ट दुर्गुणों का साथ छोड़ देता है

मन ते बिनसै सगला भरमु ॥
करि पूजै सगल पारब्रहमु ॥

सच्चा भक्त वह है, जो सभी संदेहों को दूर करता है, तथा भगवान की पूजा करता है (अंदर के दिव्य गुणों के प्रति समर्पित रहता है)

साधसंगि पापा मलु खोवै ॥
तिसु भगउती की मति ऊतम होवै ॥

जो गुरु की संगति/ज्ञान की सहायता से दुर्गुणों की गंदगी को धोता है, ऐसे भक्त की बुद्धि सर्वोच्च हो जाती है

भगवंत की टहल करै नित नीति ॥
मनु तनु अरपै बिसन परीति ॥

जो हमेशा अपने भीतर के दिव्य की सेवा (समर्पण) करता है, तथा अपने मन और शरीर (विचार और कर्म) को दिव्य के प्रेम में समर्पित करता है।

हरि के चरन हिरदै बसावै ॥

नानक ऐसा भगउती भगवंत कउ पावै ॥३॥

जो अपने हृदय/चेतना में दिव्य इच्छा/ज्ञान को आंतरिक करता है, ऐसा भक्त अपने भीतर के दिव्य के साथ एकता प्राप्त करता है

सो पंडितु जो मनु परबोधै ॥

राम नामु आतम महि सोधै ॥

वही सच्चा पंडित/विद्वान है, जो अपने मन को निर्देश देता है, तथा अपने भीतर दिव्य गुणों को आंतरिक करता है

राम नाम सारु रसु पीवै ॥

उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै ॥

जो दिव्य गुणों को भीतर उतारता है उस सच्चे विद्वान की शिक्षाएँ, सम्पूर्ण आन्तरिक जगत (चेतना, बुद्धि, मन) को जीवन प्रदान करती हैं।

हरि की कथा हिरदै बसावै ॥

सो पंडितु फिरि जोनि न आवै ॥

दिव्य ज्ञान को आत्मसात करने वाला पंडित/विद्वान कभी भी आँतरिक मृत्यु के चक्र में नहीं फँसता

बेद पुरान सिमृति बूझै मूल ॥

सूखम महि जानै असथूलु ॥

सच्चा पंडित/विद्वान अपने अन्दर ही शास्त्रों में वर्णित समस्त ज्ञान का सार समझ लेता है

चहु वरना कउ दे उपदेसु ॥

नानक उसु पंडित कउ सदा अदेसु ॥४॥

मैं उस पंडित/विद्वान को प्रणाम करता हूँ जो बिना किसी भेदभाव के सभी को समान रूप से मार्गदर्शित करता है

बीज मंत्रु सरब को गिआनु ॥
चहु वरना महि जपै कोऊ नामु ॥

आन्तरिक विकास का मंत्र दिव्य ज्ञान है, जिसके द्वारा दिव्य गुणों को आत्मसात किया जा सकता है

जो जो जपै तिस की गति होइ ॥
साधसंगि पावै जनु कोइ ॥

जो कोई भी गुरु की संगति/ज्ञान से इस मंत्र को प्राप्त करता है और उसका अभ्यास करता है, वह मुक्त हो जाता है।

करि किरपा अंतरि उर धारै ॥
पसु प्रेत मुघद पाथर कउ तारै ॥

गुरु के आशीर्वाद - ज्ञान - को आत्मसात करने से हम अपने अन्दर से विभिन्न अमानवीय स्वभाव/व्यवहार - अर्थात् पशुवत, शैतानी, मूर्ख, कठोरता, से छुटकारा पा लेते हैं

सरब रोग का अउखदु नामु ॥
कलिआण रूप मंगल गुण गाम ॥

दिव्य गुणों को आत्मसात करना सभी आन्तरिक बीमारियों/दुर्गुणों का इलाज है। सभी अच्छाईयाँ दिव्य गुणों को आत्मसात करने से आती हैं।

काहू जुगति कितै न पाईऐ धरमि ॥
नानक तिसु मिलै जिसु लिखिआ धुरि करमि ॥५॥

दिव्य ज्ञान को अपने मूल में अंकित/अंतर्निहित करने से, हम दिव्य गुण प्राप्त करते हैं; यह आंतरिक धार्मिकता/शुद्धि किसी धार्मिक अनुष्ठान से नहीं हो सकती।

जिस कै मनि पारब्रहम का निवासु ॥
तिस का नामु सति रामदासु ॥

वह ईश्वर का सच्चा सेवक है, जिसके भीतर प्रभु का निरंतर स्मरण रहता है।

आतम रामु तिसु नदरी आइआ ॥
दास दसंतण भाइ तिनि पाइआ ॥

आंतरिक विनम्रता से प्राप्त प्रेम से ही व्यक्ति आंतरिक ईश्वर को देख/पहचान पाता है।

सदा निकटि निकटि हरि जानु ॥
सो दासु दरगह परवानु ॥

ईश्वर का वह प्रेमी सम्मानित होता है, जो यह अनुभव करता है कि सृष्टिकर्ता सदैव उसके निकट है।

अपुने दास कउ आपि किरपा करै ॥
तिसु दास कउ सभ सोझी परै ॥

वास्तविक सेवक/भक्त को यह अनुभव होता है कि सृष्टिकर्ता प्रभु सदैव अपने सेवकों पर कृपा करते हैं।

सगल संगि आतम उदासु ॥
ऐसी जुगति नानक रामदासु ॥६॥

ईश्वर के सेवक/भक्त बनने का एकमात्र तरीका है स्वयं को सभी विकारों से अलग कर लेना।

प्रभ की आगिआ आतम हितावै ॥
जीवन मुकति सोऊ कहावै ॥

जीवन में केवल वही मुक्त होता है, जो ईश्वर की इच्छा/हुकम को पूर्ण रूप से स्वीकार कर लेता है।

तैसा हरखु तैसा उसु सोगु ॥
सदा अनंदु तह नही बिओगु ॥

जो व्यक्ति बाह्य कष्ट और सुख को समान मानता है, वह अपने भीतर शाश्वत आनंद में रहता है।

तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी ॥
तैसा अंमृतु तैसी बिखु खाटी ॥
तैसा मानु तैसा अभिमानु ॥
तैसा रंकु तैसा राजानु ॥

जिसके लिए धूल और सोना, अमृत और विष, मान और अपमान, भिखारी और राजा - सभी बाहरी उतार-चढ़ाव जीवन के समान अंग हैं, वह मुक्त होता है।

जो वरताए साई जुगति ॥
नानक ओहु पुरखु कहीऐ जीवन मुकति ॥७॥

जो व्यक्ति निरंतर बदलती बाह्य परिस्थितियों में भी अविचलित रहना सीख जाता है, वह मुक्त होता है

पारब्रहम के सगले ठाउ ॥
जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ ॥

सृष्टिकर्ता भगवान सर्वव्यापी है। हमारा मन जिस तरह से अपने भीतर ईश्वर को देखता है, उसी तरह से सद्‌णों को प्राप्त करता है

आपे करन करावन जोगु ॥
प्रभ भावै सोई फुनि होगु ॥

सृष्टिकर्ता स्वयं हमारे भीतर सद्‌णों की सुंदरता का निर्माण करता है। उन दिव्य सद्‌णों में हमारा मन वही बन जाता है जो सृष्टा को प्रसन्न करता है

पसरिओ आपि होइ अनत तरंग ॥
लखे न जाहि पारब्रहम के रंग ॥

ऐसे सुंदर मन में, सद्‌णों की असंख्य तरंगों और रंगों के रूप में सृष्टा स्वयं रहता है

जैसी मति देइ तैसा परगास ॥

पारब्रहमु करता अबिनास ॥

जैसे-जैसे आंतरिक ईश्वर निर्देश देता है, मन प्रकाशित होता जाता है ईश्वरीय इच्छा/ हुकम में प्रकाशित मन अविनाशी हो जाता है।

सदा सदा सदा दइआल ॥

सिमरि सिमरि नानक भए निहाल ॥८॥९॥

सदैव मार्गदर्शक भगवान ईश्वरीय मार्गदर्शन का आशीर्वाद देते हैं, और उसका पालन/ स्वीकार करने से मन शाश्वत आनंद से धन्य हो जाता है।

सलोकु ॥

उसतति करहि अनेक जन अंतु न पारावार ॥

नानक रचना प्रभि रची बहु बिधि अनिक प्रकार ॥१॥

हम बाहर दिखाई देने वाले संसार के विभिन्न प्रकारों और भागों का महिमामंडन करके सृष्टा की रचना का अंत नहीं पा सकते

असटपदी ॥

कई कोटि होए पूजारी ॥

कई कोटि आचार बिउहारी ॥

हम चाहे लाख बार भगवान की पूजा करें, और चाहे लाख बार धार्मिक अनुष्ठान करें, लेकिन सृष्टा को नहीं समझ सकते

कई कोटि भए तीरथ वासी ॥

कई कोटि बन भ्रमहि उदासी ॥

हम चाहे लाख बार तीर्थों पर रहें, और चाहे लाख बार सन्यासी बनकर जंगलों में भटकें। (लेकिन हम सृष्टा भगवान को इस तरह नहीं पा सकते)

कई कोटि बेद के स्रोते ॥
कई कोटि तपीसुर होते ॥

हम करोड़ों बार धार्मिक ग्रंथ पढ़ते हैं, और लाखों बार तपस्या करते हैं। (फिर भी हम भगवान से नहीं मिल सकते)

कई कोटि आतम धिआनु धारहि ॥
कई कोटि कबि काबि बीचारहि ॥

हम करोड़ों बार ध्यान करते हैं, और लाखों बार भगवान की स्तुति में कविताएँ और गीत लिखते हैं (फिर भी हम परमातमा को जानने में विफल रहते हैं)

कई कोटि नवतन नाम धिआवहि ॥
नानक करते का अंतु न पावहि ॥१॥

हम करोड़ों बार नए-नए नामों से जप करते हैं, पर निर्माता भगवान के अंत/साक्षात्कार को खोजने में विफल रहते हैं

कई कोटि भए अभिमानी ॥
कई कोटि अंध अगिआनी ॥

हम अंदर करोड़ों प्रकार के स्वार्थ और अज्ञान से भरे हुए हैं (हमारे दोषों का कोई अंत नहीं है)।

कई कोटि किरपन कठोर ॥
कई कोटि अभिग आतम निकोर ॥

हम करोड़ों बार पत्थर दिल वाले कंजूस और रूखे हृदयहीन आत्मा बन जाते हैं (हालाँकि हम बाहर सभी धार्मिक अनुष्ठान करते हैं)

कई कोटि पर दरब कउ हिरहि ॥
कई कोटि पर दूखना करहि ॥

हम करोड़ों बार चोरी करने और दूसरों को चोट पहुँचाने में लिप्त होते हैं।

कई कोटि माइआ स्रम माहि ॥
कई कोटि परदेस भ्रमाहि ॥

हम करोड़ों बार बाहरी सुख/सुविधाओं के लिए अपने वास्तविक दिव्य स्व से दूर भागते हैं।

जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥
नानक करते की जानै करता रचना ॥२॥

इन करोड़ों दोषों में जहाँ भी हम अपना मन लगाते हैं, हमारा मन उसी ओर जाता है; लेकिन कभी भी भीतर के दिव्य मार्ग का अनुसरण नहीं करता। वह मार्ग उस सृष्टिकर्ता भगवान जैसा बनने से प्राप्त होता है।

कई कोटि सिध जती जोगी ॥
कई कोटि राजे रस भोगी ॥

करोड़ों बार हम योगी (ब्रह्मचारी) बनते हैं, और करोड़ों बार हम सांसारिक सुखों का आनंद लेने के लिए राजा बनते हैं।

कई कोटि पंखी सरप उपाए ॥
कई कोटि पाथर बिरख निपजाए ॥

करोड़ों बार हम पक्षियों (स्वतंत्र आत्मा) या साँपों (जहरीले इरादे) जैसे बन जाते हैं। करोड़ों बार हम चट्टानों (हृदयहीन/निर्दयी) जैसे बन जाते हैं। या पेड़ों की तरह (अविचल, चुप) हो जाते हैं

कई कोटि पवण पाणी बैसंतर ॥
कई कोटि देस भू मंडल ॥

करोड़ों बार हम हवा की तरह (अजेय) बन जाते हैं, या पानी की तरह (समायोज्य, अनुकूलनीय), या आग की तरह (उग्र और क्षमाशील) बन जाते हैं। करोड़ों बार हम भूमि की तरह खुले और विशाल बन जाते हैं

कई कोटि ससीअर सूर नख्यत्र ॥
कई कोटि देव दानव इंद्र सिरि छत्र ॥

करोड़ों बार हम चंद्रमा की तरह (ठंडे) बन जाते हैं, या सूर्य और सितारों की तरह (आग के गर्म गोले) हो जाते हैं। करोड़ों बार हम देवदूत (बेहतर इंसान) बन जाते हैं, या राक्षस (बुरे) बन जाते हैं, या देवताओं के राजा इंद्र की तरह सब पर शासन करना चाहते हैं।

सगल समग्री अपनै सूति धारै ॥
नानक जिसु जिसु भावै तिसु तिसु निसतारै ॥३॥

लेकिन, अगर हमारी पूरी आंतरिक दुनिया (चेतना, बुद्धि, मन) इस सिद्धांत/समझ को आत्मसात कर लेती है (कि ईश्वरीय गुणों को आत्मसात किए बिना सृष्टिकर्ता भगवान को नहीं पाया जा सकता)। फिर, जिस भी अवस्था में हम इस सिद्धांत को लागू/अभ्यास करते हैं, हम (दुष्प्रवृत्तियों से) मुक्त हो जाते हैं

कई कोटि राजस तामस सातक ॥
कई कोटि बेद पुरान सिमृति अरु सासत ॥

करोड़ों बार हम अपने व्यवहार में अंदर से बाहर वास्तव में अच्छे से बाहरी दिखावे की ओर, और फिर अंदर-बाहर बुराई की ओर बदलाव करते रहते हैं। करोड़ों बार हम खुद को केवल धार्मिक ग्रंथों को पढ़ने और सुनने तक ही सीमित रखते हैं

कई कोटि कीए रतन समुद ॥
कई कोटि नाना प्रकार जंत ॥

करोड़ों बार हम विचारों के आंतरिक सागर से अच्छाई के रत्न एकत्रित करें; करोड़ों बार हम विभिन्न प्रजातियों के जीवों की तरह जीते हैं (और मनुष्य की तरह नहीं)

कई कोटि कीए चिर जीवे ॥
कई कोटि गिरी मेर सुवरन थीवे ॥

करोड़ों बार हम पहाड़ों की तरह ऊंचे और मजबूत बनकर और खुद को सुनहरे गुणों से सजाकर लंबे समय तक जीते हैं (बुराइयों में नहीं मरते)

कई कोटि जख्य किंनर पिसाच ॥
कई कोटि भूत प्रेत सूकर मृगाच ॥

लेकिन करोड़ों बार हम कमजोर और नीच भी बन जाते हैं; करोड़ों बार हम भूत (अतीत और पछतावे में जीने वाले), या सूअर (गंदगी/बुराई पर पनपने वाले), या शेर (निडर, बहादुर) बन जाते हैं।

सभ ते नेरै सभहू ते दूरि ॥
नानक आपि अलिपतु रहिआ भरपूरि ॥४॥

सृजनकर्ता भगवान सबसे करीब है, लेकिन हम उसे सबसे दूर मानते हैं (इसलिए हम करोड़ों संक्रमणों के इस चक्र में भटकते रहते हैं)। दिव्य गुणों में रहने से व्यक्ति खुद को करोड़ों संक्रमणों के इस चक्र से मुक्त कर सकता है, पूरे जीवन में शाश्वत आनंद में रह सकता है

कई कोटि पाताल के वासी ॥
कई कोटि नरक सुरग निवासी ॥

करोड़ों बार हम सबसे नीच जीवन (दुराचारों में पतित) में रहते हैं; करोड़ों बार हम नर्क (घृणा-ईर्ष्या-ईर्ष्या) में रहते हैं, और करोड़ों बार हम कृतज्ञता और संतोष के स्वर्ग में रहते हैं

कई कोटि जनमहि जीवहि मरहि ॥
कई कोटि बहु जोनी फिरहि ॥

करोड़ों बार हम जन्म लेते हैं (नया और आनंदित महसूस करते हैं), और करोड़ों बार हम जीवित रहते हुए (दुष्प्रवृत्तियों में) मर जाते हैं। दुष्प्रवृत्तियों में, हम बार-बार कई अवतारों (मन की अवस्थाओं के संक्रमण) में भटकते हैं।

कई कोटि बैठत ही खाहि ॥
कई कोटि घालहि थकि पाहि ॥

करोड़ों बार हम आराम करते हैं और जीवन का आनंद लेते हैं, और करोड़ों बार हम बेचैन और भटकते हुए और थके हुए रहते हैं।

कई कोटि कीए धनवंत ॥
कई कोटि माइआ महि चिंत ॥

करोड़ों बार हम अमीर होते हैं (भले ही हमारे पास कुछ हो या न हो), और करोड़ों बार हम हमेशा अधिक पाने के लिए चिंतित रहते हैं (भले ही हमारे पास सब कुछ हो)

जह जह भाणा तह तह राखे ॥
नानक सभु किछु प्रभ कै हाथे ॥५॥

जहाँ भी हमारा मन आनंद पाता है, वह हमें उन रास्तों पर भटकाता है। (यह भटकना तब समाप्त होता है जब) हम अपने पूरे आत्म को भीतर के ईश्वर को समर्पित कर देते हैं।

कई कोटि भए बैरागी ॥
राम नाम संगि तिनि लिव लागी ॥

करोड़ों बार हमारा मन एक तपस्वी बन जाता है (दुष्प्रवृत्तियों को छोड़ देता है), जो केवल ईश्वरीय गुणों में लीन रहता है।

कई कोटि प्रभ कउ खोजंते ॥
आतम महि पारब्रहमु लहंते ॥

करोड़ों बार हमारा मन अपने भीतर के सृष्टिकर्ता भगवान को खोजता और महसूस करता है।

कई कोटि दरसन प्रभ पिआस ॥
तिन कउ मिलिओ प्रभु अबिनास ॥

करोड़ों बार जब सृष्टिकर्ता की प्राप्ति की इच्छा प्रबल होती है, तो हम उसे अपने भीतर पाते हैं।

कई कोटि मागहि सतसंगु ॥
पारब्रहम तिन लागा रंगु ॥

करोड़ों बार जब हमारा मन गुरु की संगति/ज्ञान से लाभान्वित होता है, तो उसके भीतर ईश्वरीय प्रेम विकसित होता है।

जिन कउ होए आपि सुप्रसंन ॥
नानक ते जन सदा धनि धंनि ॥६॥

जो मन ईश्वरीय स्व की ओर मुड़ने में आनंद महसूस करता है, वह समर्पित व्यक्ति धन्यहोता है।

कई कोटि खाणी अरु खंड ॥
कई कोटि अकास ब्रहमंड ॥

करोड़ों बार हम विशाल सृष्टि के विभिन्न भागों को देखकर आश्चर्यचकित होते हैं।

कई कोटि होए अवतार ॥
कई जुगति कीनो बिसथार ॥

करोड़ों बार हम मानवता की ओर मुड़ते हैं, जो अनेक प्रकार के विकास में मदद करती है।

कई बार पसरिओ पासार ॥
सदा सदा इकु एकंकार ॥

करोड़ों बार हम अत्यधिक और विस्तारित अपेक्षाओं का पीछा करते हुए टूट जाते हैं, लेकिन हमारे भीतर का भगवान एक, अडिग रहता है।

कई कोटि कीने बहु भाति ॥
प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति ॥

करोड़ों बार हमारा मन हमें आंतरिक ईश्वर से अलग करके कई तरह से रूपांतरित करता है। लेकिन, हमारी मंजिल उसी निर्माता में विलीन होना है

ता का अंतु   न जानै कोइ ॥

आपे आपि   नानक प्रभु सोइ ॥७॥

जो ईश्वर के साथ एक हुआ रहता है, वह अतुलनीय है। वह ईश्वर की ही छवि है

कई कोटि   पारब्रहम के दास ॥

तिन होवत   आतम परगास ॥

करोड़ों बार हमारा मन भगवान का सेवक बन जाता है; ऐसा करने से यह भीतर प्रकाश/स्पष्टता लाता है।

कई कोटि   तत के बेते ॥

सदा निहारहि   एको नेत्रे ॥

करोड़ों बार मन सत्य की खोज के लिए सभी झूठे दिखावे छोड़ देता है, और सभी में एक भगवान को देखता है

कई कोटि   नाम रसु पीवहि ॥

अमर भए   सद सद ही जीवहि ॥

करोड़ों बार जब मन ईश्वरीय गुणों को आत्मसात करता है, तो वह अमर हो जाता है (दुष्प्रवृत्तियों में नहीं मरता), और हमेशा जीवित रहता है

कई कोटि   नाम गुन गावहि ॥

आतम रसि   सुखि सहजि समावहि ॥

करोड़ों बार हमारा मन ईश्वरीय गुणों का प्रयोग करता है, और भीतर शाश्वत शांति में लीन रहता है

अपुने जन कउ   सासि सासि समारे ॥

नानक   ओइ परमेसुर के पिआरे ॥८॥१०॥

जो लोग अपने मन को ईश्वरीय इच्छा को आत्मसात करने और उसका पालन करने के लिए समर्पित सेवक बनाते हैं, वे ईश्वर के प्रेमी हैं।

सलोकु ॥

करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोइ ॥
नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महीअलि सोइ ॥१॥

हमारे अंदर और बाहर सब कुछ बनाने वाला सिर्फ़ एक ही है, कोई और नहीं; प्रिय मन! अपने आप को उस सर्वव्यापी भगवान के हवाले कर दो।

असटपदी ॥

करन करावन करनै जोगु ॥
जो तिसु भावै सोई होगु ॥

अंदर का ईश्वर सब कुछ करने में सक्षम है। प्रिय मन! अंतरात्मा के अनुसार जियें (दिव्य हुकम के अधीन रहें)

खिन महि थापि उथापनहारा ॥
अंतु नही किछु पारावारा ॥

दिव्य हुकम के अनुसार जियें तो भीतर सभी प्रकार की; अनंत रचनाएँ होती हैं।

हुकमे धारि अधर रहावै ॥
हुकमे उपजै हुकमि समावै ॥

दिव्य हुकम के अनुसार जियें तो किसी अन्य सहारे की, आवश्यकता नहीं रहती। दिव्य हुकम के अनुसार जियें तो हमारा मन अंतरात्मा में विलीन हो जाता है।

हुकमे ऊच नीच बिउहार ॥
हुकमे अनिक रंग परकार ॥

दिव्य हुकम के अनुसार जियें तो मन तुच्छ दुर्गुणों से ऊपर उठकर सद्गुणों की सुन्दर रचना का अनुभव करता है

करि करि देखै अपनी वडिआई ॥
नानक सभ महि रहिआ समाई ॥१॥

दिव्य हुकम के अनुसार जियें तो मन महिमावान सृष्टिकर्ता को उसकी सम्पूर्णता में पहचानता है

प्रभ भावै मानुख गति पावै ॥
प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥

दिव्य हुकम के अनुसार जियें तो हम मानवता में ऊपर उठते हैं; दुष्गुणों में मन कठोर हो गया है, ईश्वर के अनुसार जियें तो (दुष्गुणों से) मुक्त हो जाता है।

प्रभ भावै बिनु सास ते राखै ॥
प्रभ भावै ता हरि गुण भाखै ॥

दिव्य हुकम के अनुसार जियें तो जो मन दुर्गुणों में पहले से ही मरा हुआ है, उसे बचाया जा सकता है (जीवित किया जा सकता है)। दिव्य हुकम के अनुसार जियें तो मन दिव्य गुणों का अभ्यास करता हैं।

प्रभ भावै ता पतित उधारै ॥
आपि करै आपन बीचारै ॥

दिव्य हुकम के अनुसार जियें तो दुर्गुणों से भ्रष्ट मन पवित्र हो जाता है; दिव्य हुकम के अनुसार जियें तो मन अपने कर्मों पर विश्लेषण करने की आदत विकसित करता है।

दुहा सिरिआ का आपि सुआमी ॥
खेलै बिगसै अंतरजामी ॥

जो मन ईश्वर के अनुसार जीता है, वह विचारों और कर्मों दोनों का स्वामी बन जाता है। जो मन सृष्टिकर्ता को सर्वज्ञ मानता है, वह ईश्वर के अनुसार जीने से आंतरिक आनंद प्राप्त करता हैं।

जो भावै सो कार करावै ॥
नानक द्रसटी अवरु न आवै ॥२॥

यदि हम अपने मन को ईश्वर के अनुसार चलने दें, तो यह मन अतुलनीय हो जाता हैं।

कहु मानुख ते किआ होइ आवै ॥
जो तिसु भावै सोई करावै ॥

हम अपनी सीमित बुद्धि से कोई आंतरिक भलाई नहीं कर सकते; लेकिन, यदि हम आंतरिक ईश्वर के अनुसार जिएँ, तो यह लाभदायक है।

इस कै हाथि होइ ता सभु किछु लेइ ॥
जो तिसु भावै सोई करेइ ॥

यदि हमारी सांसारिक बुद्धि अच्छाई ला सकती, तो हमें सब कुछ (शांति और संतोष) मिल गया होता। यह आंतरिक भलाई तभी होती है, जब हम अपने भीतर ईश्वर के अनुसार जिएँ।

अनजानत बिखिआ महि रचै ॥
जे जानत आपन आप बचै ॥

सांसारिक बुद्धि अक्सर अपनी अज्ञानता में दुर्गुणों में पड़ जाती है। यदि यह सांसारिक बुद्धि इतनी अच्छी है, तो यह खुद को दुर्गुणों से क्यों नहीं बचाती?

भरमे भूला दह दिसि धावै ॥
निमख माहि चारि कुँट फिरि आवै ॥

इस सांसारिक बुद्धि के भ्रम में हम विकारों के प्रभाव में व्यर्थ ही भटकते रहते हैं। एक क्षण में ही हमारा मन (विकारों के अधीन) सभी दिशाओं में दौड़ने लगता है (कभी विश्राम नहीं करता)।

करि किरपा जिसु अपनी भगति देइ ॥

नानक ते जन नामि मिलेइ ॥३॥

भक्ति (ईश्वरीय गुणों को आत्मसात करना) ईश्वरीय वरदान है; ऐसे धन्य मन को ईश्वरीय गुण प्राप्त होते हैं।

खिन महि नीच कीट कउ राज ॥

पारब्रहम गरीब निवाज ॥

कीड़े-मकौड़ों की तरह दीन-हीन जीवन जीने वाला (दुष्कर्मों में रेंगता हुआ) व्यक्ति, दयालु सृष्टिकर्ता के दिव्य हुक्म में रहने पर राजा की तरह बलवान (दिव्य गुणों से विभूषित) बन जाता है।

जा का द्रसटि कछू न आवै ॥

तिसु ततकाल दह दिस प्रगटावै ॥

जो मन मार्ग/समाधान नहीं खोज पाता, वह जैसे ही आंतरिक ईश्वर के अनुसार जीने लगता है, सभी दिशाओं के बारे में स्पष्ट हो जाता है।

जा कउ अपुनी करै बखसीस ॥

ता का लेखा न गनै जगदीस ॥

यदि हम सृष्टिकर्ता के आशीर्वाद/हुकम को स्वीकार करते हैं, तो ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए गणना/अनुमान लगाने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती।

जीउ पिंडु सभ तिस की रासि ॥

घटि घटि पूरन ब्रहम प्रगास ॥

ईश्वर के अनुसार जीने से हम अपना सर्वस्व सृष्टिकर्ता को इस तरह समर्पित कर देते हैं कि वह हमारे भीतर-बाहर ज्ञान लाता है।

अपनी बणत आपि बनाई ॥
नानक जीवै देखि बडाई ॥४॥

जो मन ईश्वर के अनुसार रहकर अपने भीतर की दुनिया में सुंदरता पैदा करता है, वह आंतरिक ईश्वर की महिमा को महसूस करता है।

इस का बलु नाही इसु हाथ ॥
करन करावन सरब को नाथ ॥

(दुष्कर्मों में भ्रष्ट) मन के पास (आंतरिक पवित्रता/सुंदरता की ओर) अपनी कोई शक्ति नहीं होती। वह आंतरिक सृजन ईश्वर के अनुसार जीने में है।

आगिआकारी बपुरा जीउ ॥
जो तिसु भावै सोई फुनि थीउ ॥

यह मन ईश्वर का आज्ञाकारी बन जाए। जो प्रभु को अच्छा लगे, वही करने लेंगे।

कबहू ऊच नीच महि बसै ॥
कबहू सोग हरख रंगि हसै ॥

(सांसारिक ज्ञान में) हम कभी-कभी अच्छाई करते हुए ऊपर उठते हैं, लेकिन फिर से बुराइयों में गिर जाते हैं। हमारी सांसारिक चतुराई हमें दुख और सुख के चक्र में फंसा देती है

कबहू निंद चिंद बिउहार ॥
कबहू ऊभ अकास पइआल ॥

सांसारिक चतुराई में, हम अक्सर दूसरों की निंदा करते हैं और उनके बारे में बुरा सोचते हैं। सांसारिक चतुराई में, हम आसमान (अभिमान) तक ऊँचे उठते हैं, और फिर निराशा में नीचे गिर जाते हैं

कबहू बेता ब्रहम बीचार ॥
नानक आपि मिलावणहार ॥५॥

सांसारिक चतुराई में, हम विभिन्न शास्त्रों के आधार पर भगवान के बारे में बयान देते हैं। लेकिन, हम केवल ईश्वर के अनुसार जीने से ही आंतरिक ईश्वर में विलीन होते हैं।

कबहू निरति करै बहु भाति ॥
कबहू सोइ रहै दिनु राति ॥

सांसारिक चतुराई में, हम लालच और घृणा में नाचते/काम करते हैं; और हमेशा किसी भी अच्छे काम को करने में आलस्य करते हैं

कबहू महा क्रोध बिकराल ॥
कबहूँ सरब की होत रवाल ॥

सांसारिक चतुराई में, हम कमजोरों पर अपना गुस्सा/शक्ति दिखाते हैं, और ताकतवरों के सामने नम्र बन जाते हैं

कबहू होइ बहै बड राजा ॥
कबहु भेखारी नीच का साजा ॥

सांसारिक चतुराई में, हम एक समय राजा बन जाते हैं, और फिर दीन-हीन कंगाल बन जाते हैं

कबहू अपकीरति महि आवै ॥
कबहू भला भला कहावै ॥

सांसारिक चतुराई में, कभी-कभी हम अपना सारा सम्मान खो देते हैं, और कभी-कभी हम बहुत अच्छे/सम्माननीय बन जाते हैं

जिउ प्रभु राखै तिव ही रहै ॥
गुर प्रसादि नानक सचु कहै ॥६॥

सच तो यह है कि गुरु की कृपा/ज्ञान से, हम सांसारिक चतुराई छोड़कर, ईश्वर के अनुसार जीना सीखते हैं

कबहू होइ पंडितु करे बख्यानु ॥
कबहू मोनिधारी लावै धिआनु ॥

सांसारिक चतुराई में, हम विद्वान होने का दावा करते हैं और दूसरों को उपदेश देते हैं; और कभी-कभी हम ध्यान करने के लिए मौन हो जाते हैं।

कबहू तट तीरथ इसनान ॥
कबहू सिध साधिक मुखि गिआन ॥

सांसारिक चतुराई में, हम तीर्थों में स्नान करते हैं, या ज्ञान का उपदेश देने के लिए पूर्ण योगी बन जाते हैं।

कबहू कीट हसति पतंग होइ जीआ ॥
अनिक जोनि भरमै भरमीआ ॥

अपनी सांसारिक चतुराई में, हम सभी प्रकार के जानवरों की तरह रहते हैं, और विभिन्न अवतारों (मन की अवस्थाओं) में भटकते हैं

नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै ॥
जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै ॥

सांसारिक चतुराई में, हम सड़क के जादूगर की तरह सभी भेष और चालें करते हैं, और केवल स्वामियों (पैसे देने वाले लोगों) को खुश करने के लिए नाचते/अभिनय करते हैं

जो तिसु भावै सोई होइ ॥
नानक दूजा अवरु न कोइ ॥७॥

सांसारिक चतुराई को छोड़ दें, और वो करें जो भगवान को प्रसन्न करे। ईश्वर के अनुसार जीवन व्यतीत किए बिना, भीतर के ईश्वर से मिलने का कोई दूसरा रास्ता नहीं है

कबहू साधसंगति इहु पावै ॥
उसु असथान ते बहुरि न आवै ॥

जब यह मन (सांसारिक चतुराई को छोड़कर) गुरु की संगति/ज्ञान को आत्मसात कर लेता है। तब सांसारिक चतुराई से पैदा हुए विकार उस स्थान/मन में कभी नहीं आते।

अंतरि होइ गिआन परगासु ॥
उसु असथान का नही बिनासु ॥

जब यह मन गुरु की संगति/ज्ञान से प्रबुद्ध हो जाता है, तो यह कभी भी विकारों में नहीं मरता।

मन तन नामि रते इक रंगि ॥
सदा बसहि पारब्रहम कै संगि ॥

जब शरीर और मन (विचार और कर्म) ईश्वरीय हुकम में डूब जाते हैं, तो मन भीतर के ईश्वर के साथ एक हो जाता हैं।

जिउ जल महि जलु आइ खटाना ॥
तिउ जोती संगि जोति समाना ॥

जैसे, पानी पानी में विलीन हो जाता है, वैसे ही ईश्वर के अनुसार जीवन व्यतीत करने वाला मन भीतर के ईश्वर में विलीन हो जाता है।

मिटि गए गवन पाए बिस्राम ॥
नानक प्रभ कै सद कुरबान ॥८॥११॥

ऐसा मन विकारों में मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाता है, क्योंकि यह मन पूरी तरह से आंतरिक ईश्वर के प्रति समर्पित हो जाता है

सलोकु ॥

सुखी बसै मसकीनीआ आपु निवारि तले ॥

बडे बडे अहंकारीआ नानक गरबि गले ॥१॥

जो लोग भीतर से विनम्र होते हैं, वे हमेशा शांति से रहते हैं। अहंकाr/अभिमान ने उन लोगों को बर्बाद कर दिया है जो बड़े और शक्तिशाली होने का दावा करते हैं

असटपदी ॥

जिस कै अंतरि राज अभिमानु ॥

सो नरकपाती होवत सुआनु ॥

यदि हमारा मन शक्ति के अभिमान से भरा है, तो हम दुष्ट मानसिकता का कचरा खाते हुए नरक में रह रहे हैं

जो जानै मै जोबनवंतु ॥

सो होवत बिसटा का जंतु ॥

यदि हम जवानी के अभिमान से भरे हैं, तो हम (दुराचारों की गंदगी में) कीड़ों की तरह नीच हो कर जी रहे हैं

आपस कउ करमवंतु कहावै ॥

जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै ॥

अगर हम इस गर्व में जीते हैं कि हम इतने धार्मिक हैं, तो हम इस अहंकार में मरते रहते हैं।

धन भूमि का जो करै गुमानु ॥

सो मूरखु अंधा अगिआनु ॥

जो व्यक्ति धन और संपत्ति पर बहुत अधिक गर्व करता है, वह अपने अज्ञान में अंधा मूर्ख है

करि किरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै ॥
नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै ॥१॥

यदि विनम्रता आ जाए तो इसे ईश्वरीय आशीर्वाद समझो; तभी व्यक्ति अंदर से बाहर तक शांति से रहता है।

धनवंता होइ करि गरबावै ॥
तृण समानि कछु संगि न जावै ॥

हम धन-संपत्ति पर गर्व करते हैं, लेकिन यह धन आंतरिक ईश्वर में विलीन होने में तनिक भी मदद नहीं कर सकता

बहु लसकर मानुख ऊपरि करे आस ॥
पल भीतरि ता का होइ बिनास ॥

यदि हम सेना/लोगों पर गर्व करते हैं, तो वे भी क्षणभंगुर हैं

सभ ते आप जानै बलवंतु ॥
खिन महि होइ जाइ भसमंतु ॥

यदि हम स्वयं को सबसे शक्तिशाली मानते हैं, तो यह शक्ति भी क्षणिक है।

किसै न बदै आपि अहंकारी ॥
धरम राइ तिसु करे खुआरी ॥

यदि हम अपने अहंकार में किसी की अवहेलना करते हैं, तो हम अंदर से अनंत काल तक नरक में रहते हैं।

गुर प्रसादि जा का मिटै अभिमानु ॥
सो जनु नानक दरगह परवानु ॥२॥

जब हम गुरु के ज्ञान के माध्यम से अहंकारी अभिमान से छुटकारा पा लेते हैं, तभी हम सर्वव्यापी के सदा-वर्तमान दरबार में स्वीकृत/सम्मानित होते हैं

कोटि करम करै हउ धारे ॥
स्रमु पावै सगले बिरथारे ॥

अहंकारपूर्ण अभिमान में, हमारे सभी धार्मिक-आध्यात्मिक प्रयास व्यर्थ हो जाते हैं

अनिक तपसिआ करे अहंकार ॥
नरक सुरग फिरि फिरि अवतार ॥

अहंकारपूर्ण अभिमान में, हमारी धार्मिक तपस्या का परिणाम केवल आंतरिक स्वर्ग (इच्छाओं) और नरक (भय) ही है

अनिक जतन करि आतम नही द्रवै ॥
हरि दरगह कहु कैसे गवै ॥

अभिमान में मन को बुराई से शुद्ध करने में कोई मदद नहीं मिलती; इस तरह हम कभी भी आंतरिक परमात्मा तक नहीं पहुँच पाते

आपस कउ जो भला कहावै ॥
तिसहि भलाई निकटि न आवै ॥

जो व्यक्ति अपनी (घोषित) अच्छाई पर गर्व करता है, वह वास्तविक अच्छाई के निकट कहीं नहीं पहुँच पाता

सरब की रेन जा का मनु होइ ॥
कहु नानक ता की निरमल सोइ ॥३॥

लेकिन, अगर मन विनम्रता में लीन हो जाए, तो पूरी चेतना भीतर से शुद्ध हो जाती है।

जब लगु जानै मुझ ते कछु होइ ॥
तब इस कउ सुखु नाही कोइ ॥

जब तक हम यह मानते हैं कि सब कुछ मैं ही करता हूँ, तब तक हमें भीतर से कभी शांति नहीं मिलती।

जब इह जानै मै किछु करता ॥

तब लगु गरभ जोनि महि फिरता ॥

जब तक मैं यह सोचता हूँ कि सब कुछ मैं ही करता हूँ, तब तक मैं अवतारों (मन की अस्थिर अवस्थाओं) के चक्र में फँसता रहता हूँ

जब धारै कोऊ बैरी मीतु ॥

तब लगु निहचलु नाही चीतु ॥

जब तक मैं कुछ लोगों को अपना मित्र और कुछ लोगों को अपना शत्रु मानता हूँ, तब तक मेरा मन कभी भी शांति/स्थिरता नहीं पाता

जब लगु मोह मगन संगि माइ ॥

तब लगु धरम राइ देइ सजाइ ॥

जब तक हम बाहरी दुखों और सुखों के भ्रम में आसक्त रहते हैं, तब तक हमें ईश्वरीय नियम के अनुसार केवल दुख ही मिलता है।

प्रभ किरपा ते बंधन तूटै ॥

गुर प्रसादि नानक हउ छूटै ॥४॥

अहंकारमय अभिमान से छुटकारा पाना ही वास्तविक ईश्वरीय आशीर्वाद है; यह गुरु की कृपा/ज्ञान से होता है

सहस खटे लख कउ उठि धावै ॥

तृपति न आवै माइआ पाछै पावै ॥

अपने अहंकार को संतुष्ट करने के लिए हम हजारों कमाने के बाद लाखों की ओर भागते हैं; लेकिन इस दौड़ में कभी भी आंतरिक संतुष्टि नहीं मिलती

अनिक भोग बिखिआ के करै ॥

नह तृपतावै खपि खपि मरै ॥

अपने अहंकार को संतुष्ट करने के लिए हम कई तरह के बुरे काम करते हैं, लेकिन उनमें कभी भी शांति नहीं मिलती; बल्कि, हम हर पल मरते/पीड़ित होते हैं।

बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥
सुपन मनोरथ बृथे सभ काजै ॥

आंतरिक संतोष के बिना कोई भी संतुष्ट नहीं होता। सारी बाहरी दौड़ रात के सपनों की तरह व्यर्थ है।

नाम रंगि सरब सुखु होइ ॥
बडभागी किसै परापति होइ ॥

सभी शांति दिव्य गुणों में पाई जाती है; दिव्य गुणों में लीन होकर हम भाग्यशाली बन जाते हैं।

करन करावन आपे आपि ॥
सदा सदा नानक हरि जापि ॥५॥

यह मामला (दिव्य गुणों को प्राप्त करने का) दिव्य ज्ञान द्वारा स्वयं हल किया जाता है, जब हम हमेशा; आंतरिक दिव्यता के अधीन रहते हैं।

करन करावन करनैहारु ॥
इस कै हाथि कहा बीचारु ॥

आंतरिक शुद्धता तब होती है जब हम दिव्य ज्ञान के अनुसार जीते हैं। अहंकारी अभिमान से भरे मन के हाथ में कुछ नहीं है

जैसी द्रसटि करे तैसा होइ ॥
आपे आपि आपि प्रभु सोइ ॥

जैसा कि आंतरिक दिव्य दिखाता/मार्गदर्शित करता है, हमें वैसा ही बनना चाहिए; तभी हम अपने दिव्य स्व में विलीन हो जाते हैं

जो किछु कीनो सु अपनै रंगि ॥
सभ ते दूरि सभहू कै संगि ॥

आंतरिक दिव्यता का अनुसरण करके, हम सभी दोषों से दूर हो जाते हैं, और सभी दिव्य गुणों में विलीन हो जाते हैं

बूझै देखै करै बिबेक ॥
आपहि एक आपहि अनेक ॥

एक विनम्र मन इतना बुद्धिमान होता है कि वह सब में रहने वाले भगवान को देख सकता है

मरै न बिनसै आवै न जाइ ॥
नानक सद ही रहिआ समाइ ॥६॥

ऐसा मन कभी दोषों में नहीं मरता; इसके बजाय, भगवान के साथ एक हुआ रहता है

आपि उपदेसै समझै आपि ॥
आपे रचिआ सभ कै साथि ॥

एक विनम्र मन गुरु/ज्ञान से सीखता है, और खुद को निर्देश देता है। और अपने पूरे आंतरिक जगत के साथ सामंजस्य बिठाकर रहता है

आपि कीनो आपन बिसथारु ॥
सभु कछु उस का ओहु करनैहारु ॥

एक विनम्र मन, गुरु के ज्ञान के माध्यम से खुद को विकसित करता है, और खुद को भीतर के निर्माता के अधीन कर देता है

उस ते भिंन कहहु किछु होइ ॥
थान थनंतरि एकै सोइ ॥

एक विनम्र मन जानता है कि सर्वव्यापी एक के अलावा और कुछ नहीं है।

अपुने चलित आपि करणैहार ॥
कउतक करै रंग आपार ॥

एक विनम्र मन जानता है कि उसके चारों ओर की सभी विविधताएँ उसी एक की रचना हैं।

मन महि आपि मन अपुने माहि ॥
नानक कीमति कहनु न जाइ ॥७॥

जब हमारा मन आंतरिक दिव्यता की ओर लौटता है, तो मन अपने वास्तविक स्वरूप में लौटता है। ऐसा मन अनमोल है

सति सति सति प्रभु सुआमी ॥
गुर परसादि किनै वखिआनी ॥

गुरु से विनम्र ज्ञान के माध्यम से, मन हमेशा आंतरिक दिव्यता पर केंद्रित रहता है

सचु सचु सचु सभु कीना ॥
कोटि मधे किनै बिरलै चीना ॥

ऐसा मन दिव्य हुकम/मार्गदर्शन का पालन करता है और उसका अभ्यास करता है; ऐसा करने से वह दुर्लभ (प्रबुद्ध) बन जाता है

भला भला भला तेरा रूप ॥
अति सुँदर अपार अनूप ॥

विनम्रतापूर्वक दिव्य हुकम/मार्गदर्शन को स्वीकार करने और उसका अभ्यास करने से, भीतर अच्छाई की सुंदरता पैदा होती है।

निरमल निरमल निरमल तेरी बाणी ॥
घटि घटि सुनी स्रवन बख्याणी ॥

जब हम सुनते/ध्यान देते हैं और उस पर चिंतन/अभ्यास करते हैं, तो दिव्य हुकम/मार्गदर्शन आंतरिक शुद्धता लाता है

पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत ॥
नामु जपै नानक मनि प्रीति ॥८॥१२॥

जीवन में दिव्य गुणों को आत्मसात करने और उनका अभ्यास करने से, मन शुद्धतम से भी शुद्ध हो जाता है

सलोकु ॥

संत सरनि जो जनु परै सो जनु उधरनहार ॥

संत की निंदा नानका बहुरि बहुरि अवतार ॥१॥

जब हम गुरु/ज्ञान के अधीन हो जाते हैं, तो हम (दुष्प्रवृत्तियों से) मुक्त हो जाते हैं। जब हम गुरु की उपेक्षा करते हैं, तो हम निरंतर दुष्प्रवृत्तियों में मरते हैं।

असटपदी ॥

संत कै दूखनि आरजा घटै ॥

संत कै दूखनि जम ते नही छुटै ॥

गुरु/ज्ञान से विमुख होकर हम अपना जीवन बर्बाद करते हैं। गुरु/ज्ञान से विमुख होकर हम कभी भी दुष्प्रवृत्तियों से मुक्त नहीं हो सकते।

संत कै दूखनि सुखु सभु जाइ ॥

संत कै दूखनि नरक महि पाइ ॥

गुरु/ज्ञान से विमुख होकर हमारी सारी शांति समाप्त हो जाती है। गुरु/ज्ञान से विमुख होकर हम नरक में रह रहे हैं।

संत कै दूखनि मति होइ मलीन ॥

संत कै दूखनि सोभा ते हीन ॥

गुरु से विमुख होकर हमारी बुद्धि दुष्प्रवृत्तियों से कलंकित हो गई है। गुरु/ज्ञान से विमुख होकर हमें कोई सम्मान/महिमा नहीं मिलती।

संत के हते कउ रखै न कोइ ॥

संत कै दूखनि थान भ्रसटु होइ ॥

गुरु/ज्ञान से विमुख होकर हमें कोई नहीं बचा सकता। गुरु/ज्ञान से विमुख होकर हमारा आंतरिक स्थान (मन) दुष्प्रवृत्तियों में भ्रष्ट हो जाता हैं।

संत कृपाल कृपा जे करै ॥
नानक संतसंगि निंदकु भी तरै ॥१॥

गुरु हमेशा आशीर्वाद देते हैं (ज्ञान से); गुरु के ज्ञान का संग स्वीकार करने से हमारा भ्रष्ट मन विकारों से मुक्त हो जाता है।

संत के दूखन ते मुखु भवै ॥
संतन कै दूखनि काग जिउ लवै ॥

गुरु से विमुख होने पर हमारा ध्यान विकारों की ओर चला जाता है। गुरु से विमुख होने पर हमारे मन में अव्यवस्था बनी रहती है।

संतन कै दूखनि सरप जोनि पाइ ॥
संत कै दूखनि तृगद जोनि किरमाइ ॥

गुरु से विमुख होने पर हमारा मन विषैला (घृणा और ईर्ष्या के विष से भरा हुआ) हो जाता है। गुरु से विमुख होने पर हमारा मन विकारों के कीटाणुओं से संक्रमित हो जाता है।

संतन कै दूखनि तृसना महि जलै ॥
संत कै दूखनि सभु को छलै ॥

गुरु से विमुख होने पर हम अनंत इच्छाओं में जलते/पीड़ित होते हैं। गुरु से विमुख होने पर मन विकारों में पूरी तरह फंस जाता है।

संत कै दूखनि तेजु सभु जाइ ॥
संत कै दूखनि नीचु नीचाइ ॥

गुरु से विमुख होने पर हमारा मन विकारों में अपनी सारी शक्ति खो देता है। गुरु/ज्ञान से विमुख होने पर हम बुराई में गिरते-गिरते गिरते चले जाते हैं।

संत दोखी का थाउ को नाहि ॥
नानक संत भावै ता ओइ भी गति पाहि ॥२॥

गुरु से विमुख होने वाला मन कभी भी कहीं शांति नहीं पाता। ऐसा मन तभी ऊपर उठता है जब वह गुरु की बुद्धि के अनुसार कार्य करता है।

संत का निंदकु महा अतताई ॥
संत का निंदकु खिनु टिकनु न पाई ॥

गुरु से विमुख होने वाला मन उपद्रवी होता है। यह कभी शांत नहीं होता।

संत का निंदकु महा हतिआरा ॥
संत का निंदकु परमेसुरि मारा ॥

जो मन गुरु से विमुख हो गया है, वह विवेक का हत्यारा है; और ऐसा करके वह स्वयं अपने भीतर के दिव्य सद्‌णों के प्रति मृत हो जाता है।

संत का निंदकु राज ते हीनु ॥
संत का निंदकु दुखीआ अरु दीनु ॥

जो मन गुरु से विमुख हो गया है, वह स्वयं पर नियंत्रण खो देता है; और विकारों का दास बनकर कष्ट भोगता है

संत के निंदक कउ सरब रोग ॥
संत के निंदक कउ सदा बिजोग ॥

जो मन गुरु/ज्ञान से विमुख हो गया है, वह सभी विकारों से ग्रसित है: और वह सदैव विकारों में ही कष्ट भोगता है

संत की निंदा दोख महि दोखु ॥
नानक संत भावै ता उस का भी होइ मोखु ॥३॥

जो मन गुरु से विमुख हो गया है, वह स्वयं एक विकार बन जाता है। लेकिन यदि हम गुरु/ज्ञान के अनुसार कार्य करें, तो हम इस कष्ट से मुक्त हो जाते हैं

संत का दोखी सदा अपवितु ॥
संत का दोखी किसै का नही मितु ॥

जो मन गुरु से विमुख हो गया है, वह सदैव अशुद्ध रहता है (क्योंकि उसके भीतर विकार होते हैं)। इसका किसी भी अच्छाई से कोई सम्बन्ध नहीं रहता।

संत के दोखी कउ डानु लागै ॥
संत के दोखी कउ सभ तिआगै ॥

जो मन गुरु से विमुख हो गया है, वह ऐसी सजा भोगता है कि उससे सभी सुख-चैन छिन जाते हैं।

संत का दोखी महा अहंकारी ॥
संत का दोखी सदा बिकारी ॥

जो मन गुरु से विमुख हो गया है, वह अपने अहंकार में और अधिक दुष्ट होता जाता है।

संत का दोखी जनमै मरै ॥
संत की दूखना सुख ते टरै ॥

जो मन गुरु/ज्ञान से विमुख हो गया है, वह जीवन भर दुर्गुणों में ही मरता रहता है। उसे कभी शांति नहीं मिलती।

संत के दोखी कउ नाही ठाउ ॥
नानक संत भावै ता लए मिलाइ ॥४॥

जो मन गुरु से विमुख हो गया है, उसे कभी शांति नहीं मिलती। लेकिन अगर वह गुरु/ज्ञान के अनुसार जीने लगे, तो वह अपने भीतर के परमात्मा से मिल जाता है।

संत का दोखी अध बीच ते टूटै ॥
संत का दोखी कितै काजि न पहूचै ॥

जो मन गुरु/बुद्धि से विमुख हो गया है, वह सदैव विभाजित/विचलित रहता है; जिसके कारण वह कभी कहीं नहीं पहुँच पाता (कभी मंजिल नहीं पाता)

संत के दोखी कउ उदिआन भ्रमाईऐ ॥
संत का दोखी उझड़ि पाईऐ ॥

जो मन गुरु से विमुख हो गया है, वह विकारों के प्रभाव में जंगलों/अव्यवस्थाओं में भटकता रहता है। वह अपने भीतर के शाश्वत घर को खो देता है

संत का दोखी अंतर ते थोथा ॥
जिउ सास बिना मिरतक की लोथा ॥

जो मन गुरु से विमुख हो गया है, वह विकारों में खोखला हो जाता है, जैसे बिना सांस का शरीर

संत के दोखी की जड़ किछु नाहि ॥
आपन बीजि आपे ही खाहि ॥

जो मन गुरु से विमुख हो गया है, वह अपनी जड़ें (ईश्वरीय गुण) खो देता है; वह विकारों को बोता और काटता/खाता है

संत के दोखी कउ अवरु न राखनहारु ॥
नानक संत भावै ता लए उबारि ॥५॥

जो मन गुरु/बुद्धि से विमुख हो गया है, उसे किसी भी बाहरी चतुराई से नहीं बचाया जा सकता। लेकिन अगर वह गुरु/बुद्धि के अनुसार जीने लगे, तो वह विकारों से मुक्त हो जाता है।

संत का दोखी इउ बिललाइ ॥
जिउ जल बिहून मछुली तड़फड़ाइ ॥

गुरु से विमुख हुआ मन हमेशा तड़पता रहता है, जैसे जल के बिना मछली।

संत का दोखी भूखा नही राजै ॥
जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै ॥

गुरु से विमुख हुआ मन कभी संतुष्ट नहीं होता, जैसे ईंधन से आग कभी नहीं बुझती।

संत का दोखी छुटै इकेला ॥
जिउ बूआड़ु तिलु खेत माहि दुहेला ॥

गुरु से विमुख हुआ मन विकारों में अकेला रह जाता है, जैसे खेत में सड़ा हुआ अनुपयोगी पौधा रह जाता है।

संत का दोखी धरम ते रहत ॥
संत का दोखी सद मिथिआ कहत ॥

गुरु से विमुख हुआ मन धर्म से रहित होता है; वह हमेशा मिथ्यात्व में जीता है।

किरतु निंदक का धुरि ही पइआ ॥
नानक जो तिसु भावै सोई थिआ ॥६॥

गुरु से विमुख हुआ मन अपने बुरे कर्मों में ही रमा रहता है। जैसा वह बुराई से प्रेम करता है, वैसा ही बन जाता है।

संत का दोखी बिगड़ रूपु होइ जाइ ॥
संत के दोखी कउ दरगह मिलै सजाइ ॥

गुरु से विमुख हुआ मन विकारों में कुरूप हो जाता है। परमात्मा के आंतरिक दरबार में उसे हमेशा निंदा का सामना करना पड़ता है।

संत का दोखी सदा सहकाईऐ ॥
संत का दोखी न मरै न जीवाईऐ ॥

गुरु से विमुख हुआ मन हमेशा पीड़ा में रहता है। वह न तो विकारों के कारण सुख से रहता है, न ही उनसे मुक्ति पाने के लिए मर सकता है।

संत के दोखी की पुजै न आसा ॥
संत का दोखी उठि चलै निरासा ॥

गुरु से विमुख हुआ मन हमेशा निराश/हताश रहता है। वह जीवन निराशा में बिताता हैं।

संत कै दोखि   न तृसटै कोइ ॥
जैसा भावै   तैसा कोई होइ ॥

जो मन गुरु से विमुख हो गया है, उसे कभी संतोष नहीं मिलता। वह उन विकारों जैसा बन जाता है, जिन्हें वह प्यार करता है

पइआ किरतु   न मेटै कोइ ॥
नानक   जानै सचा सोइ ॥७॥

विकारों के प्रभाव में किए गए कर्म कभी भी बिना परिणाम के नहीं होते। ऐसे कर्म कभी भी अंतर्यामी परमात्मा से छिपे नहीं रहते

सभ घट तिस के   ओहु करनैहारु ॥
सदा सदा   तिस कउ नमसकारु ॥

सभी हृदय/जीवन उस परमात्मा के हैं, जिसने उन्हें बनाया है। ऐसी दिव्य शक्ति को हमेशा नमन करें।

प्रभ की उसतति   करहु दिनु राति ॥
तिसहि धिआवहु   सासि गिरासि ॥

हर समय कृतज्ञता में जियें। हर सांस के साथ परमात्मा का ध्यान करें

सभु कछु वरतै   तिस का कीआ ॥
जैसा करे   तैसा को थीआ ॥

सब कुछ एक रचयिता की रचना है। उसके हुक्म/मार्गदर्शन में हम वही बनते हैं, जो वह हमें बनाना चाहता है

अपना खेलु   आपि करनैहारु ॥
दूसर कउनु   कहै बीचारु ॥

यह जीवन परमात्मा की रचना है, किसी और की नहीं

जिस नो कृपा करै तिसु आपन नामु देइ ॥
बडभागी नानक जन सेइ ॥८॥१३॥

सृष्टिकर्ता ने हमें यह जीवन प्रदान किया है, जिस पर वह हमें हुक्म/दिव्य मार्गदर्शन प्रदान करता है। वे लोग भाग्यशाली हैं, जो उस हुक्म में जीते हैं।

सलोकु ॥

तजहु सिआनप सुरि जनहु सिमरहु हरि हरि राइ ॥
एक आस हरि मनि रखहु नानक दूखु भरमु भउ जाइ ॥१॥

हे बुद्धिमान लोगों! यह सब बाहरी दुनिया की चालाकी छोड़ो और परमात्मा को याद करो। जब हम अपने भीतर एक परमात्मा का सहारा लेते हैं तो सारे दुख, भ्रम और भय दूर हो जाते हैं

असटपदी ॥

मानुख की टेक बृथी सभ जानु ॥
देवन कउ एकै भगवानु ॥

प्रिय मन! दूसरों से सुख और शांति की तलाश करना बेकार है; शांति का स्रोत तुम्हारे भीतर एक परमात्मा है।

जिस कै दीऐ रहै अघाइ ॥
बहुरि न तृसना लागै आइ ॥

संतुष्टि भीतर के परमात्मा के प्रावधानों/मार्गदर्शन को स्वीकार करने से होती है। कोई अंतहीन लालच नहीं रहता

मारै राखै एको आपि ॥
मानुख कै किछु नाही हाथि ॥

दिव्य हुकम/मार्गदर्शन तुम्हारे भीतर से बुराइयों को मारकर तुम्हारी रक्षा करता है; कोई बाहरी इंसान तुम्हारे लिए ऐसा नहीं कर सकता।

तिस का हुकमु बूझि सुखु होइ ॥
तिस का नामु रखु कंठि परोइ ॥

आंतरिक शांति तब मिलती है जब तुम परमात्मा के हुकम/मार्गदर्शन को समझते और स्वीकार करते हो। परमात्मा के हुकम के आगे समर्पण करो

सिमरि सिमरि सिमरि प्रभु सोइ ॥
नानक बिघनु न लागै कोइ ॥१॥

सदैव सृष्टिकर्ता प्रभु का ध्यान कर, तभी तुम्हारे भीतर की शांति के रास्ते में सभी बाधाएँ/बुराइयाँ शक्तिहीन हो जाएँगी

उसतति मन महि करि निरंकार ॥
करि मन मेरे सति बिउहार ॥

प्रिय मन, हमेशा अपने भीतर के परमात्मा का आभार मानो! अच्छाई का अभ्यास करें।

निरमल रसना अंमृतु पीउ ॥
सदा सुहेला करि लेहि जीउ ॥

ईश्वरीय कृतज्ञता के अमृत में आपकी जीभ/वाणी/व्यवहार शुद्ध हो जाता है, और आपके भीतर शांति आती है

नैनहु पेखु ठाकुर का रंगु ॥
साधसंगि बिनसै सभ संगु ॥

गुरु के ज्ञान के माध्यम से, अपनी आँखों को ईश्वरीय हुकम के रंग/प्रेम में रंग दें, ताकि आँखें/इंद्रियाँ, बुराई/दुर्गुणों का साथ छोड़ दें

चरन चलउ मारगि गोबिंद ॥
मिटहि पाप जपीऐ हरि बिंद ॥

अपना ध्यान हमेशा ईश्वर पर केंद्रित रखें, और आप ईश्वरीय हुकम का अभ्यास करने की दिशा में कदम बढ़ाएँ

कर हरि करम   स्रवनि हरि कथा ॥
हरि दरगह   नानक ऊजल मथा ॥२॥

चेहरा/पहचान उज्ज्वल/धन्य हो जाती है, जब आपके हाथ/शरीर आंतरिक ईश्वर की बात सुनने/सुनने लगते हैं

बडभागी   ते जन जग माहि ॥
सदा सदा   हरि के गुन गाहि ॥

जो लोग ईश्वरीय गुणों का गायन/अभ्यास करते हैं, वे भाग्यशाली हैं

राम नाम   जो करहि बीचार ॥
से धनवंत   गनी संसार ॥

वे वास्तव में धनवान हैं, जो ईश्वरीय गुणों को आत्मसात करते हैं

मनि तनि मुखि   बोलहि हरि मुखी ॥
सदा सदा   जानहु ते सुखी ॥

वे शांति से रहते हैं, जो अपने विचारों और कार्यों में ईश्वरीय गुणों का उच्चारण/अभ्यास करते हैं

एको एकु   एकु पछानै ॥
इत उत की   ओहु सोझी जानै ॥

वे ईश्वर को भीतर से महसूस करते हैं, जो सभी में एक को पहचानते हैं। हर समय, हर जगह

नाम संगि   जिस का मनु मानिआ ॥
नानक   तिनहि निरंजनु जानिआ ॥३॥

वे अपने भीतर के ईश्वर को जानते हैं, जिनका मन ईश्वरीय गुणों में लीन रहता है।

गुर प्रसादि आपन आपु सुझै ॥
तिस की जानहु तृसना बुझै ॥

भौतिक सुखों की अनंत इच्छाएं तभी समाप्त होती हैं, जब हम गुरु की कृपा/ज्ञान के माध्यम से अपने सच्चे स्वरूप को जान लेते हैं

साधसंगि हरि हरि जसु कहत ॥
सरब रोग ते ओहु हरि जनु रहत ॥

हम सभी बीमारियों/दुर्गुणों से मुक्त हो जाते हैं, जब हम गुरु की संगति/ज्ञान से ईश्वरीय गुणों का अभ्यास करते हैं

अनदिनु कीरतनु केवल बख्यानु ॥
गृहसत महि सोई निरबानु ॥

वे सभी पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारियों को पूरा करते हुए मुक्त/मुक्त रहते हैं, जो दिन-रात ईश्वरीय गुणों का अभ्यास करते हैं

एक ऊपरि जिसु जन की आसा ॥
तिस की कटीऐ जम की फासा ॥

वे दोषों के बंधन से मुक्त हो जाते हैं, जो आंतरिक ईश्वर पर आशा रखते हैं।

पारब्रहम की जिसु मनि भूख ॥
नानक तिसहि न लागहि दूख ॥४॥

वह मन भौतिक इच्छाओं से दूर रहता है, जो केवल ईश्वरीय गुणों की लालसा करता है।

जिस कउ हरि प्रभु मनि चिति आवै ॥
सो संतु सुहेला नही डुलावै ॥

वह सद्‌णी मन कभी (दुर्गुणों की ओर) विचलित नहीं होता, जो अपने आपको आंतरिक ईश्वर पर केंद्रित करता है।

जिसु प्रभु अपुना किरपा करै ॥
सो सेवकु कहु किस ते डरै ॥

वे कभी भी भय और चिंता में नहीं पड़ते, जिन्हें ईश्वर की कृपा (गुरु के मार्गदर्शन के माध्यम से) प्राप्त होती है

जैसा सा तैसा द्रिसटाइआ ॥
अपुने कारज महि आपि समाइआ ॥

ईश्वर के सेवक भीतर से जितने अच्छे होते हैं, उतने ही अच्छे दिखाई देते हैं। वे हमेशा अपने प्रयासों (ईश्वर के प्रति समर्पण) में तल्लीन रहते हैं।

सोधत सोधत सोधत सीझिआ ॥
गुर प्रसादि ततु सभु बूझिआ ॥

वे गुरु की कृपा/ज्ञान के माध्यम से खुद को बेहतर बनाकर आंतरिक ईश्वर को महसूस करने में सफल होते हैं।

जब देखउ तब सभु किछु मूलु ॥
नानक सो सूखमु सोई असथूलु ॥५॥

फिर वे जहाँ भी देखते हैं, वे इसे छोटे से लेकर बड़े सभी सृष्टि में पाते हैं।

नह किछु जनमै नह किछु मरै ॥
आपन चलितु आप ही करै ॥

प्यारे मन! यदि आप विकारों में मानसिक संक्रमण के चक्र से छुटकारा पाना चाहते हैं, तो सुनिश्चित करें कि आपके सभी कार्य ईश्वरीय हुकम के अनुरूप हों।

आवनु जावनु द्रिसटि अनद्रिसटि ॥
आगिआकारी धारी सभ स्रिसटि ॥

बिना रुके, व्यक्त और अव्यक्त विचारों की पूरी आंतरिक दुनिया को आंतरिक ईश्वर के प्रति आज्ञाकारी होने दें।

आपे आपि सगल महि आपि ॥
अनिक जुगति रचि थापि उथापि ॥

आपको यह महसूस करना चाहिए कि एक दिव्य भगवान आपके और आपके आस-पास के सभी निर्माण के पीछे है।

अबिनासी नाही किछु खंड ॥
धारण धारि रहिओ ब्रहमंड ॥

जब आप ईश्वरीय हुकम को आत्मसात करते हैं, तो आप ब्रह्मांड की तरह विशाल और अविनाशी बन जाते हैं।

अलख अभेव पुरख परताप ॥
आपि जपाए त नानक जाप ॥६॥

प्यारे मन! जब आप अपने भीतर ईश्वरीय हुकम/मार्गदर्शन का अभ्यास करेंगे, तो आप ईश्वर को पहचान लेंगे।

जिन प्रभु जाता सु सोभावंत ॥
सगल संसारु उधरै तिन मंत ॥

जो लोग ईश्वर को पहचानते हैं, वे सम्माननीय हैं। उनका संपूर्ण आंतरिक संसार ईश्वर की प्राप्ति में मुक्त हो जाता है।

प्रभ के सेवक सगल उधारन ॥
प्रभ के सेवक दूख बिसारन ॥

जो लोग ईश्वर की सेवा करते हैं, वे आंतरिक पीड़ा से मुक्त हो जाते हैं।

आपे मेलि लए किरपाल ॥
गुर का सबदु जपि भए निहाल ॥

वे गुरु के ज्ञान के माध्यम से ईश्वर के साथ एकाकार होकर शांति से रहते हैं।

उन की सेवा सोई लागै ॥
जिस नो कृपा करहि बडभागै ॥

ईश्वरीय हुकम की सेवा करना ईश्वरीय कृपा और सौभाग्य है।

नामु जपत पावहि बिस्रामु ॥
नानक तिन पुरख कउ ऊतम करि मानु ॥७॥

ईश्वरीय हुकम का अभ्यास करने से मन को शांति मिलती है। जो लोग ऐसा करते हैं, वे श्रेष्ठ प्राणी होते हैं।

जो किछु करै सु प्रभ कै रंगि ॥
सदा सदा बसै हरि संगि ॥

जो लोग ईश्वर के अनुसार जीवन जीते हैं, वो ईश्वरीय प्रेम से ओतप्रोत होकर सब कुछ करते हैं और हमेशा अपने भीतर ईश्वर को याद करते हैं।

सहज सुभाइ होवै सो होइ ॥
करणैहारु पछाणै सोइ ॥

ईश्वरीय हुकम/मार्गदर्शन का अभ्यास करना उनके लिए स्वाभाविक हो जाता है; उन्होंने इस तरह से ईश्वर को पहचान लिया है।

प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना ॥
जैसा सा तैसा द्रिसटाना ॥

जो लोग ईश्वरीय हुकम/मार्गदर्शन को स्वीकार करते हैं, वे ईश्वर के समान हो जाते हैं (उसमें विलीन हो जाते हैं)

जिस ते उपजे तिसु माहि समाए ॥
ओइ सुख निधान उनहू बनि आए ॥

वे सृष्टिकर्ता के साथ एकाकार हो जाते हैं; सभी शांति और खुशी का स्रोत उन्हें हर जगह स्पष्ट/साक्षात्कार होता है।

आपस कउ आपि दीनो मानु ॥

नानक प्रभ जनु एको जानु ॥८॥१४॥

हम ईश्वर के अनुसार जीवन जीकर आंतरिक सम्मान अर्जित कर सकते हैं; आंतरिक ईश्वर की सेवा करके हम उसके साथ एक हो जाते हैं।

सलोकु ॥

सरब कला भरपूर प्रभ बिरथा जाननहार ॥

जा कै सिमरनि उधरीऐ नानक तिसु बलिहार ॥१॥

सृष्टिकर्ता सभी शक्तियों से युक्त है, और हमारी सभी समस्याओं को जानता है। मुझे उस सृष्टिकर्ता की शरण में जाना चाहिए, जिसका स्मरण सभी विकारों से मुक्ति दिलाता हैं।

असटपदी ॥

टूटी गाढनहार गोपाल ॥

सरब जीआ आपे प्रतिपाल ॥

मन, जो अपने वास्तविक स्वरूप से टूटा हुआ/विछिन्न है, वह सृष्टिकर्ता के स्मरण से पुनः जुड़ जाता है।

सगल की चिंता जिसु मन माहि ॥

तिस ते बिरथा कोई नाहि ॥

सबका पालन करने वाले उस रचयिता का स्मरण कभी व्यर्थ नहीं जाता।

रे मन मेरे सदा हरि जापि ॥

अबिनासी प्रभु आपे आपि ॥

प्रिय मन! अविनाशी रचयिता को सदैव स्मरण करो

आपन कीआ कछू न होइ ॥
जे सउ प्रानी लोचै कोइ ॥

मनुष्य सैकड़ों चतुराईयाँ कर सकता है, लेकिन वह सांसारिक बुद्धि (अंदर के ईश्वर से एकता की ओर) सहायक नहीं होती

तिसु बिनु नाही तेरै किछु काम ॥
गति नानक जपि एक हरि नाम ॥१॥

आंतरिक सुधार और शांति प्राप्त करने में आंतरिक ईश्वर के अलावा कोई भी सहायता नहीं कर सकता। यह सुधार केवल ईश्वरीय हुक्म के प्रयोग से ही होता है

रूपवंतु होइ नाही मोहै ॥
प्रभ की जोति सगल घट सोहै ॥

जीवन सुंदर बनता है, बाहरी सुंदरता से नहीं, बल्कि ईश्वरीय प्रकाश/साक्षात्कार से

धनवंता होइ किआ को गरबै ॥
जा सभु किछु तिस का दीआ दरबै ॥

हमें सब कुछ भीतर के ईश्वर की कृपा से मिलता है; फिर हम धन-संपत्ति पर कैसे गर्व कर सकते हैं।

अति सूरा जे कोऊ कहावै ॥
प्रभ की कला बिना कह धावै ॥

हम ईश्वरीय कृपा के बिना एक कदम भी नहीं चल सकते, फिर हम किस बहादुरी पर गर्व कर सकते हैं?

जे को होइ बहै दातारु ॥
तिसु देनहारु जानै गावारु ॥

यदि कोई व्यक्ति परोपकारी होने का दावा करता है, तो वह महान प्रदाता के सामने मूर्ख सिद्ध होता है।

जिसु गुर प्रसादि तूटै हउ रोगु ॥
नानक सो जनु सदा अरोगु ॥२॥

गुरु के ज्ञान से अहंकार रूपी रोग से छुटकारा पाने वाला व्यक्ति सभी विकारों से मुक्त हो जाता है।

जिउ मंदर कउ थामै थंमनु ॥
तिउ गुर का सबदु मनहि असथंमनु ॥

जैसे छत को खंभों का सहारा मिलता है, वैसे ही मन को गुरु के ज्ञान में सहारा मिलता है।

जिउ पाखाणु नाव चड़ि तरै ॥
प्राणी गुर चरण लगतु निसतरै ॥

जैसे नाव के सहारे चट्टान तैरती है, वैसे ही गुरु के ज्ञान से मनुष्य विकारों से मुक्त हो जाता है।

जिउ अंधकार दीपक परगासु ॥
गुर दरसनु देखि मनि होइ बिगासु ॥

जैसे दीपक अंधेरे में रोशनी लाता है, वैसे ही गुरु का ज्ञान मन में प्रकाश/स्पष्टता लाता है।

जिउ महा उदिआन महि मारगु पावै ॥
तिउ साधू संगि मिलि जोति प्रगटावै ॥

गुरु के ज्ञान से हम विकारों के झुंड में अंतर्यामी परमात्मा से मिलते हैं, जैसे कोई जंगल में रास्ता खोज लेता है।

तिन संतन की बाछउ धूरि ॥
नानक की हरि लोचा पूरि ॥३॥

हे सृष्टिकर्ता प्रभु! मेरी इच्छा पूरी करो कि मुझे भी गुरु का ऐसा ज्ञान मिले।

मन मूरख काहे बिललाईऐ ॥
पुरब लिखे का लिखिआ पाईऐ ॥

हे मेरे मूर्ख मन! तू क्यों रोता-बिलखता है? तू अपने पिछले कर्मों का फल भोगता है।

दूख सूख प्रभ देवनहारु ॥
अवर तिआगि तू तिसहि चितारु ॥

सृष्टिकर्ता तुझे कर्मों के परिणाम के प्राकृतिक नियम के अनुसार सुख और सुख प्रदान करता है। रोना बंद करो, और ईश्वरीय हुकम/कानून को याद करो

जो कछु करै सोई सुखु मानु ॥
भूला काहे फिरहि अजान ॥

ईश्वरीय हुकम/मार्गदर्शन के अधीन हो जाओ। इसे अनदेखा करके इधर-उधर मत भटको।

कउन बसतु आई तेरै संग ॥
लपटि रहिओ रसि लोभी पतंग ॥

प्रिय मन! ऐसा कुछ भी नहीं है जो तुम अपने दम पर लाए हो (तुम्हें सब कुछ सृष्टिकर्ता द्वारा प्रदान किए गए जीवन से मिला है)। लेकिन अपने लालच में तुम सब कुछ कसकर पकड़े हुए हो

राम नाम जपि हिरदे माहि ॥
नानक पति सेती घरि जाहि ॥४॥

ईश्वरीय गुणों को आत्मसात करो और उनका प्रयोग करो। तभी तुम अपने भीतर एकता का सम्मान प्राप्त कर सकते हो।

जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ ॥
राम नामु संतन घरि पाइआ ॥

प्रिय मन! तुम गुरु के ज्ञान के माध्यम से ईश्वरीय गुणों को आत्मसात करके जीवन के उद्देश्य को समझ सकते हो

तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥
राम नामु हिरदे महि तोलि ॥

अहंकार/अभिमान को छोड़ो; ईश्वरीय गुणों को आत्मसात करो

लादि खेप संतह संगि चालु ॥
अवर तिआगि बिखिआ जंजाल ॥

विकास के लिए गुरु के ज्ञान के माध्यम से ईश्वरीय गुणों को अर्जित करो। और सभी बुराइयों को छोड़ दो

धंनि धंनि कहै सभु कोइ ॥
मुख ऊजल हरि दरगह सोइ ॥

तुम्हारे सभी आंतरिक (विचार और इंद्रियाँ) तुम्हें धन्यवाद देंगे, और तुम सर्वव्यापी के दरबार में सम्मान अर्जित करोगे

इहु वापारु विरला वापारै ॥
नानक ता कै सद बलिहारै ॥५॥

मैं खुद को ऐसे दुर्लभ व्यापारियों के अधीन करता हूँ जो ईश्वरीय गुणों को अर्जित करने के लिए बुराइयों को छोड़ देते हैं

चरन साध के धोइ धोइ पीउ ॥
अरपि साध कउ अपना जीउ ॥

प्रिय मन! जीवन में गुरु के ज्ञान का प्रयोग करो; गुरु के चरणों में समर्पित हो जाओ

साध की धूरि करहु इसनानु ॥
साध ऊपरि जाईऐ कुरबानु ॥

गुरु के ज्ञान से ओतप्रोत होकर जियो; गुरु के चरणों में समर्पित हो जाओ।

साध सेवा वडभागी पाईऐ ॥
साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥

गुरु के ज्ञान से तुम सौभाग्यशाली बनोगे; गुरु के ज्ञान से दैवी गुणों का अभ्यास करो।

अनिक बिघन ते साधू राखै ॥
हरि गुन गाइ अंमृत रसु चाखै ॥

गुरु का ज्ञान तुम्हें विकारों की बाधाओं से बचाता है। गुरु के ज्ञान से दैवी गुणों के अमृत को अपने अंदर समाहित करो

ओट गही संतह दरि आइआ ॥
सरब सूख नानक तिह पाइआ ॥६॥

जो लोग गुरु के ज्ञान का सहारा लेते हैं, उन्हें सभी शांति और सुख प्राप्त होते हैं।

मिरतक कउ जीवालनहार ॥
भूखे कउ देवत अधार ॥

गुरु का ज्ञान विकारों में मरे हुए मन को फिर से जीवंत कर देता है। गुरु के ज्ञान से मन की भूख/तड़प शांत हो जाती है

सरब निधान जा की द्रसटी माहि ॥
पुरब लिखे का लहणा पाहि ॥

सभी (गुणों के) खजाने गुरु की दृष्टि/ज्ञान में हैं। पहले इच्छा विकसित करने से मन को गुरु का ज्ञान प्राप्त होता है

सभु किछु तिस का ओहु करनै जोगु ॥
तिसु बिनु दूसर होआ न होगु ॥

(आंतरिक विकास और शांति का) सारा विस्तार गुरु के ज्ञान से होता है; इसके अलावा कोई रास्ता नहीं है

जपि जन सदा सदा दिनु रैणी ॥
सभ ते ऊच निरमल इह करणी ॥

प्रिय मन! सभी प्रयासों में सबसे शुद्ध और श्रेष्ठ है गुरु के ज्ञान को हर समय आत्मसात करना

करि किरपा जिस कउ नामु दीआ ॥
नानक सो जनु निरमलु थीआ ॥७॥

केवल वे ही पवित्र हैं जो गुरु की कृपा/ज्ञान के माध्यम से दिव्य गुणों को आत्मसात करते हैं

जा कै मनि गुर की परतीति ॥
तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥

जो व्यक्ति गुरु के ज्ञान के प्रति विश्वास बनाता है, वह हमेशा सृष्टिकर्ता को याद करता है

भगतु भगतु सुनीऐ तिहु लोइ ॥
जा कै हिरदै एको होइ ॥

वही भक्त है, जिसने अपने भीतर के ईश्वर के साथ एकता प्राप्त कर ली है।

सचु करणी सचु ता की रहत ॥
सचु हिरदै सति मुखि कहत ॥

ऐसे भक्त का हर कार्य और जीवन शैली शुद्ध/पवित्र है। वह अंदर से बाहर तक पवित्र है।

साची द्रिसटि साचा आकारु ॥
सचु वरतै साचा पासारु ॥

जिसके पास शुद्ध दृष्टि/चरित्र है, उसका आंतरिक स्व पवित्र है; ऐसे मन के भीतर पवित्रता बनी रहती है, क्योंकि वह ईश्वरीय अनुभूति में विस्तारित होता है।

पारब्रहमु जिनि सचु करि जाता ॥
नानक सो जनु सचि समाता ॥८॥१५॥

जो लोग आंतरिक पवित्रता के माध्यम से आंतरिक ईश्वर को समझते हैं, वे अपने भीतर के ईश्वर में लीन रहते हैं

सलोकु ॥

रूपु न रेख न रंगु किछु तृहु गुण ते प्रभ भिंन ॥
तिसहि बुझाए नानका जिसु होवै सुप्रसंन ॥१॥

सृष्टिकर्ता का कोई आकार नहीं है, कोई रंग नहीं है; और यह हमेशा बदलते रहने वाले मानव स्वभाव से अलग है। जो गुरु की बुद्धि का आनंद/ज्ञान अर्जित करता है, वह अपने भीतर के निर्माता को पहचान लेता है।

असटपदी ॥

अबिनासी प्रभु मन महि राखु ॥
मानुख की तू प्रीति तिआगु ॥

अपने भीतर के निर्माता का ध्यान रखें और बाहरी दुनिया से प्रेम/आशा (शांति की) को त्याग दें

तिस ते परै नाही किछु कोइ ॥
सरब निरंतरि एको सोइ ॥

वह, जो सभी में रहता है, सभी शांति का एकमात्र प्रदाता है; निर्माता के बाद ऐसा कोई प्रदाता नहीं है।

आपे बीना आपे दाना ॥
गहिर गंभीरु गहीरु सुजाना ॥
पारब्रहम परमेसुर गोबिंद ॥
कृपा निधान दइआल बखसंद ॥

निर्माता सबसे बुद्धिमान, सर्वोच्च, सभी को पोषण देने वाला और कृपा का खजाना है।

साध तेरे की चरनी पाउ ॥
नानक कै मनि इहु अनराउ ॥१॥

हे निर्माता भगवान! मुझे गुरु के प्रति समर्पण करने की लालसा के साथ आशीर्वाद दें (जो मुझे आपके साथ एक होने में मदद करता है)

मनसा पूरन सरना जोग ॥
जो करि पाइआ सोई होगु ॥

हमें गुरु के ज्ञान के प्रति समर्पित होना चाहिए, जो हमारी सभी आंतरिक इच्छाओं को पूरा करता है। हम अपने भीतर जो भी सुंदरता बनाना चाहते हैं, वह तब होता है जब हम गुरु के ज्ञान को आत्मसात करते हैं

हरन भरन जा का नेत्र फोरु ॥
तिस का मंत्रु न जानै होरु ॥

गुरु का ज्ञान सहज ही आंतरिक खिलता है (दिव्य गुणों के माध्यम से)। गुरु के ज्ञान जैसा मंत्र/मार्ग कहीं और नहीं मिलता

अनद रूप मंगल सद जा कै ॥
सरब थोक सुनीअहि घरि ता कै ॥

गुरु का ज्ञान आंतरिक शांति का स्थायी/निरंतर प्रतिबिंब है। इसमें सभी प्रकार की शांति और सुख प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं

राज महि राजु जोग महि जोगी ॥
तप महि तपीसरु गृहसत महि भोगी ॥

गुरु हमें दिव्य गुणों से भरकर हमें सच्चा राजा, सच्चा योगी, सच्चा तपस्वी और सच्चा गृहस्थ बनाता हैं।

धिआइ धिआइ भगतह सुखु पाइआ ॥
नानक तिसु पुरख का किनै अंतु न पाइआ ॥२॥

गुरु के ज्ञान पर ध्यान केन्द्रित करने से भक्त को शांति मिलती है; ऐसे गुरु की महिमा का कोई अंत नहीं है।

जा की लीला की मिति नाहि ॥
सगल देव हारे अवगाहि ॥

गुरु/ज्ञान की महिमा समझ से परे है; सभी देवी-देवता भी इसमें विफल हैं।

पिता का जनमु कि जानै पूतु ॥
सगल परोई अपुनै सूति ॥

गुरु के ज्ञान मनुष्य को देवदूत/दिव्य प्राणी बना देता है। पुत्र (जो ज्ञान लेकर ऊपर उठता है) कभी भी अपने पिता (गुरु के ज्ञान) को जन्म नहीं दे सकता (श्रेष्ठ नहीं हो सकता)। गुरु की बुद्धि हमारे समस्त अन्तर जगत (चेतना, बुद्धि, मन) को एक सूत्र में पिरोती है (एक साथ जोड़ती है)

सुमति गिआनु धिआनु जिन देइ ॥
जन दास नामु धिआवहि सेइ ॥

जो व्यक्ति गुरु के ज्ञान पर ध्यान केन्द्रित करने का तरीका सीख लेता है, वह सदैव दिव्य गुणों पर ध्यान केन्द्रित करता है

तिहु गुण महि जा कउ भरमाए ॥
जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥

जो व्यक्ति सांसारिक बुद्धि में भटक रहा है, वह निरंतर दुर्गुणों में जीता और मरता है

ऊच नीच तिस के असथान ॥
जैसा जनावै तैसा नानक जान ॥३॥

हम गुरु के ज्ञान से अपने आपको जैसे भी जोड़ लें, हमारा जीवन वैसा ही बन जाता है। हम ज्ञान का प्रयोग करके ऊपर उठते हैं और इसे अनदेखा करके नीचे गिरते हैं

नाना रूप नाना जा के रंग ॥
नाना भेख करहि इक रंग ॥
नाना बिधि कीनो बिसथारु ॥
प्रभु अबिनासी एकंकारु ॥

(गुरु के ज्ञान से हमें यह पता चलता है कि) सब कुछ एक ही का विस्तार है। सभी विविध रंगों और आकृतियों के पीछे एक ही रचयिता हैं।

नाना चलित करे खिन माहि ॥
पूरि रहिओ पूरनु सभ ठाइ ॥

सब कुछ एक ही ने बनाया है और रचयिता पूरी सृष्टि में रहता है

नाना बिधि करि बनत बनाई ॥
अपनी कीमति आपे पाई ॥

विविधता को रचकर सबका ज्ञान रखता है/सबका ख्याल रखता है

सभ घट तिस के सभ तिस के ठाउ ॥
जपि जपि जीवै नानक हरि नाउ ॥४॥

हर दिल रचयिता का है, एक ही सबके दिलों में रहता है। रचयिता के हुक्म/मार्गदर्शन का प्रयोग करके हम जीते हैं (बुराइयों में नहीं मरते)

नाम के धारे सगले जंत ॥
नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥

सभी जीव जंतु, पूरा ब्रह्मांड अपने हिस्सों के साथ - सभी जन्म और मृत्यु के एक प्राकृतिक नियम में बंधे हैं

नाम के धारे सिमृति बेद पुरान ॥
नाम के धारे सुनन गिआन धिआन ॥

जैसे, सभी पुस्तकों को लिखने, पढ़ने और सुनने के कुछ नियम और कानून हैं।

नाम के धारे आगास पाताल ॥
नाम के धारे सगल आकार ॥

जैसे आसमान से लेकर जमीन तक पूरी सृष्टि और सब कुछ प्राकृतिक नियमों में बंधा हुआ हैं।

नाम के धारे पुरीआ सभ भवन ॥
नाम कै संगि उधरे सुनि स्रवन ॥

उसी तरह, ईश्वरीय हुक्म को सुनने/आंतरिक करने और उसका प्रयोग करने से पूरा आंतरिक जगत दोषों से मुक्त हो जाता है, और एक व्यवस्था में आ जाता हैं।

करि किरपा जिसु आपनै नामि लाए ॥
नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाए ॥५॥

यदि कोई ईश्वरीय हुक्म/मार्गदर्शन को आंतरिक करने और उसका प्रयोग करने के लिए समर्पित है, तो इसे ईश्वरीय आशीर्वाद मानें। ऐसे भक्त अंदर से ज्ञान से युक्त होते हैं।

रूपु सति जा का सति असथानु ॥
पुरखु सति केवल परधानु ॥

वे हमेशा दिव्य दरबार में रहते हैं, जिनकी चेतना ने शाश्वत दिव्य गुणों को आत्मसात कर लिया है। वे आंतरिक दिव्य के मार्गदर्शन में चलते हैं।

करतूति सति सति जा की बाणी ॥
सति पुरख सभ माहि समाणी ॥

जब शाश्वत दिव्य हमारे शब्दों और कार्यों में निवास करते हैं, तो हमारा पूरा अस्तित्व दिव्य उपस्थिति से भर जाता है।

सति करमु जा की रचना सति ॥
मूलु सति सति उतपति ॥

वे कार्य अच्छे होते हैं, जो दिव्य हुकम/मार्गदर्शन के आत्मसात से उत्पन्न होते हैं। जब शुरुआत अच्छी होती है, तो परिणाम हमेशा अच्छा होता है।

सति करणी निरमल निरमली ॥
जिसहि बुझाए तिसहि सभ भली ॥

दिव्य हुकम/मार्गदर्शन में हमारे कार्य शुद्ध हो जाते हैं। अगर हम इसे समझ लें, तो सब कुछ अच्छा हो जाता है।

सति नामु प्रभ का सुखदाई ॥
बिस्वासु सति नानक गुर ते पाई ॥६॥

शाश्वत दिव्य हुकम/मार्गदर्शन हमेशा शांति लाता है; यह विश्वास गुरु के ज्ञान से आता है।

सति बचन साधू उपदेस ॥
सति ते जन जा कै रिदै प्रवेस ॥

गुरु का ज्ञान ही सबसे भले वचन हैं। जो लोग गुरु की शिक्षाओं को आत्मसात करते हैं, ऐसे भक्त अच्छे होते हैं।

सति निरति बूझै जे कोइ ॥
नामु जपत ता की गति होइ ॥

अगर कोई दिव्य ज्ञान को समझता/समझता है; वह ईश्वरीय हुक्म/मार्गदर्शन में रहकर (दुष्प्रवृत्तियों और आंतरिक दुखों से) मुक्त हो जाता है।

आपि सति कीआ सभु सति ॥
आपे जानै अपनी मिति गति ॥

निर्माता भगवान शाश्वत है; उसके हुक्म/मार्गदर्शन को स्वीकार करने और उसका पालन करने से अच्छाई आती है। निर्माता अपनी रचना की सीमा को जानता है।

जिस की सृसटि सु करणैहारु ॥
अवर न बूझि करत बीचारु ॥

निर्माता जिसने सब कुछ बनाया है, वह पूरी रचना का ख्याल रखता है। निर्माता का शाश्वत क्रम कभी किसी के सुझाव या विचारों से नहीं बदलता है।

करते की मिति न जानै कीआ ॥
नानक जो तिसु भावै सो वरतीआ ॥७॥

हम निर्माता भगवान को नहीं समझ सकते। जो कुछ भी निर्माता को पसंद आता है, वही पूरी सृष्टि में होता है। (हम अपनी चतुराई से सृष्टिकर्ता के शाश्वत नियमों को नहीं बदल सकते)।

बिसमन बिसम भए बिसमाद ॥
जिनि बूझिआ तिसु आइआ स्वाद ॥

जो लोग ईश्वरीय आदेश को शाश्वत मानते हैं, वे असीम सृष्टि को देखते हुए शाश्वत आनंद में रहते हैं।

प्रभ कै रंगि राचि जन रहे ॥
गुर कै बचनि पदारथ लहे ॥

जो लोग ईश्वरीय हुक्म/मार्गदर्शन को स्वीकार करते हैं और उसका पालन करते हैं, वे ईश्वरीय प्रेम में डूबे रहते हैं। वे गुरु के वचनों/ज्ञान के माध्यम से ईश्वरीय प्रेम प्राप्त करते हैं।

ओइ दाते दुख काटनहार ॥
जा कै संगि तरै संसार ॥

गुरु के वचन/ज्ञान उन्हें सभी आंतरिक पीड़ाओं से मुक्त करते हैं। गुरु के वचन/ज्ञान से आंतरिक संसार विकारों से मुक्त हो जाता हैं।

जन का सेवकु सो वडभागी ॥
जन कै संगि एक लिव लागी ॥

जो व्यक्ति गुरु के ज्ञान की सेवा/कार्यान्वयन करता है, वह भाग्यशाली है। गुरु की संगति/ज्ञान में हम एक में विलीन हो जाते हैं।

गुन गोबिद कीरतनु जनु गावै ॥
गुर प्रसादि नानक फलु पावै ॥८॥१६॥

जीवन में गुरु के ज्ञान का गायन/अभ्यास करने से ईश्वरीय गुणों के माध्यम से महिमा प्राप्त होती है। गुरु की कृपा/ज्ञान से हमें ईश्वरीय गुणों का फल प्राप्त होता हैं।

सलोकु ॥

आदि सचु जुगादि सचु ॥
है भि सचु नानक होसी भि सचु ॥१॥

सृष्टिकर्ता हमारा आरंभ है, और हमारे आरंभ/गर्भाधान से लेकर अब तक हमारे साथ है। सृष्टिकर्ता अभी भी हमारे साथ है, और हमारे अस्तित्व में हमेशा रहेगा।

असटपदी ॥

चरन सति सति परसनहार ॥
पूजा सति सति सेवदार ॥

सृष्टिकर्ता का अस्तित्व (अंदर और बाहर) शाश्वत है। और जो लोग इसे समझ लेते हैं वे भी शाश्वत हो जाते हैं (कभी भी विकारों में नहीं डगमगाते/मरते नहीं)। सृष्टिकर्ता की सर्वव्यापकता का बोध ही वास्तविक पूजा है। और जो लोग इस तरह पूजा करते हैं वे सच्चे उपासक हैं।

दरसनु सति सति पेखनहार ॥
नामु सति सति धिआवनहार ॥

ईश्वर का सच्चा दर्शन/दृष्टि उसे सभी में देखना है; और जो लोग इसे इस तरह देखते हैं वे सच्चे साधक हैं। ईश्वरीय हुकम शाश्वत है; और जो लोग इस पर ध्यान केंद्रित करते हैं वे सच्चे ध्यान में हैं।

आपि सति सति सभ धारी ॥
आपे गुण आपे गुणकारी ॥

सृष्टिकर्ता शाश्वत है; और ईश्वरीय हुकम में सब कुछ सही क्रम में रहता है। सभी में जीवन का गुण स्वयं सृष्टिकर्ता है, जो इस गुण का भी निर्माता है

सबदु सति सति प्रभु बकता ॥
सुरति सति सति जसु सुनता ॥

ईश्वर का ज्ञान/मार्गदर्शन शाश्वत है; वह जो भी हमें मार्गदर्शन करता है, वह शाश्वत सत्य है। जो ईश्वरीय हुकम/मार्गदर्शन को सुनता/अंतरात्मा में समाहित करता है, उसकी चेतना शाश्वत होती है (जो विकारों से अविचलित रहती है)

बुझनहार कउ सति सभ होइ ॥
नानक सति सति प्रभु सोइ ॥१॥

ईश्वरीय अनुभूति से भीतर की सभी चीजों (चेतना, बुद्धि, मन) में शाश्वतता (अटल स्थिरता) आ जाती है। जो ऐसी स्थिरता में होता है, वह आंतरिक ईश्वर के साथ एक हो जाता है।

सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ ॥
करन करावन तिनि मूलु पछानिआ ॥

जो शाश्वत आंतरिक ईश्वर को स्वीकार करते हैं; वे अपने भीतर सृष्टिकर्ता भगवान को पहचान लेते हैं।

जा कै रिदै बिस्वासु प्रभ आइआ ॥
ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ ॥

जो सृष्टिकर्ता के शाश्वत अस्तित्व में विश्वास रखते हैं। वे तुरंत प्रबुद्ध हो जाते हैं।

भै ते निरभउ होइ बसाना ॥
जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाना ॥

वे सभी भय से मुक्त हो जाते हैं। वे अपने भीतर सृष्टिकर्ता भगवान के साथ एक हो जाते हैं।

बसतु माहि ले   बसतु गडाई ॥
ता कउ   भिंन न कहना जाई ॥

जैसे, जब समान चीजें विलीन हो जाती हैं, तो आप अंतर नहीं कर सकते (आप उसके जैसे बनकर आंतरिक ईश्वर के साथ एक हो जाते हैं)

बूझै   बूझनहारु बिबेक ॥
नाराइन मिले   नानक एक ॥२॥

ज्ञान के माध्यम से हम इसे महसूस करते हैं। इस अनुभूति के माध्यम से हम आंतरिक ईश्वर के साथ एक हो जाते हैं।

ठाकुर का सेवकु   आगिआकारी ॥
ठाकुर का सेवकु   सदा पूजारी ॥

जो ईश्वर के अनुसार जीवन जीता है, वही ईश्वर का सच्चा सेवक/भक्त है। जो हमेशा पूजा/आज्ञापालन में रहता है, वही ईश्वर का सच्चा भक्त हैं।

ठाकुर के सेवक कै   मनि परतीति ॥
ठाकुर के सेवक की   निरमल रीति ॥

सच्चे भक्त का मन आंतरिक ईश्वर के प्रति आस्था के साथ भरा रहता है। सृष्टिकर्ता भगवान के सच्चे भक्त का जीवन पवित्र (सभी दोषों से रहित) हो जाता हैं।

ठाकुर कउ   सेवकु जानै संगि ॥
प्रभ का सेवकु   नाम कै रंगि ॥

सृष्टिकर्ता भगवान का सच्चा भक्त परमात्मा को मानता है; सृष्टिकर्ता भगवान का सच्चा भक्त परमात्मा के हुक्म/मार्गदर्शन में आबद्ध रहता है।

सेवक कउ   प्रभ पालनहारा ॥
सेवक की राखै   निरंकारा ॥

सृष्टिकर्ता भगवान का सच्चा भक्त जानता है कि सृष्टिकर्ता सबका ख्याल रखता है। सृष्टिकर्ता भगवान का सच्चा भक्त जानता है कि सृष्टिकर्ता ही रक्षक है (सभी दोषों से)

सो सेवकु जिसु दइआ प्रभु धारै ॥
नानक सो सेवकु सासि सासि समारै ॥३॥

सच्चा भक्त वह है, जो परमात्मा की कृपा/हुकम को अपने अंदर समाहित कर लेता है; ऐसा भक्त हर सांस के साथ परमात्मा के प्रति समर्पित रहता है।

अपुने जन का परदा ढाकै ॥
अपने सेवक की सरपर राखै ॥

सृष्टिकर्ता अपने भक्तों के दोषों/दुर्गुणों को ढकता/उन्मूलन करता है; सृष्टिकर्ता भक्तों को दोषों से बचाता है।

अपने दास कउ देइ वडाई ॥
अपने सेवक कउ नामु जपाई ॥

सृष्टिकर्ता स्वयं अपने भक्तों को (सद्‌णों की) महिमा प्रदान करता है; सृष्टिकर्ता भक्तों को परमात्मा के हुक्म/मार्गदर्शन का अभ्यास करने की शक्ति प्रदान करता है।

अपने सेवक की आपि पति राखै ॥
ता की गति मिति कोइ न लाखै ॥

सृष्टिकर्ता भक्तों के सम्मान की रक्षा करता है जो लोग परमात्मा के हुक्म/मार्गदर्शन के प्रति समर्पित हैं, उनके जीवन की सुंदरता शब्दों से परे है।

प्रभ के सेवक कउ को न पहूचै ॥
प्रभ के सेवक ऊच ते ऊचे ॥

कोई भी दोष कभी भी भक्तों की प्रबुद्ध चेतना तक नहीं पहुंचता सच्चे भक्त ईश्वरीय गुणों को आत्मसात करके भीतर से ऊपर उठते हैं।

जो प्रभि अपनी सेवा लाइआ ॥
नानक सो सेवकु दह दिसि प्रगटाइआ ॥४॥

जो व्यक्ति अपने आपको आंतरिक ईश्वर की सेवा में लगाता है; वह भक्त सृष्टिकर्ता को सर्वव्यापी रूप में देखता है।

नीकी कीरी महि कल राखै ॥
भसम करै लसकर कोटि लाखै ॥

विनम्र मन हमेशा ईश्वर द्वारा दुर्गुणों की गंदगी से सुरक्षित रहता है; लाखों की सेना (अहंकार में लिप्त) दुर्गुणों में नष्ट हो जाती है।

जिस का सासु न काढत आपि ॥
ता कउ राखत दे करि हाथ ॥

जिसने अहंकार के कारण अपनी सांस (जीवन) नहीं गंवाया है; ऐसे विनम्र मन वाले भक्त की रक्षा सृष्टिकर्ता स्वयं (ईश्वरीय हुकम/मार्गदर्शन के सहारे) करते हैं।

मानस जतन करत बहु भाति ॥
तिस के करतब बिरथे जाति ॥

मनुष्य अपने अहंकार में सभी प्रकार के प्रयास करता है; किन वे सभी प्रयास (अहंकार में) व्यर्थ हो जाते हैं। (कभी संतुष्टि नहीं मिलती)

मारै न राखै अवरु न कोइ ॥
सरब जीआ का राखा सोइ ॥

बाहर से कोई भी चीज या कोई भी व्यक्ति हमारे विवेक को मार या बचा नहीं सकता; आंतरिक ईश्वर के प्रति समर्पण हमें अहंकार और अन्य दुर्गुणों के कारण आंतरिक मृत्यु से बचा सकता है।

काहे सोच करहि रे प्राणी ॥
जपि नानक प्रभ अलख विडाणी ॥५॥

प्रिय! अहंकार से जुड़े विचारों में न पड़ें हमेशा ईश्वरीय हुकम/मार्गदर्शन को अपने भीतर आत्मसात करें और उसका अभ्यास करें।

बारं बार बार प्रभु जपीऐ ॥
पी अंमृतु इहु मनु तनु ध्रपीऐ ॥

ईश्वरीय हुकम का निरंतर अभ्यास करें; ईश्वरीय हुकम/मार्गदर्शन का क्रियान्वयन ही वह अमृत है, जिससे हमें भीतर-बाहर संतुष्टि मिलती है

नाम रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ॥
तिसु किछु अवरु नाही द्रसटाइआ ॥

जो व्यक्ति गुरु के ज्ञान से ईश्वरीय हुकम/मार्गदर्शन को स्वीकार करने का रत्न प्राप्त करता है; वह कभी भी दूसरे मार्ग (दुराचार के मार्ग) को नहीं देखता/अनुसरण नहीं करता।

नामु धनु नामो रूपु रंगु ॥
नामो सुखु हरि नाम का संगु ॥

ऐसे मन के लिए ईश्वरीय हुकम/मार्गदर्शन ही वास्तविक धन और सौंदर्य है। जो लोग ईश्वरीय हुकम/मार्गदर्शन को अपने जीवन में अपनाते/अंतर्निहित करते हैं, उन्हें इसमें शांति मिलती हैं।

नाम रसि जो जन तृपताने ॥
मन तन नामहि नामि समाने ॥

जो लोग ईश्वरीय हुकम/मार्गदर्शन में हमेशा संतुष्ट रहते हैं। वे अंदर-बाहर ईश्वर के प्रति समर्पित रहते हैं।

ऊठत बैठत सोवत नाम ॥
कहु नानक जन कै सद काम ॥६॥

ईश्वर के सेवक हर समय ईश्वरीय हुकम/मार्गदर्शन के प्रति; समर्पित रहते हैं।

बोलहु जसु जिहबा दिनु राति ॥
प्रभि अपनै जन कीनी दाति ॥

अपनी वाणी/व्यवहार से दिन-रात सृष्टिकर्ता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करें; सृष्टिकर्ता प्रभु ने भक्तों को ऐसी संतुष्टि प्रदान की है।

करहि भगति आतम कै चाइ ॥
प्रभ अपने सिउ रहहि समाइ ॥

भक्तजन सच्चे प्रेम से ईश्वरीय ध्यान (दिव्य हुकम/मार्गदर्शन) करते हैं; ऐसा करने से वे अपने भीतर के ईश्वर में लीन रहते हैं।

जो होआ होवत सो जानै ॥
प्रभ अपने का हुकमु पछानै ॥

भक्तजन अपने भूतकाल और वर्तमान में ईश्वरीय हुकम को पहचानते हैं

तिस की महिमा कउन बखानउ ॥
तिस का गुनु कहि एक न जानउ ॥

ऐसे भक्तों की महिमा शब्दों से परे है। कहने से हम उनके गुणों में से एक भी नहीं कह सकते

आठ पहर प्रभ बसहि हजूरे ॥
कहु नानक सेई जन पूरे ॥७॥

उनके मन में हर समय ईश्वर का वास रहता है; वे ही पूर्ण पुरुष हैं

मन मेरे तिन की ओट लेहि ॥
मनु तनु अपना तिन जन देहि ॥

मेरे प्यारे मन! ऐसे समर्पित आत्माओं का सहारा लो (उनके जीवन से सीखो); अपने शरीर और मन (विचार और कर्म) को उन भक्तों जैसा बनाओ।

जिनि जनि अपना प्रभू पछाता ॥
सो जनु सरब थोक का दाता ॥

जिन्होंने अपने भीतर के ईश्वर को पहचान लिया है; उन भक्तों के पास देने के लिए सब कुछ है (उनका जीवन संतोष से भरा है)।

तिस की सरनि सरब सुख पावहि ॥
तिस कै दरसि सभ पाप मिटावहि ॥

तुम उनकी शरण में (उनके जीवन के तरीके के प्रति समर्पण) सारी शांति पा सकते हो। उनकी दृष्टि/बुद्धि से भीतर से सारे पाप/दुर्गुण मिट जाते हैं।

अवर सिआनप सगली छाडु ॥
तिसु जन की तू सेवा लागु ॥

अहंकार की सारी चतुराई छोड़ दो; दिव्य ज्ञान वाले की सेवा करो (गुरु के ज्ञान को आत्मसात करो और उसका अभ्यास करो)।

आवनु जानु न होवी तेरा ॥
नानक तिसु जन के पूजहु सद पैरा ॥८॥१७॥

फिर तुम आंतरिक जन्म और मृत्यु के चक्र में नहीं फँसोगे; उनकी पूजा करो (ज्ञान के अधीन रहो) जो सच्चे भक्त हैं।

सलोकु ॥

सति पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाउ ॥
तिस कै संगि सिखु उधरै नानक हरि गुन गाउ ॥१॥

सतगुरु (सच्चा ज्ञान) वह है जिसके माध्यम से व्यक्ति आंतरिक दिव्यता को महसूस करता है। सिख, जो सतगुरु से सीखता है, वह दोषों से छुटकारा पाने के लिए दिव्य गुणों को आत्मसात करता है।

असटपदी ॥

सतिगुरु सिख की करै प्रतिपाल ॥
सेवक कउ गुरु सदा दइआल ॥

सतगुरु (सच्चा ज्ञान) शिक्षार्थी का पोषण करता है (आंतरिक विकास की ओर मार्ग दिखाता है); गुरु/ज्ञान हमेशा शिक्षार्थी/सिख पर दयालु होता है

सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै ॥
गुर बचनी हरि नामु उचरै ॥

गुरु/ज्ञान, सिख/शिक्षार्थी से बुरी मानसिकता को दूर करता है; गुरु/ज्ञान के मार्गदर्शन के माध्यम से, सिख/शिक्षार्थी दिव्य गुणों को आत्मसात करता है।

सतिगुरु सिख के बंधन काटै ॥
गुर का सिखु बिकार ते हाटै ॥

सतगुरु सिख/शिक्षार्थी को अज्ञानता के बंधनों से मुक्त करता है; गुरु का सिख दोषों से दूर रखता है।

सतिगुरु सिख कउ नाम धनु देइ ॥
गुर का सिखु वडभागी हे ॥

सतगुरु (सच्चा ज्ञान), अपने शिष्य/सिख को दिव्य गुणों की संपदा प्रदान करता है; गुरु/ज्ञान का सिख/साधक सदैव सौभाग्यशाली होता है।

सतिगुरु सिख का हलतु पलतु सवारै ॥
नानक सतिगुरु सिख कउ जीअ नालि समारै ॥१॥

सतगुरु साधक/सिख के विचारों और कार्यों में व्यवस्था लाता है; सतगुरु (सच्चा ज्ञान) जीवन भर सिख/साधक का ख्याल रखता है।

गुर कै गृहि सेवकु जो रहै ॥
गुर की आगिआ मन महि सहै ॥

वे सिख/साधक, जो गुरु/ज्ञान के घर/सीमा में रहते हैं; और, गुरु/ज्ञान की आज्ञा/निर्देशों का पालन करते हैं।

आपस कउ करि कछु न जनावै ॥
हरि हरि नामु रिदै सद धिआवै ॥

और, कभी भी अहंकारी मन को प्राथमिकता नहीं देते हैं; और, केवल दिव्य गुणों को आत्मसात करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

मनु बेचै सतिगुर कै पासि ॥
तिसु सेवक के कारज रासि ॥

वे, जो अपने मन को गुरु/ज्ञान के अधीन कर देते हैं; ऐसे समर्पित सिख/साधक अपने मामलों को सुलझा लेते हैं।

सेवा करत होइ निहकामी ॥
तिस कउ होत परापति सुआमी ॥

वे, जो बिना किसी इच्छा के गुरु/ज्ञान की सेवा/स्वीकार करते हैं; वे अपने भीतर के ईश्वर से मिलते हैं।

अपनी कृपा जिसु आपि करेइ ॥
नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ ॥२॥

जिस पर सतगुरु (ज्ञान) की कृपा होती है (मार्ग दिखाया जाता है), वह सिख/साधक गुरु/ज्ञान की शिक्षाओं पर जीता है।

बीस बिसवे गुर का मनु मानै ॥
सो सेवकु परमेसुर की गति जानै ॥

जिसका मन गुरु/ज्ञान को पूर्ण रूप से स्वीकार/समर्पित कर देता है; वह समर्पित व्यक्ति ईश्वर को प्राप्त करता है।

सो सतिगुरु जिसु रिदै हरि नाउ ॥
अनिक बार गुर कउ बलि जाउ ॥

सतगुरु (सच्चा ज्ञान) वह है, जिसके हृदय/अंतर में ईश्वरीय गुण विद्यमान हैं; ऐसे गुरु/ज्ञान के प्रति सदैव समर्पित रहें।

सरब निधान जीअ का दाता ॥
आठ पहर पारब्रहम रंगि राता ॥

गुरु/ज्ञान सभी आंतरिक निधियों और सुंदर जीवन (गुणों का) प्रदान करने वाला है; गुरु/ज्ञान के माध्यम से, मन आंतरिक ईश्वर के प्रति प्रेम में लीन रहता है।

ब्रहम महि जनु जन महि पारब्रहमु ॥
एकहि आपि नही कछु भरमु ॥

सतगुरु के साथ, सिख/शिक्षार्थी का मन भीतर के ईश्वर के साथ एक हो जाता है; ईश्वर के साथ एक होने से कोई भ्रम नहीं रहता।

सहस सिआनप लइआ न जाईऐ ॥
नानक ऐसा गुरु बडभागी पाईऐ ॥३॥

लेकिन मन की यह स्थिति बाहरी चतुराई से प्राप्त नहीं होती है; ऐसे गुरु/ज्ञान को प्राप्त करना सबसे बड़ा सौभाग्य है।

सफल दरसनु पेखत पुनीत ॥
परसत चरन गति निरमल रीति ॥

अंदर से शुद्ध होने का तरीका है, गुरु/ज्ञान की शिक्षाओं को आत्मसात करना। गुरु के निर्देशों का पालन करने से हम आंतरिक शुद्धता की ओर जाने का मार्ग पाते हैं।

भेटत संगि राम गुन रवे ॥
पारब्रहम की दरगह गवे ॥

गुरु/ज्ञान से मिलने होने से, हमारा मन सर्वव्यापी के प्रति कृतज्ञता में रहता है; और परमात्मा के आंतरिक दरबार में हमेशा उपस्थित रहता है

सुनि करि बचन करन आघाने ॥
मनि संतोखु आतम पतीआने ॥

गुरु की शिक्षाओं को सुनने/अंतरमन करने से हमारे कान/इंद्रियाँ तृप्त होती हैं (बुराई से दूर रहती हैं); गुरु/ज्ञान का प्रयोग करने से मन को भीतर संतोष और शांति मिलती है।

पूरा गुरु अख्यओ जा का मंत्र ॥
अंमृत द्रसटि पेखै होइ संत ॥

पूर्ण गुरु/ज्ञान का मंत्र/निर्देश हमेशा सहायक होता है; गुरु/ज्ञान की अमृत दृष्टि का अनुसरण करने पर हम भीतर से संत/पवित्र बन जाते हैं।

गुण बिअंत कीमति नही पाइ ॥
नानक जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥४॥

गुरु/ज्ञान से प्राप्त दिव्य गुण किसी बाहरी कीमत पर नहीं खरीदे जा सकते; गुरु/ज्ञान के प्रति प्रेम रखने वाले मन को गुरु परमात्मा में विलीन करने में सहायता करते हैं।

जिहबा एक उसतति अनेक ॥
सति पुरख पूरन बिबेक ॥

सृष्टिकर्ता की अनगिनत नेमतों की सराहना करने के लिए हमारे पास सीमित शब्द हैं; गुरु/ज्ञान के साथ हम भीतर से शुद्ध होकर एक में विलीन हो जाते हैं।

काहू बोल न पहुचत प्रानी ॥
अगम अगोचर प्रभ निरबानी ॥

बाहरी चतुराईपूर्ण बातें आंतरिक परमात्मा तक पहुँचने में मदद नहीं कर सकती; स्वयं को विकारों से मुक्त करके हम उस सृष्टिकर्ता से मिलते हैं, जो हमारे बाह्य कर्मकाण्डों से बहुत दूर है।

निराहार निरवैर सुखदाई ॥
ता की कीमति किनै न पाई ॥

हम शांति के स्रोत भगवान को किसी बाहरी सामग्री या मित्रता से लुभा नहीं सकते। हम सृष्टिकर्ता को किसी बाहरी धन-संपत्ति या मीठी-मीठी बातों से नहीं खरीद सकते।

अनिक भगत बंदन नित करहि ॥
चरन कमल हिरदै सिमरहि ॥

हम सृष्टिकर्ता की पूजा किसी भी तरह से कर सकते हैं (हमें कुछ भी हासिल नहीं होता); हम अपने भीतर ईश्वर के प्रति सजग रहकर सृष्टिकर्ता से मिल सकते हैं।

सद बलिहारी सतिगुर अपने ॥
नानक जिसु प्रसादि ऐसा प्रभु जपने ॥५॥

मुझे अपने आप को गुरु/ज्ञान के अधीन कर देना चाहिए, जिनकी कृपा से मैं अपने भीतर के सृष्टिकर्ता को जान सकूं

इहु हरि रसु पावै जनु कोइ ॥
अंमृतु पीवै अमरु सो होइ ॥

जो ईश्वरीय ज्ञान के सार को आत्मसात कर लेता है; ईश्वरीय ज्ञान के अमृत का सेवन करके अमर हो जाता है (विवेक की मृत्यु से बच जाता है)।

उसु पुरख का नाही कदे बिनास ॥
जा कै मनि प्रगटे गुनतास ॥

वह कभी नहीं मरता (भय, चिंता और दुर्गुणों में), जिसमें ईश्वरीय ज्ञान के माध्यम से ईश्वरीय गुण प्रकट होते हैं।

आठ पहर हरि का नामु लेइ ॥
सचु उपदेसु सेवक कउ देइ ॥

जो व्यक्ति गुरु/ज्ञान का अभ्यास करता है, वह हर समय ईश्वरीय गुणों को प्राप्त करता है। गुरु/ज्ञान अनुयायी/साधक को जीवन का ऐसा सुंदर मार्ग प्रदान करता है।

मोह माइआ कै संगि न लेपु ॥
मन महि राखै हरि हरि एकु ॥

जो व्यक्ति गुरु के ज्ञान का अभ्यास करके ईश्वर के प्रति कृतज्ञता से जीवन जीता है, वह कभी भी बाहरी दुख और सुखों के भ्रम में नहीं पड़ता

अंधकार दीपक परगासे ॥
नानक भरम मोह दुख तह ते नासे ॥६॥

अज्ञान के अंधकार में रहने वाला मन गुरु/ज्ञान द्वारा प्रकाशित होता है ऐसा प्रबुद्ध मन सभी भ्रम, आसक्ति और दुख से मुक्त होता है।

तपति माहि ठाढि वरताई ॥
अनदु भइआ दुख नाठे भाई ॥

अंतहीन इच्छाओं में जलता हुआ मन गुरु/ज्ञान द्वारा (संतोष के गुणों को जागृत करके) शांत किया जाता है; इससे सभी आंतरिक पीड़ाओं का अंत करके भीतर शांति और शाश्वत आनंद मिलता है।

जनम मरन के मिटे अंदेसे ॥
साधू के पूरन उपदेसे ॥

गुरु/ज्ञान के मार्गदर्शन से जीवन के उतार-चढ़ाव से संबंधित सभी भय और चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

भउ चूका निरभउ होइ बसे ॥
सगल बिआधि मन ते खै नसे ॥

गुरु के ज्ञान का प्रयोग करने से भीतर से सारे भय मिट जाते हैं और मन निर्भय होकर भीतर के परमात्मा के पास विश्राम करता है; सभी रोग/दुर्गुण भीतर से भाग जाते हैं।

जिस का सा तिनि किरपा धारी ॥
साधसंगि जपि नामु मुरारी ॥

गुरु/ज्ञान की संगति में हम दिव्य गुणों का प्रयोग करते हुए सृष्टिकर्ता की कृपा पाते हैं

थिति पाई चूके भ्रम गवन ॥

सुनि नानक हरि हरि जसु स्रवन ॥७॥

सतगुरु के माध्यम से दिव्य गुणों को सुनने/आंतरिक रूप में ग्रहण करने और उनका प्रयोग करने से सभी भटकाव समाप्त हो जाते हैं; इससे भीतर शाश्वत शांति आती है

निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही ॥

कला धारि जिनि सगली मोही ॥

हम जो कुछ भी बाहर देखते हैं, उस सृष्टिकर्ता की अभिव्यक्ति है, जो हमारे लिए अदृश्य है। सब कुछ एक सृष्टिकर्ता की रचना है, और उसके नियंत्रण में है।

अपने चरित प्रभि आपि बनाए ॥

अपुनी कीमति आपे पाए ॥

हम सृष्टिकर्ता की रचना के अंत/सीमा को शब्दों से नहीं समझ सकते; सृष्टिकर्ता बेहतर जानता है।

हरि बिनु दूजा नाही कोइ ॥

सरब निरंतरि एको सोइ ॥

एक सृष्टिकर्ता सभी में है। कोई दूसरा नहीं है।

ओति पोति रविआ रूप रंग ॥

भए प्रगास साध कै संग ॥

सृष्टिकर्ता सभी आकार और रंगों में पूरी तरह से मौजूद है; यह समझ गुरु/ज्ञान के माध्यम से आती है।

रचि रचना अपनी कल धारी ॥

अनिक बार नानक बलिहारी ॥८॥१८॥

गुरु/ज्ञान के अधीन मन हमेशा सृष्टिकर्ता के अधीन रहता है, जो सब कुछ बनाता है और उसकी देखभाल करता है।

सलोकु ॥

साथि न चालै बिनु भजन   बिखिआ सगली छारु ॥
हरि हरि नामु कमावना   नानक इहु धनु सारु ॥१॥

प्रिय मन! सृष्टिकर्ता के प्रति कृतज्ञता के अलावा कुछ भी शांति से रहने में मदद नहीं करता है; सभी बुरे अवगुणों को त्यागें। ईश्वरीय गुणों को सुनें/अंतर्निहित करें; यह धन आपको जीवन पथ पर आगे बढ़ने में मदद करता है

असटपदी ॥

संत जना मिलि   करहु बीचारु ॥
एकु सिमरि   नाम आधारु ॥

गुरु/ज्ञान से मिलें और आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करें; और सृष्टिकर्ता की याद में जीने के लिए ईश्वरीय गुणों से सहायता लें

अवरि उपाव   सभि   मीत बिसारहु ॥
चरन कमल   रिद   महि उरि धारहु ॥

बाकी सभी बाहरी कर्मकांडों को छोड़ दें (बाहर सृष्टिकर्ता को खोजने के लिए)अपने भीतर सृष्टिकर्ता को पहचानें।

करन कारन   सो प्रभु समरथु ॥
द्रिड़ु करि गहहु   नामु हरि वथु ॥

वह सृष्टिकर्ता, जिसने आपको सब कुछ करने में सक्षम बनाया है; दिव्य गुणों में, संतोष और कृतज्ञता का धन अर्जित करें।

इहु धनु संचहु   होवहु भगवंत ॥
संत जना का   निरमल मंत ॥

आप तभी भाग्यशाली होंगे जब आप कृतज्ञता और संतोष का धन अर्जित करेंगे गुरु का पवित्र ज्ञान इस धन को अर्जित करने का तरीका है।

एक आस राखहु मन माहि ॥
सरब रोग नानक मिटि जाहि ॥१॥

यदि आप केवल दिव्य ज्ञान से ही मांगेंगे तो आपकी सभी बीमारियाँ और दुख समाप्त हो जाएँगे

जिसु धन कउ चारि कुँट उठि धावहि ॥
सो धनु हरि सेवा ते पावहि ॥

शांति का खजाना, जिसके लिए आप बाहर की ओर भाग रहे हैं। वह शांति भीतर के दिव्य की सेवा (हुकम के प्रति समर्पण) में मिलती है।

जिसु सुख कउ नित बाछहि मीत ॥
सो सुखु साधू संगि परीति ॥

जिस खुशी के लिए आप हमेशा तरसते हैं; वह गुरु/ज्ञान के प्रेम में मिलती है।

जिसु सोभा कउ करहि भली करनी ॥
सा सोभा भजु हरि की सरनी ॥

वह महिमा जिसे आप बाहरी उपलब्धियों में खोजने की कोशिश कर रहे हैं। वह सच्ची महिमा आंतरिक दिव्य की शरण (हुकम/मार्गदर्शन के प्रति समर्पण) में मिलती है।

अनिक उपावी रोगु न जाइ ॥
रोगु मिटै हरि अवखधु लाइ ॥

आंतरिक दोषों को किसी भी बाहरी प्रयास से समाप्त नहीं किया जा सकता है। आंतरिक रोग/दुष्प्रभाव दिव्य गुणों से ठीक होते हैं।

सरब निधान महि हरि नामु निधानु ॥
जपि नानक दरगहि परवानु ॥२॥

दिव्य सद्गुण ही सबसे बड़ा खजाना है, उसका प्रयोग करो; यह खजाना भीतर के परमात्मा के दरबार में स्वीकृत होता है (अंदर सम्मान लाता है)

मनु परबोधहु हरि कै नाइ ॥
दह दिसि धावत आवै ठाइ ॥

दिव्य सद्गुणों में, जब हम अपने मन को सभी दिशाओं में विकारों में भागते हुए रोक देते हैं, तो उसे भीतर शांति मिलती है

ता कउ बिघनु न लागै कोइ ॥
जा कै रिदै बसै हरि सोइ ॥

जिस मन में परमात्मा के प्रति कृतज्ञता होती है, उसमें कोई बाधा/अवगुण नहीं रहता

कलि ताती ठाँढा हरि नाउ ॥
सिमरि सिमरि सदा सुख पाउ ॥

परमात्मा के प्रति कृतज्ञता विकारों की आग में जलते/पीड़ित मन को आराम/संतुष्टि प्रदान करती है; परमात्मा के स्मरण में शाश्वत शांति बनी रहती है।

भउ बिनसै पूरन होइ आस ॥
भगति भाइ आतम परगास ॥

आंतरिक शांति की इच्छा तब पूरी होती है, जब विकारों से उत्पन्न भ्रम समाप्त हो जाते हैं। भक्ति (दिव्य गुणों का आत्मसात) से भीतर ज्ञान की प्राप्ति होती है

तितु घरि जाइ बसै अबिनासी ॥
कहु नानक काटी जम फासी ॥३॥

गुरु के ज्ञान से जब मन घर/स्वयं में विश्राम करता है, तो वह विकारों से मुक्त होकर अविनाशी बन जाता है।

ततु बीचारु कहै जनु साचा ॥
जनमि मरै सो काचो काचा ॥

जो व्यक्ति गुरु के मार्गदर्शन से दिव्य ज्ञान के सार को आत्मसात करता है, वह अंतरात्मा में विलीन हो जाता है। जो व्यक्ति जीवित रहते हुए भी विकारों में मरता है, वह निष्ठाहीन और विरक्त (आंतरिक परमात्मा से) रहता है।

आवा गवनु मिटै प्रभ सेव ॥
आपु तिआगि सरनि गुरदेव ॥

जब हम ईश्वरीय हुकम/मार्गदर्शन की सेवा/अभ्यास करते हैं, तो विकारों में आंतरिक मृत्यु का चक्र समाप्त हो जाता है।

इउ रतन जनम का होइ उधारु ॥
हरि हरि सिमरि प्रान आधारु ॥

अपने बढ़े हुए अहंकार को त्यागें और अपने आप को अंतरात्मा के अधीन कर दें। इस तरह इस अनमोल जीवन में अच्छाई आती है, जब हम जीवन के स्रोत से ईश्वरीय हुकम/मार्गदर्शन का सहारा मांगते हैं।

अनिक उपाव न छूटनहारे ॥
सिंमृति सासत बेद बीचारे ॥

हम धार्मिक ग्रंथों के पाठ और प्रवचन सहित सभी बाहरी प्रयासों से (विकारों से) छुटकारा नहीं पा सकते।

हरि की भगति करहु मनु लाइ ॥
मनि बंछत नानक फल पाइ ॥४॥

यदि आप चाहते हैं कि आपकी (आंतरिक शांति की) इच्छाएँ पूरी हों, तो भक्ति में जिएँ (ईश्वरीय गुणों को आत्मसात करने और उनका अभ्यास करने की निरंतर प्रक्रिया)

संगि न चालसि तेरै धना ॥
तूँ किआ लपटावहि मूरख मना ॥

बाहरी धन-दौलत शाश्वत शांति प्राप्त करने में किसी काम की नहीं है; प्रिय मन! तुम व्यर्थ के बाहरी कर्मकांडों में कहाँ फँसे हो?

सुत मीत कुटंब अरु बनिता ॥
इन ते कहहु तुम कवन सनाथा ॥

ये सभी बाहरी संबंध, और उनकी उपस्थिति या अनुपस्थिति, तुम्हें शाश्वत शांति का स्वामी नहीं बना सकते

राज रंग माइआ बिसथार ॥
इन ते कहहु कवन छुटकार ॥

बाहरी शक्ति तुम्हें विकारों द्वारा भीतर दिए गए कष्टों से मुक्त नहीं कर सकती

असु हसती रथ असवारी ॥
झूठा डंफु झूठु पासारी ॥

हाथी-घोड़े जैसी अपनी संपत्ति का अभिमान तुम्हारे आराम का विस्तार मात्र है। (आंतरिक शांति और संतोष से इसका कोई लेना-देना नहीं है)

जिनि दीए तिसु बुझै न बिगाना ॥
नामु बिसारि नानक पछुताना ॥५॥

हम सृष्टिकर्ता की उपेक्षा करते हैं, जिसने हमें जीवन (और सभी संबंध, शक्ति, धन और संपदा) प्रदान किया है; हम हमेशा पीड़ित होते हैं जब हम प्रदाता का धन्यवाद करना भूल जाते हैं

गुर की मति तूँ लेहि इआने ॥
भगति बिना बहु डूबे सिआने ॥

मेरे अज्ञानी मन! गुरु के मार्गदर्शन को आत्मसात करो; बुद्धिमान भी विकारों में डूब जाते हैं, जब वे भक्ति नहीं करते (दिव्य गुणों को आत्मसात करने के लिए)।

हरि की भगति करहु मन मीत ॥
निरमल होइ तुम्हारो चीत ॥

मेरे प्रिय मन! भक्ति में जियो (दिव्य गुणों को आत्मसात करो), जिससे तुम भीतर से शुद्ध हो सकते हो

चरन कमल राखहु मन माहि ॥
जनम जनम के किलबिख जाहि ॥

खुद को ईश्वरीय हुक्म के अधीन करो, ताकि तुम आजीवन आंतरिक पीड़ा से छुटकारा पा सको

आपि जपहु अवरा नामु जपावहु ॥
सुनत कहत रहत गति पावहु ॥

दिव्य गुणों को आत्मसात करो और उनका अभ्यास करो; और शब्दों और कार्यों के माध्यम से दूसरों को भी प्रेरित करें

सार भूत सति हरि को नाउ ॥
सहजि सुभाइ नानक गुन गाउ ॥६॥

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जीवन में दिव्य गुणों को आत्मसात करना है। गुरु के ज्ञान के माध्यम से, दिव्य हुकम को आत्मसात करना और उसका अभ्यास करना अपना स्वभाव बना लें।

गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ॥
बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु ॥

प्रिय मन! दिव्य हुकम/मार्गदर्शन के गायन/अभ्यास से, आप बुराइयों की आंतरिक गंदगी से छुटकारा पा सकते हैं। और आत्म-केंद्रितता/अभिमान का जहर नष्ट हो जाता है।

होहि अचिंतु बसै सुख नालि ॥
सासि ग्रासि हरि नामु समालि ॥

दिव्य गुणों में जीने से चिंताएँ समाप्त हो जाती हैं, और शांति अंदर आती है। प्रिय मन! जीवन में हर सांस के साथ दिव्य गुणों को संजोएं और उनका अभ्यास करें।

छाडि सिआनप सगली मना ॥
साधसंगि पावहि सचु धना ॥

सभी बाहरी चतुराई को त्यागें और गुरु की संगति/ज्ञान से दिव्य गुणों की सच्ची संपदा को आत्मसात करें।

हरि पूँजी संचि करहु बिउहारु ॥
ईहा सुखु दरगह जैकारु ॥

यदि आप दिव्य गुणों की संपदा अर्जित करते हैं और उसका अभ्यास करते हैं, तो आप अंदर से बाहर तक शांति से रहेंगे

सरब निरंतरि एको देखु ॥
कहु नानक जा कै मसतकि लेखु ॥७॥

जिसने गुरु के ज्ञान को अपने माथे/बुद्धि पर लिख लिया है/अंतर्निहित कर लिया है, वह हर समय सभी में भगवान को देखता है

एको जपि एको सालाहि ॥
एकु सिमरि एको मन आहि ॥

एक पर ध्यान केंद्रित करें, कृतज्ञता में जिएं; एक भगवान को याद करें और उसे अपने मन में बसा लें।

एकस के गुन गाउ अनंत ॥
मनि तनि जापि एक भगवंत ॥

सभी गुणों और उपहारों के लिए एक के प्रति आभारी रहें; अंदर से बाहर भगवान के प्रति सचेत रहें।

एको एकु एकु हरि आपि ॥
पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि ॥

एक भगवान सभी में, सभी जगहों पर रहता है

अनिक बिसथार एक ते भए ॥
एकु अराधि पराछत गए ॥

पूरी सृष्टि एक का ही विस्तार है; जब हम अपने आप को भीतर के एक के प्रति समर्पित करते हैं, तो सभी बुराई और बुराइयाँ समाप्त हो जाती हैं।

मन तन अंतरि एकु प्रभु राता ॥
गुर प्रसादि नानक इकु जाता ॥८॥१९॥

एक ईश्वर की प्राप्ति गुरु की कृपा/ज्ञान के माध्यम से होती है, और हम अपने विचारों और कार्यों में; भगवान के साथ एकता प्राप्त करते हैं।

सलोकु ॥

फिरत फिरत प्रभ आइआ परिआ तउ सरनाइ ॥
नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ ॥१॥

प्रिय प्रभु! मैं बाह्य उपलब्धियों में शांति की खोज करके (व्यर्थ) आपकी शरण में आया हूँ; मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे अपनी भक्ति में लगाएँ (मुझे दिव्य गुणों को आत्मसात करने के लिए मार्गदर्शन करें)।

असटपदी ॥

जाचक जनु जाचै प्रभ दानु ॥
करि किरपा देवहु हरि नामु ॥

मेरा मन, एक साधक के रूप में, आपसे यही चाहता है; कि, मुझे दिव्य गुणों के आशीर्वाद दें।

साध जना की मागउ धूरि ॥
पारब्रहम मेरी सरधा पूरि ॥

मैं गुरु के ज्ञान की कामना करता हूँ; हे सृष्टिकर्ता! मेरी इच्छा पूरी करें, कि

सदा सदा प्रभ के गुन गावउ ॥
सासि सासि प्रभ तुमहि धिआवउ ॥

मैं अपने जीवन में दिव्य गुणों का गान/अभ्यास कर सकूँ; और हर साँस के साथ सृष्टिकर्ता पर ध्यान केंद्रित कर सकूँ।

चरन कमल सिउ लागै प्रीति ॥
भगति करउ प्रभ की नित नीति ॥

मैं अपने भीतर दिव्य के साथ प्रेम विकसित कर सकूँ; मैं हमेशा सच्ची भक्ति (जीवन में दिव्य गुणों को आत्मसात करने की) कर सकूँ।

एक ओट एको आधारु ॥
नानकु मागै नामु प्रभ सारु ॥१॥

मैं एक भगवान का समर्थन चाहता हूँ; मैं सर्वोच्च दिव्य गुणों की माँग करता हूँ।

प्रभ की द्रसटि महा सुखु होइ ॥
हरि रसु पावै बिरला कोइ ॥

ईश्वरीय दर्शन/हुकम में रहने से भीतर शाश्वत शांति मिलती है। ऐसा मन दुर्लभ है जो ईश्वर के प्रेम में रहता है।

जिन चाखिआ से जन तृपताने ॥
पूरन पुरख नही डोलाने ॥

ईश्वरीय प्रेम को आत्मसात करने वाला मन संतुष्ट रहता है; ईश्वरीय गुणों से परिपूर्ण व्यक्ति कभी भी विकारों में नहीं डगमगाता।

सुभर भरे प्रेम रस रंगि ॥
उपजै चाउ साध कै संगि ॥

ईश्वरीय प्रेम में लीन रहने वाला मन सदैव संतुष्ट रहता है। गुरु की संगति/ज्ञान से मन सदैव प्रसन्न रहता है।

परे सरनि आन सभ तिआगि ॥
अंतरि प्रगास अनदिनु लिव लागि ॥

वह मन जो आंतरिक दिव्यता के लिए सभी बाह्य आसक्तियों को छोड़ देता है, वह भीतर से प्रबुद्ध हो जाता है और अंतर्यामी ईश्वर में लीन हो जाता है।

बडभागी जपिआ प्रभु सोइ ॥
नानक नामि रते सुखु होइ ॥२॥

भाग्यशाली वह है जो अंतर्यामी ईश्वर का ध्यान करते हुए रहता है। ईश्वरीय गुणों से युक्त मन हमेशा शांत रहता है।

सेवक की मनसा पूरी भई ॥
सतिगुर ते निरमल मति लई ॥

जो मन अंतर्यामी ईश्वर के अनुसार रहता है, उसकी सभी (आंतरिक शांति की) इच्छाएं पूरी होती हैं। क्योंकि ऐसा मन गुरु/ज्ञान से मार्गदर्शन प्राप्त करता है और उसके अनुसार जीवन जीता है।

जन कउ प्रभु होइओ दइआलु ॥
सेवकु कीनो सदा निहालु ॥

जो व्यक्ति आंतरिक ईश्वर के अनुसार जीवन जीता है, वह ईश्वरीय हुकम की कृपा में मुक्त जीवन जीता है।

बंधन काटि मुकति जनु भइआ ॥
जनम मरन दूखु भ्रमु गइआ ॥

जो मन अंतर्यामी ईश्वर के अनुसार रहता है, वह विकारों विकारों की बेड़ियाँ से मुक्त हो जाता है। ऐसा मन बाह्य भय और बाह्य जन्म-मृत्यु के भ्रम से मुक्त हो जाता है

इछ पुनी   सरधा सभ पूरी ॥
रवि रहिआ   सद संगि हजूरी ॥

जो व्यक्ति आंतरिक ईश्वर की सेवा करता है, उसकी इच्छा (आंतरिक शांति की) पूरी हो जाती है। ऐसा मन हमेशा सभी स्थानों पर अपने साथ सृष्टिकर्ता को महसूस करता है।

जिस का सा   तिनि लीआ मिलाइ ॥
नानक   भगती नामि समाइ ॥३॥

ईश्वर के अनुसार जीवन जीने से हम अपने भीतर सृष्टिकर्ता में विलीन हो जाते हैं। इस तरह, भक्त लोग दिव्य गुणों में लीन हो जाते हैं।

सो किउ बिसरै   जि घाल न भानै ॥
सो किउ बिसरै   जि कीआ जानै ॥

प्रिय मन! उस रचयिता को कभी मत भूलना जो तुम्हारे प्रयासों को कभी व्यर्थ नहीं जाने देता; उस रचयिता को कभी मत भूलना जो तुम्हारे कर्मों को पहचानता है।

सो किउ बिसरै   जिनि सभु किछु दीआ ॥
सो किउ बिसरै   जि जीवन जीआ ॥

उस रचयिता को कभी मत भूलना जो तुम्हें सब कुछ देता है। उस रचयिता को कभी मत भूलना जो तुम्हारे भीतर जी रहा है (उस रचयिता के बिना कोई जीवन नहीं है)।

सो किउ बिसरै   जि अगनि महि राखै ॥
गुर प्रसादि   को बिरला लाखै ॥

उस रचयिता को कभी मत भूलना जो (हुकम/मार्गदर्शन के माध्यम से) तुम्हें बुराइयों की आग से बचाता है। वह मन जो गुरु के ज्ञान के माध्यम से इसे समझता है, दुर्लभ और श्रेष्ठ है।

सो किउ बिसरै जि बिखु ते काढै ॥
जनम जनम का टूटा गाढै ॥

उस रचयिता को कभी मत भूलना जो तुम्हें बुराइयों के जहर से ऊपर उठाता है। एक मन जो लंबे समय से दिव्य आत्मा से टूट गया है, वह भी (अंतर दिव्यता के अनुसार जीने से) फिर से जुड़ जाता है।

गुरि पूरै ततु इहै बुझाइआ ॥
प्रभु अपना नानक जन धिआइआ ॥४॥

पूर्ण गुरु/ज्ञान, हमें यह समझ प्रदान करता है; तभी, हमारा मन आंतरिक दिव्य पर केंद्रित होता है और उसकी सेवा करता है।

साजन संत करहु इहु कामु ॥
आन तिआगि जपहु हरि नामु ॥

प्रिय मन! एक सच्चा और नेक मित्र बनो; बाह्य दिखावे को त्यागकर दैवी गुणों का अभ्यास करो

सिमरि सिमरि सिमरि सुख पावहु ॥
आपि जपहु अवरह नामु जपावहु ॥

सृष्टिकर्ता की याद में जीवन व्यतीत करके आंतरिक शांति प्राप्त करें; अपने जीवन में दैवी गुणों का अभ्यास करें और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करें (अपने कार्यों के माध्यम से)।

भगति भाइ तरीऐ संसारु ॥
बिनु भगती तनु होसी छारु ॥

दैवी गुणों का अभ्यास करके अपने आंतरिक संसार को विकारों से मुक्त करें; दैवी गुणों को आत्मसात किए बिना और उनका अभ्यास किए बिना आपका जीवन व्यर्थ हो जाता है।

सरब कलिआण सूख निधि नामु ॥
बूडत जात पाए बिस्रामु ॥

दैवी गुणों का खजाना सभी तरह से मदद करता है; और भीतर शांति लाता है। दुर्गुणों में डूबा हुआ मन दैवी गुणों के सहारे विश्राम पाता है

सगल दूख का होवत नासु ॥
नानक नामु जपहु गुनतासु ॥५॥

दैवी गुणों का अभ्यास करने से सभी आंतरिक दुख समाप्त हो जाते हैं; इसके लिए अपने जीवन में दैवी गुणों का अभ्यास करें।

उपजी प्रीति प्रेम रसु चाउ ॥
मन तन अंतरि इही सुआउ ॥

जिस मन में दैवी गुणों के प्रति प्रेम विकसित होता है। उसके विचारों और कार्यों में सुंदरता होती है।

नेत्रहु पेखि दरसु सुखु होइ ॥
मनु बिगसै साध चरन धोइ ॥

वह अपनी आंखों से जो कुछ भी देखता है उसमें सृष्टिकर्ता को महसूस करके शांति प्राप्त करता है। ऐसा मन गुरु/ज्ञान के अधीन होकर हमेशा प्रसन्न रहता है।

भगत जना कै मनि तनि रंगु ॥
बिरला कोऊ पावै संगु ॥

जो लोग ईश्वर के अधीन हो जाते हैं, उनका शरीर और मन (कार्य और विचार) दैवी गुणों से युक्त हो जाते हैं। वे दुर्लभ भाग्यशाली होते हैं जो हमेशा आंतरिक ईश्वर के सानिध्य में रहते हैं।

एक बसतु दीजै करि मइआ ॥
गुर प्रसादि नामु जपि लइआ ॥

हे सृष्टिकर्ता प्रभु! मुझे एक बात/समझ प्रदान करें कि, मैं गुरु के ज्ञान का प्रयोग करके ईश्वरीय गुणों को आत्मसात कर सकूँ।

ता की उपमा कही न जाइ ॥
नानक रहिआ सरब समाइ ॥६॥

जो लोग ऐसा करते हैं, उनकी महिमा शब्दों से परे है; उनका पूरा शरीर (विचार, कर्म, व्यवहार) ईश्वर से आच्छादित है।

प्रभ बखसंद दीन दइआल ॥
भगति वछल सदा किरपाल ॥

सृष्टिकर्ता हमेशा दयालु, कृपालु है; भक्तों का प्रेमी सृष्टिकर्ता हमेशा आशीर्वाद देता है।

अनाथ नाथ गोबिंद गुपाल ॥
सरब घटा करत प्रतिपाल ॥

कोई दूसरा देखभाल करने वाला नहीं है। सृष्टिकर्ता सबका ख्याल रखता है। सबमें रहने वाला सृष्टिकर्ता स्वयं हमारा पालन-पोषण करता है।

आदि पुरख कारण करतार ॥
भगत जना के प्रान अधार ॥

सबका सृष्टिकर्ता ही सबका आधार है

जो जो जपै सु होइ पुनीत ॥
भगति भाइ लावै मन हीत ॥

जो लोग सृष्टिकर्ता पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, वे ही भक्त हैं

हम निरगुनीआर नीच अजान ॥
नानक तुमरी सरनि पुरख भगवान ॥७॥

हे सृष्टिकर्ता प्रभु! हमें आशीर्वाद दें कि हम आपकी शरण में आ सकें, ताकि अज्ञानता और तुच्छ गुणहीन मनःस्थिति से छुटकारा पा सकें।

सरब बैकुँठ मुकति मोख पाए ॥
एक निमख हरि के गुन गाए ॥

जिस क्षण हम दिव्य गुणों का अभ्यास करते हैं, हम सभी दुर्गुणों से मुक्त हो जाते हैं, और अपने भीतर शांति का स्वर्ग पाते हैं

अनिक राज भोग बडिआई ॥
हरि के नाम की कथा मनि भाई ॥

वास्तविक आंतरिक साम्राज्य की महिमा तब प्राप्त होती है जब हम दिव्य गुणों के प्रति प्रेम विकसित करते हैं

बहु भोजन कापर संगीत ॥
रसना जपती हरि हरि नीत ॥

जब हमारी जीभ/चेतना ईश्वर पर केन्द्रित होती है, तो हमें अपने जीवन में सम्मान, संतोष और सद्भाव प्राप्त होता है

भली सु करनी सोभा धनवंत ॥
हिरदै बसे पूरन गुर मंत ॥

गुरु के मंत्र/ज्ञान का आंतरिककरण, आंतरिक महिमा और धन के लिए सर्वोत्तम प्रयास है

साधसंगि प्रभ देहु निवास ॥
सरब सूख नानक परगास ॥८॥२०॥

हे सृष्टिकर्ता प्रभु! मैं प्रार्थना करता हूँ कि मुझे गुरु की संगति/ज्ञान मिले, जो मन को शांति की ओर ले जाए

सलोकु ॥

सरगुन निरगुन निरंकार सुँन समाधी आपि ॥
आपन कीआ नानका आपे ही फिरि जापि ॥१॥

जब हम संपूर्ण दृश्यमान जगत में मौजूद एक पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हम निरंतर ध्यान में रहते हैं (किसी बाहरी प्रयास/अनुष्ठान की आवश्यकता नहीं रह जाती)

असटपदी ॥

जब अकारु इहु कछु न द्रिसटेता ॥
पाप पुँन तब कह ते होता ॥

बाहरी जगत के सभी भेदभावों को पीछे छोड़कर, जब मन एक पर केंद्रित होता है, तब अच्छाई या बुराई के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता (अच्छाई मन के लिए स्वाभाविक हो जाती है)।

जब धारी आपन सुँन समाधि ॥
तब बैर बिरोध किसु संगि कमाति ॥

जब मन निरंतर आंतरिक ईश्वर से जुड़ा रहता है; तब, उसे किसी से कोई दुश्मनी या घृणा नहीं रहती।

जब इस का बरनु चिहनु न जापत ॥
तब हरख सोग कहु किसहि बिआपत ॥

जब मन रंग, आकार, चिह्नों के आधार पर भेदभाव करना बंद कर देता है; बाहरी दुनिया द्वारा दिए गए सुख-दुख से हम अब प्रभावित नहीं होते

जब आपन आप आपि पारब्रहम ॥
तब मोह कहा किसु होवत भरम ॥

जब हम खुद को एक भगवान के साथ पहचान लेते हैं; तब, भौतिक अस्तित्व के बाहरी आसक्तियों द्वारा बनाए गए सभी भ्रम मिट जाते हैं।

आपन खेलु आपि वरतीजा ॥
नानक करनैहारु न दूजा ॥१॥

प्रिय मन! यह समझ लो कि एक भगवान ही अपनी रचना में रहता है, कोई दूसरा नहीं

जब होवत प्रभ केवल धनी ॥
तब बंध मुकति कहु किस कउ गनी ॥

जब हम एक पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, तो कोई बंधन नहीं रह जाता, जिससे बाहरी कर्मकाण्डों के माध्यम से मुक्ति मांगी जाती थी

जब एकहि हरि अगम अपार ॥
तब नरक सुरग कहु कउन अउतार ॥

जब हम यह समझ जाते हैं कि एक ही सभी स्थानों पर, सभी समयों में है, तब हम स्वर्ग और नर्क के चक्रों के भ्रम से मुक्त हो जाते हैं

जब निरगुन प्रभ सहज सुभाइ ॥
तब सिव सकति कहहु कितु ठाइ ॥

जब हम यह समझ जाते हैं कि एक ही सभी में समान रूप से विद्यमान है, तो ईश्वर से जुड़ी काल्पनिक कहानियों के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता

जब आपहि आपि अपनी जोति धरै ॥
तब कवन निडरु कवन कत डरै ॥

जब, सृष्टिकर्ता स्वयं सभी में विद्यमान है, तब किसी से डरने या किसी को डराने की आवश्यकता नहीं रह जाती

आपन चलित आपि करनैहार ॥
नानक ठाकुर अगम अपार ॥२॥

प्रिय मन! यह समझो कि सृष्टिकर्ता स्वयं ही अपनी रचना में काम कर रहा है

अबिनासी सुख आपन आसन ॥
तह जनम मरन कहु कहा बिनासन ॥

जब हम आंतरिक ईश्वर को शांति के स्रोत के रूप में पहचान लेते हैं तब हमारा मन आंतरिक जन्म और मृत्यु के चक्र में विकारों में नष्ट नहीं होता।

जब पूरन करता प्रभु सोइ ॥
तब जम की त्रास कहहु किसु होइ ॥

जब हमारा मन सृष्टिकर्ता को कर्ता के रूप में पहचान लेता है; तब शारीरिक मृत्यु या हानि के सभी भय दूर हो जाते हैं।

जब अबिगत अगोचर प्रभ एका ॥
तब चित्र गुपत किसु पूछत लेखा ॥

जब मन को यह समझ आ जाता है कि सृष्टिकर्ता सर्वव्यापी है; तब उसे चित्रगुप्त की कहानियों से कोई सरोकार नहीं रहता।

जब नाथ निरंजन अगोचर अगाधे ॥
तब कउन छुटे कउन बंधन बाधे ॥

जब हम सृष्टिकर्ता को अपना प्रभु स्वामी मानते हैं; तब न तो हम किसी बंधन में आते हैं, न ही हम दूसरों को बांधते हैं।

आपन आप आप ही अचरजा ॥
नानक आपन रूप आप ही उपरजा ॥३॥

प्रिय मन! यह समझो कि यह पूरी सृष्टि सृष्टिकर्ता की छवि है, जो इसे बनाता है और चलाता है

जह निरमल पुरखु पुरख पति होता ॥
तह बिनु मैलु कहहु किआ धोता ॥

जब मन अंदर और बाहर पवित्र सृष्टिकर्ता को पहचान लेता है; तो वह अंदर से बाहर तक पवित्र हो जाता है; पवित्रता के लिए अनुष्ठानिक स्नान की आवश्यकता नहीं रह जाती।

जह निरंजन निरंकार निरबान ॥
तह कउन कउ मान कउन अभिमान ॥

जब मन सर्वव्यापी सृष्टिकर्ता पर केन्द्रित हो जाता है; तब अहंकार से मुक्ति मिल जाती है।

जह सरूप केवल जगदीस ॥
तह छल छिद्र लगत कहु कीस ॥

जब मन अंतरात्मा के साथ एकाकार हो जाता है। तब वह सभी छल-कपट से रहित हो जाता है।

जह जोति सरूपी जोति संगि समावै ॥
तह किसहि भूख कवनु तृपतावै ॥

जब मन जीवन के सर्वव्यापी स्रोत में विलीन हो जाता है; भौतिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थनाओं की आवश्यकता और लालच नहीं रह जाता।

करन करावन करनैहारु ॥
नानक करते का नाहि सुमारु ॥४॥

प्रिय मन! हमेशा सृष्टिकर्ता भगवान पर ध्यान केन्द्रित करो, जिनकी रचना अनंत है।

जब अपनी सोभा आपन संगि बनाई ॥
तब कवन माइ बाप मित्र सुत भाई ॥

जब मन को यह एहसास हो जाता है कि पूरी सृष्टि सृष्टिकर्ता की है; तो अपने और बेगाने का कोई भेदभाव नहीं रह जाता।

जह सरब कला आपहि परबीन ॥
तह बेद कतेब कहा कोऊ चीन ॥

यदि मन स्वयं को सभी क्षमताओं के स्वामी सृष्टिकर्ता के अधीन कर देता है तो धार्मिक ग्रंथों के अनुष्ठानिक पठन की आवश्यकता नहीं रह जाती।

जब आपन आपु आपि उरि धारै ॥
तउ सगन अपसगन कहा बीचारै ॥

यदि मन अंतरात्मा के साथ जुड़ जाता है तो शकुन अपशकुन की चर्चाओं की कोई चिंता नहीं रह जाती।

जह आपन ऊच आपन आपि नेरा ॥
तह कउन ठाकुरु कउनु कहीऐ चेरा ॥

जब हम अपने भीतर के सर्वोच्च ईश्वर के करीब हो जाते हैं तो किसी भी स्वयंभू भगवान की सेवा करने की आवश्यकता नहीं रह जाती।

बिसमन बिसम रहे बिसमाद ॥
नानक अपनी गति जानहु आपि ॥५॥

प्रिय मन! अद्त आंतरिक दिव्य पर ध्यान केंद्रित करके अपने सच्चे स्वय को पहचानें

जह अछल अछेद अभेद समाइआ ॥
ऊहा किसहि बिआपत माइआ ॥

मन, जो सभी छल-कपट को छोड़कर आंतरिक दिव्य के साथ एकाकार हो जाता है वह माया (बाहरी दुनिया से दुख और सुख का भ्रम) से मुक्त हो जाता है।

आपस कउ आपहि आदेसु ॥
तिहु गुण का नाही परवेसु ॥

मन, जो खुद को आंतरिक दिव्य के अधीन कर लेता है; सभी आंतरिक भटकाव से छुटकारा पाता है, और भीतर विश्राम करता है।

जह एकहि एक एक भगवंता ॥
तह कउनु अचिंतु किसु लागै चिंता ॥

जब हम एक भगवान में विलीन हो जाते हैं; तब चिंता करने या न करने की कोई चर्चा नहीं रह जाती (मन निरंतर निर्भय अवस्था में आ जाता है)।

जह आपन आपु आपि पतीआरा ॥
तह कउनु कथै कउनु सुननैहारा ॥

जब मन अपने दिव्य स्व के साथ एकाकार हो जाता है ज्ञान की बाहरी चर्चाओं की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती।

बहु बेअंत ऊच ते ऊचा ॥
नानक आपस कउ आपहि पहूचा ॥६॥

प्रिय मन! अपने वास्तविक दिव्य स्व तक पहुँचने के लिए शाश्वत सर्वोच्च सृष्टिकर्ता पर ध्यान केंद्रित रखें

जह आपि रचिओ परपंचु अकारु ॥
तह कउनु कथै कउनु सुननैहारा ॥

वह मन, जिसने अपने अन्दर विकारों का विस्तार कर लिया है; सदैव अच्छे-बुरे विचारों में भटकाव और अस्थिरता को बढ़ाता रहता है।

पापु पुँनु तह भई कहावत ॥
कोऊ नरक कोऊ सुरग बंछावत ॥

ऐसा मन (आंतरिक ईश्वर से विरक्त) पाप-पुण्य से जुड़ी कहानियाँ और भ्रम विकसित करता है इस कारण ऐसा मन निरंतर किसी बाहरी स्वर्ग की कामना करता रहता है, और नरक से डरता रहता है।

आल जाल माइआ जंजाल ॥
हउमै मोह भरम भै भार ॥

ऐसा मन हमेशा सभी तरह से बाहरी दुखों और सुखों में उलझा रहता है और भौतिक सुखों से जुड़ी चिंताओं और भय के बोझ से भरा रहता है।

दूख सूख मान अपमान ॥
अनिक प्रकार कीओ बख्यान ॥

ऐसा मन हमेशा बाहरी दुखों और सुखों के बारे में चिंतित रहता है; और बाह्य उपलब्धियों से जुड़े सम्मान या अनादर पर चर्चा करता रहता है

आपन खेलु आपि करि देखै ॥
खेलु संकोचै तउ नानक एकै ॥७॥

इस तरह, ऐसा मन हमेशा अपने विचारों में उलझा रहता है, जो बाहरी उपलब्धियों से उत्पन्न विभिन्न नाटकों से उत्पन्न होते हैं। लेकिन, अगर यह बाहरी भटकाव के सभी नाटकों को छोड़ देता है, तो यह आंतरिक ईश्वर में विलीन हो सकता है

जह अबिगतु भगतु तह आपि ॥
जह पसरै पासारु संत परतापि ॥

जहाँ यह मन आंतरिक ईश्वर के प्रति समर्पित हो जाता है, वह ईश्वर की छवि बन जाता है; जहाँ मन ईश्वर के प्रति समर्पण की ओर विस्तृत होता है, वहाँ मन ज्ञान की शक्ति द्वारा अभिव्यक्त होता है।

दुहू पाख का आपहि धनी ॥
उन की सोभा उनहू बनी ॥

जब हम आंतरिक ईश्वर को अपने विचारों और कार्यों के स्वामी के रूप में पहचानते हैं, तो हमारे मन की महिमा समझ से परे हो जाती है।

आपहि कउतक करै अनद चोज ॥
आपहि रस भोगन निरजोग ॥

आंतरिक ईश्वर के प्रति समर्पित मन बाहर के सभी काम करते हुए भी शांति में रहता है; ऐसा समर्पित मन सभी बाहरी दुखों और सुखों को भोगते हुए भी विरक्त और मुक्त होता है।

जिसु भावै तिसु आपन नाइ लावै ॥
जिसु भावै तिसु खेल खिलावै ॥

जो मन ईश्वर के प्रति समर्पण के लिए प्रेम विकसित करता है, वह स्वयं को ईश्वरीय हुक्म की सेवा में लगा देता है। यह पूरे समय ईश्वरीय हुकम/मार्गदर्शन में खेलता/जीता है

बेसुमार अथाह अगनत अतोलै ॥
जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै ॥८॥२१॥

प्रिय मन! अनमोल और अतुलनीय आंतरिक ईश्वर का सेवक बनो; अंतरात्मा के अनुसार जीवन जियें

सलोकु ॥

जीअ जंत के ठाकुरा आपे वरतणहार ॥
नानक एको पसरिआ दूजा कह द्रिसटार ॥१॥

हे प्रभु, आप सबके स्वामी हैं! आप सबमें रहते हैं वही सर्वत्र है, कोई दूसरा नहीं है।

असटपदी ॥

आपि कथै आपि सुननैहारु ॥
आपहि एकु आपि बिसथारु ॥

सृष्टिकर्ता हमें वाणी और श्रवण की शक्ति प्रदान करता है। सृष्टिकर्ता हमारे आंतरिक और बाह्य विस्तार का निर्माण करता है, और उसमें रहता है।

जा तिसु भावै   ता सृसटि उपाए ॥
आपनै भाणै   लए समाए ॥

सृष्टिकर्ता के हुकम में भीतर और बाहर सब कुछ निर्मित है; और उसके हुकम से सब कुछ संचालित होता है

तुम ते भिंन नही किछु होइ ॥
आपन सूति   सभु जगतु परोइ ॥

हे सृष्टा! आपसे परे कुछ भी नहीं है आप सबमें हैं, जैसे माला में मोतियों को रखने वाला धागा।

जा कउ   प्रभ जीउ   आपि बुझाए ॥
सचु नामु   सोई जनु पाए ॥

ईश्वरीय ज्ञान के माध्यम से, जब कोई अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान लेता है उसे ईश्वरीय गुणों की महिमा प्राप्त होती है।

सो समदरसी   तत का बेता ॥
नानक   सगल सृसटि का जेता ॥१॥

वास्तविक ज्ञानी वह है, जो सबमें एक को देखता है; उसने विचारों की आंतरिक दुनिया पर विजय प्राप्त कर ली है।

जीअ जंत्र सभ   ता कै हाथ ॥
दीन दइआल   अनाथ को नाथु ॥

सृष्टि का साधन सृष्टा के पास है; सृष्टिकर्ता सभी का दयालु स्वामी है।

जिसु राखै   तिसु कोइ न मारै ॥
सो मूआ   जिसु मनहु बिसारै ॥

जो अपने भीतर के सृष्टा प्रभु को याद करता है, उसे कोई भी बुराइयाँ नहीं मार सकती; लेकिन, जो अपने भीतर के सृष्टा को भूल जाता है, वह बुराइयों में मर जाता है।

तिसु तजि अवर कहा को जाइ ॥
सभ सिरि एकु निरंजन राइ ॥

प्रिय मन! सृष्टिकर्ता को छोड़कर, विकारों में मत भटको; सृष्टिकर्ता सर्वोच्च है और निष्कलंक है (कभी गलत नहीं होता)।

जीअ की जुगति जा कै सभ हाथि ॥
अंतरि बाहरि जानहु साथि ॥

जीवन पथ का ज्ञान ईश्वरीय हुकम/मार्गदर्शन में है। प्रिय मन! सृष्टिकर्ता को हमेशा अपने करीब पहचानो।

गुन निधान बेअंत अपार ॥
नानक दास सदा बलिहार ॥२॥

सद्‌गुणों के भण्डार शाश्वत प्रभु के प्रति समर्पित हो जाओ

पूरन पूरि रहे दइआल ॥
सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥

सृष्टिकर्ता सभी पर दयालु है, और सभी में मौजूद है

अपने करतब जानै आपि ॥
अंतरजामी रहिओ बिआपि ॥

सृष्टिकर्ता सभी में रहता है, और अपनी रचना का ख्याल रखता है

प्रतिपालै जीअन बहु भाति ॥
जो जो रचिओ सु तिसहि धिआति ॥

सृष्टिकर्ता सभी का पालन-पोषण करता है, और सब कुछ उसकी निगरानी में है

जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥
भगति करहि हरि के गुण गाइ ॥

जो सृष्टिकर्ता के प्रति प्रेम विकसित करता है, वह उसमें विलीन हो जाता है; वे ही सच्चे भक्त हैं, जो अपने जीवन में दिव्य गुणों का प्रयोग करते हैं।

मन अंतरि बिस्वासु करि मानिआ ॥
करनहारु नानक इकु जानिआ ॥३॥

वे, जो पूर्ण विश्वास के साथ आंतरिक दिव्य को स्वीकार करते हैं; वे अपने भीतर एक भगवान को महसूस करते हैं।

जनु लागा हरि एकै नाइ ॥
तिस की आस न बिरथी जाइ ॥

सृष्टिकर्ता का सच्चा भक्त आंतरिक दिव्य से जुड़ा हुआ है; उसकी (शाश्वत शांति की) इच्छा कभी अधूरी नहीं रहती।

सेवक कउ सेवा बनि आई ॥
हुकमु बूझि परम पदु पाई ॥

सृष्टिकर्ता का भक्त आंतरिक दिव्य की सेवा करना जानता है (दिव्य हुकम के प्रति समर्पित कैसे होना है)। ऐसे भक्त दिव्य हुकम का पालन करके उच्चतम स्थिति (आंतरिक दिव्य के साथ एकता) प्राप्त करते हैं।

इस ते ऊपरि नही बीचारु ॥
जा कै मनि बसिआ निरंकारु ॥

दिव्य हुकम को अपने भीतर आत्मसात करने से बड़ा कोई ज्ञान नहीं है।

बंधन तोरि भए निरवैर ॥
अनदिनु पूजहि गुर के पैर ॥

जो लोग घृणा और शत्रुता की बेड़ियों को तोड़ते हैं, घृणा रहित जीवन जीते हैं, वे ही ईश्वरीय हुकम के प्रति समर्पित होते हैं; सही मायने में गुरु की पूजा/सेवा करते हैं

इह लोक सुखीए परलोक सुहेले ॥
नानक हरि प्रभि आपहि मेले ॥४॥

जो लोग अंदर से शांत हैं, वे बाहर से भी खुश हैं आंतरिक शांति की स्थिति दिव्य हुकम द्वारा लाई जाती है।

साधसंगि मिलि करहु अनंद ॥
गुन गावहु प्रभ परमानंद ॥

प्रिय मन! गुरु की संगति/ज्ञान में दिव्य गुणों का प्रयोग करके शांति पाएँ।

राम नाम ततु करहु बीचारु ॥
द्रुलभ देह का करहु उधारु ॥

अपने अनमोल जीवन को बेहतर बनाने के लिए निर्माता की सर्वव्यापकता के गुण पर ध्यान केंद्रित करें

अंमृत बचन हरि के गुन गाउ ॥
प्रान तरन का इहै सुआउ ॥

अपने जीवन को बुराइयों से बचाने का एकमात्र तरीका गुरु के ज्ञान के अमृत के माध्यम से दिव्य गुणों का प्रयोग करना है

आठ पहर प्रभ पेखहु नेरा ॥
मिटै अगिआनु बिनसै अंधेरा ॥

अंदर के अज्ञान के अंधेरे को हमेशा यह एहसास करके दूर किया जा सकता है कि भगवान हमारे करीब है

सुनि उपदेसु हिरदै बसावहु ॥
मन इछे नानक फल पावहु ॥५॥

गुरु के ज्ञान को आत्मसात करने से मन की इच्छा (शाश्वत शांति की) पूरी होती है

हलतु पलतु दुइ लेहु सवारि ॥
राम नामु अंतरि उरि धारि ॥

दिव्य गुणों को आत्मसात करने से हम अंदर से बाहर तक बेहतर होते हैं

पूरे गुर की पूरी दीखिआ ॥
जिसु मनि बसै तिसु साचु परीखिआ ॥

जो व्यक्ति गुरु का ज्ञान प्राप्त करता है और उसका अभ्यास करता है, वह अपने भीतर के ईश्वर को पहचान लेता है

मनि तनि नामु जपहु लिव लाइ ॥
दूखु दरदु मन ते भउ जाइ ॥

प्रिय मन! विचारों और कार्यों में दैवी गुणों का अभ्यास करने से सभी दुख और भय मिट जाते हैं

सचु वापारु करहु वापारी ॥
दरगह निबहै खेप तुमारी ॥

दैवी हुकम/मार्गदर्शन का अभ्यास करें, जो आपको दैवी गुणों की संपदा प्रदान करता है, जो आपके साथ निभती है

एका टेक रखहु मन माहि ॥
नानक बहुरि न आवहि जाहि ॥६॥

यदि आप आंतरिक दिव्य का सहारा लें, तो आप विकारों के चक्र से बच जाएंगे

तिस ते दूरि कहा को जाइ ॥
उबरै राखनहारु धिआइ ॥

भगवान से कभी दूर न जाएं, जिस पर ध्यान केंद्रित करने से आप विकारों से बच जाते हैं

निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥
प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै ॥

हम सृष्टिकर्ता की कृपा से विकारों से मुक्त हो जाते हैं, जिन्हें याद करने से कोई भय और चिंता नहीं रहती

जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख ॥
नामु जपत मनि होवत सूख ॥

जो व्यक्ति आंतरिक दिव्य पर ध्यान केंद्रित करता है, वह कभी भी अंदर से पीड़ित नहीं होता दैवी गुणों का अभ्यास करने से, अंदर हमेशा शांति बनी रहती है।

चिंता जाइ मिटै अहंकारु ॥
तिसु जन कउ कोइ न पहुचनहारु ॥

आंतरिक दिव्य पर ध्यान केंद्रित करने से, हम चिंताओं और अहंकार से मुक्त हो जाते हैं। भक्त लोगों की चेतना के पास कोई भी विकार कभी नहीं आ सकता।

सिर ऊपरि ठाढा गुरु सूरा ॥
नानक ता के कारज पूरा ॥७॥

जो लोग गुरु के ज्ञान को अपनी बुद्धि से ऊपर रखते हैं उनका (आंतरिक शांति प्राप्त करने का) मामला हल हो जाता है।

मति पूरी अंमृतु जा की द्रसटि ॥
दरसनु पेखत उधरत सृसटि ॥

गुरु की शिक्षाओं से चेतना में दिव्य ज्ञान का अमृत आता है; गुरु की दूरदृष्टि/ज्ञान का प्रयोग करके विचारों की पूरी आंतरिक दुनिया को बुराइयों से बचाया जाता है।

चरन कमल जा के अनूप ॥
सफल दरसनु सुँदर हरि रूप ॥

गुरु के ज्ञान से भरे वचनों में अद्वितीय सौंदर्य है; गुरु की दूरदृष्टि/ज्ञान हमारे अंदर सद्गुण आधारित सुंदर आत्मा का निर्माण करने में सफल होती है।

धंनु सेवा सेवकु परवानु ॥
अंतरजामी पुरखु प्रधानु ॥

जो व्यक्ति गुरु की बुद्धि की सेवा/कार्यान्वयन करता है, वह सौभाग्यशाली है; वह वास्तव में स्वीकृत है। उसने अपने जीवन में आंतरिक ईश्वर को अपना मार्गदर्शक बना लिया है

जिसु मनि बसै सु होत निहालु ॥
ता कै निकटि न आवत कालु ॥

जिसके मन में सृष्टिकर्ता निवास करता है, वह भीतर से आनंदित रहता है; वह कभी भी बुराइयों में आंतरिक मृत्यु का सामना नहीं करता।

अमर भए अमरा पदु पाइआ ॥
साधसंगि नानक हरि धिआइआ ॥८॥२२॥

जो व्यक्ति बुराइयों में कभी नहीं मरता, वह अमर है; वह अमरत्व की स्थिति को प्राप्त कर चुका है। यह मन की स्थिति गुरु की संगति/ज्ञान के माध्यम से जीवन के स्रोत - निर्माता पर ध्यान केंद्रित करने से प्राप्त होती है

सलोकु ॥

गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु ॥
हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु ॥१॥

गुरु/ज्ञान अज्ञानता के अंधकार को दूर करने का उपाय प्रदान करता है गुरु/ज्ञान मन को प्रबुद्ध करके ईश्वरीय कृपा प्राप्त करने का मार्ग है।

असटपदी ॥

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा ॥
नामु प्रभू का लागा मीठा ॥

गुरु की संगति/ज्ञान के माध्यम से, हम अपने भीतर ईश्वर का अवलोकन करते हैं गुरु के ज्ञान के माध्यम से, मन ईश्वरीय गुणों में मिठास/प्रेम पाता है।

सगल समिग्री एकसु घट माहि ॥
अनिक रंग नाना द्रिसटाहि ॥

गुरु के ज्ञान के माध्यम से भीतर की हर चीज - विचार, धारणा, भावनाएं - आंतरिक ईश्वर पर केंद्रित होती हैं

नउ निधि अंम्रितु प्रभ का नामु ॥
देही महि इस का बिस्रामु ॥

गुरु के ज्ञान के माध्यम से, ईश्वरीय गुण - सभी खजानों और अमृत का स्रोत - हमारे भीतर टिक जाते हैं

सुँन समाधि अनहत तह नाद ॥
कहनु न जाई अचरज बिसमाद ॥

जहां ईश्वरीय गुणों का स्थान है, वहां वास्तविक समाधि और निर्बाध आनंद है; ऐसी स्थिति को शब्दों में वर्णित नहीं किया जा सकता है

तिनि देखिआ जिसु आपि दिखाए ॥
नानक तिसु जन सोझी पाए ॥१॥

जो व्यक्ति गुरु की बुद्धि के माध्यम से आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करता है, वह अपने भीतर निर्माता को देखता है। ऐसे समर्पित व्यक्ति को आत्मज्ञान प्राप्त हो जाता है

सो अंतरि सो बाहरि अनंत ॥
घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत ॥

अंदर-बाहर, सृष्टिकर्ता सबमें व्याप्त है

धरनि माहि आकास पइआल ॥
सरब लोक पूरन प्रतिपाल ॥

सृष्टि में सृष्टिकर्ता सबका पालन-पोषण कर रहा है

बनि तिनि परबति है पारब्रहमु ॥
जैसी आगिआ तैसा करमु ॥

घास के तिनके से लेकर ऊंचे पहाड़ों तक, सब कुछ सृष्टिकर्ता का निवास है, और ईश्वरीय हुकुम में है

पउण पाणी बैसंतर माहि ॥
चारि कुँट दह दिसे समाहि ॥

सृष्टिकर्ता हवा, पानी, अग्नि - हर जगह और सभी दिशाओं में व्याप्त है।

तिस ते भिंन नही को ठाउ ॥
गुर प्रसादि नानक सुखु पाउ ॥२॥

ऐसा कोई स्थान नहीं है जो सृष्टिकर्ता से रहित हो हम गुरु के ज्ञान के माध्यम से (सृष्टिकर्ता की सर्वव्यापकता को महसूस करके) शांति से रह सकते हैं।

बेद पुरान सिंमृति महि देखु ॥
ससीअर सूर नख्यत्र महि एकु ॥

यदि आप शास्त्रों में कुछ देखना चाहते हैं, तो जानें कि सृष्टिकर्ता सर्वव्यापी है

बाणी प्रभ की सभु को बोलै ॥
आपि अडोलु न कबहू डोलै ॥

प्रिय मन! यह समझें कि सृष्टिकर्ता सभी में बोलता है; ऐसा करने से आप अविचलित रहेंगे

सरब कला करि खेलै खेल ॥
मोलि न पाईऐ गुणह अमोल ॥

जो सृष्टि में व्याप्त है, उसे कोई भी भौतिक वस्तु नहीं खरीद सकती

सरब जोति महि जा की जोति ॥
धारि रहिओ सुआमी ओति पोति ॥

सृष्टिकर्ता स्वयं ही जीवंत शक्ति के रूप में स्थापित होकर सभी में व्याप्त है

गुर परसादि भरम का नासु ॥

नानक तिन महि एहु बिसासु ॥३॥

गुरु के ज्ञान से, जो लोग भ्रम से मुक्त हो जाते हैं, उन्हें यह विश्वास हो जाता है कि एक भगवान ही सब में रह रहा है

संत जना का पेखनु सभु ब्रहम ॥

संत जना कै हिरदै सभि धरम ॥

गुरु की दृष्टि/ज्ञान नए और बेहतर आत्म का निर्माण करने की शक्ति है। गुरु का हृदय/मस्तिष्क धर्म से भरा हुआ है।

संत जना सुनहि सुभ बचन ॥

सरब बिआपी राम संगि रचन ॥

हर कोई गुरु से हमेशा अच्छाई सुनता/प्राप्त करता है गुरु ईश्वर के प्रेम में डूबा रहता है।

जिनि जाता तिस की इह रहत ॥

सति बचन साधू सभि कहत ॥

जो व्यक्ति गुरु के वचनों/ज्ञान को समझता है और उसका अभ्यास करता है, उसका जीवन उसी जीवनशैली को अपनाता है

जो जो होइ सोई सुखु मानै ॥

करन करावनहारु प्रभु जानै ॥

जो लोग गुरु के ज्ञान को अपने जीवन में लागू करते हैं, वे सभी परिस्थितियों में शांति से रहते हैं, और सृष्टिकर्ता को कर्ता और प्रदाता के रूप में समझते हैं

अंतरि बसे बाहरि भी ओही ॥

नानक दरसनु देखि सभ मोही ॥४॥

जो व्यक्ति गुरु के ज्ञान से प्रेम विकसित करता है, वह सृष्टिकर्ता को अंदर और बाहर देखता है

आपि सति कीआ सभु सति ॥

तिसु प्रभ ते सगली उतपति ॥

गुरु/ज्ञान स्वयं शाश्वत है; जो गुरु के ज्ञान का प्रयोग करते हैं, वे भी अमर हो जाते हैं (अमर = जो दोषों में नहीं मरता)। हमारे भीतर शाश्वत भाव की रचना, शाश्वत परमात्मा के द्वारा होती है।

तिसु भावै ता करे बिसथारु ॥

तिसु भावै ता एकंकारु ॥

यदि हम गुरु के ज्ञान के अनुसार जीवन जीते हैं, तो हमें अपने भीतर दिव्य गुणों का विस्तार प्राप्त होता है। जब हम गुरु के ज्ञान के अनुसार जीवन जीते हैं, तो हम अपने भीतर के दिव्य में विलीन हो जाते हैं।

अनिक कला लखी नह जाइ ॥

जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥

गुरु के ज्ञान के आशीर्वाद को शब्दों में वर्णित नहीं किया जा सकता; जो गुरु के ज्ञान के अनुसार जीवन जीते हैं, वे अपने भीतर के दिव्य से मिल जाते हैं

कवन निकटि कवन कहीऐ दूरि ॥

आपे आपि आप भरपूरि ॥

परमात्मा के साथ एकता, भौतिक निकटता (दूर या पास) का विषय नहीं है। सृष्टिकर्ता हर जगह भीतर और बाहर व्याप्त है (गुरु के ज्ञान के माध्यम से उसमें विलीन होने की आवश्यकता है)।

अंतरगति जिसु आपि जनाए ॥

नानक तिसु जन आपि बुझाए ॥५॥

जो गुरु के ज्ञान के माध्यम से आंतरिक दिव्य को पहचानता है। ऐसा समर्पित व्यक्ति अपने वास्तविक दिव्य आत्मा को पहचानता है।

सरब भूत आपि वरतारा ॥
सरब नैन आपि पेखनहारा ॥

(गुरु के ज्ञान के माध्यम से हम यह महसूस करते हैं) सृष्टिकर्ता इस पूरे बाहरी विस्तार में व्याप्त है। सृष्टिकर्ता स्वयं मुझे इन सभी आँखों से देख रहा है (जो मेरे आस पास हैं)।

सगल समग्री जा का तना ॥
आपन जसु आप ही सुना ॥

यह पूरी सृष्टि रचयिता/भगवान का शरीर है; वह अपनी रचना के माध्यम से सब कुछ सुनता/देखता है

आवन जानु इकु खेलु बनाइआ ॥
आगिआकारी कीनी माइआ ॥

सृजन और विनाश का खेल भी रचयिता के आदेश में है

सभ कै मधि अलिपतो रहै ॥
जो किछु कहणा सु आपे कहै ॥

सृजनकर्ता सब में व्याप्त है; और स्वयं सब में बोलता/j।ता है

आगिआ आवै आगिआ जाइ ॥
नानक जा भावै ता लए समाइ ॥६॥

सृजनकर्ता के आदेश में हम आते हैं और जाते हैं यदि हम रचयिता की सर्वव्यापकता को स्वीकार करते हैं, तो हम उसमें विलीन हो जाते हैं।

इस ते होइ सु नाही बुरा ॥
ओरै कहहु किनै कछु करा ॥

जब हम इस ज्ञान को आत्मसात कर लेते हैं (कि रचयिता सर्वव्यापी है) तो कुछ भी गलत नहीं होता और इस समझ के बिना कभी कोई अच्छाई हासिल नहीं हुई है।

आपि भला करतूति अति नीकी ॥
आपे जानै अपने जी की ॥

जो इस बोध में जीता है वह अच्छा है, और हमेशा अच्छाई के लिए काम करता है; वह आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करता है।

आपि साचु धारी सभ साचु ॥
ओति पोति आपन संगि राचु ॥

वह पवित्र दिव्य ज्ञान को आत्मसात करके भीतर से शुद्ध हो जाता है। वह आंतरिक दिव्य के साथ एक रहता है।

ता की गति मिति कही न जाइ ॥
दूसर होइ त सोझी पाइ ॥

हम ऐसे मन की सराहना शब्दों में नहीं कर सकते, जो आंतरिक दिव्य के साथ एक रहता है। हम केवल तभी कह सकते हैं जब उसमें कुछ और देखने को हो; वह तो सृष्टिकर्ता की छवि बन जाता है।

तिस का कीआ सभु परवानु ॥
गुर प्रसादि नानक इहु जानु ॥७॥

साक्षात्कार प्राप्त व्यक्ति का हर कार्य गुरु की कृपा/ज्ञान द्वारा स्वीकृत होता है

जो जानै तिसु सदा सुखु होइ ॥
आपि मिलाइ लए प्रभु सोइ ॥

साक्षात्कार प्राप्त व्यक्ति हमेशा शांति में रहता है वह आंतरिक ईश्वर के साथ एकाकार रहता है।

ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु ॥
जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु ॥

वही सच्चा धनवान, उच्च कुल का, और सम्माननीय है। जो व्यक्ति आंतरिक ईश्वर के साथ एक हुआ रहता है, वह जीवित रहते हुए ही मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

धंनु धंनु धंनु जनु आइआ ॥
जिसु प्रसादि सभु जगतु तराइआ ॥

ऐसे समर्पित व्यक्तियों का जीवन उद्देश्यपूर्ण/सफल होता है जिस व्यक्ति ने गुरु की कृपा/ज्ञान द्वारा अपने आंतरिक संसार को विकारों से बचा लिया है।

जन आवन का इहै सुआउ ॥
जन कै संगि चिति आवै नाउ ॥

ऐसे भक्तजन इसी (दुष्प्रवृत्तियों से मुक्ति) को अपने जीवन का उद्देश्य मानते हैं ऐसे समर्पित व्यक्तियों की संगति में मन ईश्वरीय गुणों पर केंद्रित होता है।

आपि मुकतु मुकतु करै संसारु ॥
नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु ॥८॥२३॥

वे विकारों से मुक्त हो जाते हैं, और अपने पूरे आंतरिक संसार को भी विकारों से मुक्त कर लेते हैं मैं अपने आपको ऐसे समर्पित व्यक्तियों (जीवन कला) पर समर्पित करता हूँ।

सलोकु ॥

पूरा प्रभु आराधिआ पूरा जा का नाउ ॥
नानक पूरा पाइआ पूरे के गुन गाउ ॥१॥

उस पूर्ण सृष्टिकर्ता को स्मरण रखें, जिसका पूर्ण हुक्म/आदेश सृष्टि में कार्य करता है जब हम अपने जीवन में ईश्वरीय गुणों का गान/अभ्यास करते हैं, तो हम अपने भीतर के ईश्वर के साथ एकता प्राप्त करते हैं।

असटपदी ॥

पूरे गुर का सुनि उपदेसु ॥
पारब्रहमु निकटि करि पेखु ॥

प्रिय मन! गुरु के ज्ञान को सुनकर/अंतरमन करके सृष्टिकर्ता को अपने निकट पाएँ।

सासि सासि सिमरहु गोबिंद ॥
मन अंतर की उतरै चिंद ॥

आंतरिक ईश्वर के प्रति सजग रहने से सभी चिंताएँ समाप्त हो जाती हैं।

आस अनित तिआगहु तरंग ॥
संत जना की धूरि मन मंग ॥

सभी इच्छाओं को त्यागकर गुरु से ज्ञान मांगो।

आपु छोडि बेनती करहु ॥
साधसंगि अगनि सागरु तरहु ॥

अपने अहंकारी अभिमान को त्यागें, और गुरु के ज्ञान के लिए प्रार्थना करें गुरु की संगति/ज्ञान से आप विकारों के सागर से बच जाते हैं।

हरि धन के भरि लेहु भंडार ॥
नानक गुर पूरे नमसकार ॥१॥

दिव्य गुणों के भण्डार से खुद को भर लें दिव्य गुणों के भण्डार के लिए खुद को गुरु/ज्ञान के अधीन कर दें।

खेम कुसल सहज आनंद ॥
साधसंगि भजु परमानंद ॥

गुरु की संगति/ज्ञान से शांति, संतुलन और आनंद मिलता है।

नरक निवारि उधारहु जीउ ॥
गुन गोबिंद अंमृत रसु पीउ ॥

दिव्य गुणों के अमृत को आंतरिक रूप से ग्रहण करके विकारों के नरक से छुटकारा पाएँ

चिति चितवहु नाराइण एक ॥
एक रूप जा के रंग अनेक ॥

उस एक को याद करें, जो विविधता में रहता है।

गोपाल दामोदर दीन दइआल ॥
दुख भंजन पूरन किरपाल ॥

सृष्टिकर्ता सभी का दयालु पालनहार है; वह अपनी कृपा/हुक्म के माध्यम से हमें दुखों से मुक्ति दिलाता है

सिमरि सिमरि नामु बारं बार ॥
नानक जीअ का इहै अधार ॥२॥

ईश्वरीय हुकम/मार्गदर्शन के प्रति सजग रहना ही मन को विकारों के नरक से बचाने का एकमात्र तरीका है

उतम सलोक साध के बचन ॥
अमुलीक लाल एहि रतन ॥

गुरु की शिक्षाएँ सबसे अनमोल रत्न हैं

सुनत कमावत होत उधार ॥
आपि तरै लोकह निसतार ॥

जो लोग गुरु के ज्ञान को सुनकर/आंतरिक रूप से ग्रहण करके दिव्य गुणों की इस संपदा को अर्जित करते हैं। वे स्वयं को विकारों की लहरों से मुक्त करते हैं, और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करते हैं

सफल जीवनु सफलु ता का संगु ॥
जा कै मनि लागा हरि रंगु ॥

गुरु के ज्ञान में जीया गया जीवन सफल होता है; दिव्य गुणों को आत्मसात करने वाले लोगों की संगति जीवन को उद्देश्यपूर्ण बनाती है।

जै जै सबदु अनाहदु वाजै ॥
सुनि सुनि अनद करे प्रभु गाजै ॥

दिव्य हुकम/मार्गदर्शन, जो हमें सभी प्रयासों में सफलता दिलाने में मदद करता है, हमेशा हमारे भीतर बिना किसी बाधा के रहता है। दिव्य हुकम/मार्गदर्शन को स्वीकार

करने और उसका अभ्यास करने से हमें शांति मिलती है, जो हमारे भीतर गर्जना (निर्भीक और निष्पक्ष आवाज) करता है

प्रगटे गुपाल महाँत कै माथे ॥
नानक उधरे तिन कै साथे ॥३॥

भगवान उन लोगों की बुद्धि में प्रकट होता है, जो गुरु के ज्ञान में रहते हैं। हम ऐसे समर्पित लोगों की संगति में मुक्त हो जाते हैं।

सरनि जोगु सुनि सरनी आए ॥
करि किरपा प्रभ आप मिलाए ॥

गुरु के ज्ञान को आत्मसात करके, आइए हम सृष्टिकर्ता की अत्यंत आवश्यक शरण में जाएं; गुरु की कृपा/ज्ञान के माध्यम से, हम आंतरिक दिव्य से मिलते हैं।

मिटि गए बैर भए सभ रेन ॥
अंमृत नामु साधसंगि लैन ॥

गुरु के ज्ञान के माध्यम से जीवन में दिव्य गुणों के अमृत को आत्मसात करने से हमारे सभी आंतरिक शत्रु धूल में मिल जाते हैं

सुप्रसंन भए गुरदेव ॥
पूरन होई सेवक की सेव ॥

(आंतरिक दोषों का अंत इस बात का संकेत है कि) समर्पित व्यक्ति ने दिव्य आशीर्वाद प्राप्त किया है, और सेवा स्वीकृत हुई है

आल जंजाल बिकार ते रहते ॥
राम नाम सुनि रसना कहते ॥

दिव्य गुणों को आत्मसात करने और उनका प्रयोग करने से सभी उलझाने वाले दोष समाप्त हो जाते हैं

करि प्रसादु दइआ प्रभि धारी ॥
नानक निबही खेप हमारी ॥४॥

(उलझनों और बुराइयों से मुक्त होना इस बात का संकेत है कि) भक्त ने निर्माता की दया प्राप्त कर ली है, और उसका व्यापार/भक्ति सफल है

प्रभ की उसतति करहु संत मीत ॥
सावधान एकागर चीत ॥

मेरे प्यारे मन! पूरी एकाग्रता के साथ निर्माता के प्रति कृतज्ञ रहो

सुखमनी सहज गोबिंद गुन नाम ॥
जिसु मनि बसै सु होत निधान ॥

दिव्य ज्ञान ही असली मणि है, जो भीतर संतुलन और शांति लाता है (बाहरी जादुई पत्थरों के पीछे मत भागो)। जब दिव्य ज्ञान हृदय/मन में बसता है, तो व्यक्ति भीतर से धनवान बन जाता है।

सरब इछा ता की पूरन होइ ॥
प्रधान पुरखु प्रगटु सभ लोइ ॥

जो लोग दिव्य ज्ञान का प्रयोग करते हैं, उनकी सभी इच्छाएँ (शाश्वत शांति की) पूरी होती हैं। उनमें निर्माता सभी आंतरिक स्तरों (चेतना, बुद्धि, मन) पर प्रकट होता है।

सभ ते ऊच पाए असथानु ॥
बहुरि न होवै आवन जानु ॥

वे भीतर मन की उच्चतम अवस्था को प्राप्त करते हैं; वे कभी भी बुराइयों के चक्र में नहीं फँसते।

हरि धनु खाटि चलै जनु सोइ ॥
नानक जिसहि परापति होइ ॥५॥

वे दिव्य ज्ञान की सम्पत्ति अर्जित करते हैं, जो सच्चे गुरु से मिलते/उनका अनुसरण करते हैं

खेम साँति रिधि नव निधि ॥
बुधि गिआनु सरब तह सिधि ॥

जिन्होंने अपनी बुद्धि को गुरु के ज्ञान से सुसज्जित किया है, उन्हें सभी शांति, शक्तियाँ, सिद्धियाँ और खजाने भीतर प्राप्त होते हैं

बिदिआ तपु जोगु प्रभ धिआनु ॥
गिआनु स्रेसट ऊतम इसनानु ॥

सभी ज्ञान, तप और योग आंतरिक दिव्यता पर ध्यान केंद्रित करने में हैं। गुरु के ज्ञान में मन को धोना सबसे श्रेष्ठ स्नान है।

चारि पदारथ कमल प्रगास ॥
सभ कै मधि सगल ते उदास ॥

गुरु के ज्ञान में कमल/मन खिलता है; और हमें भीतर सब कुछ/संतुष्टि मिलती है। गुरु के ज्ञान में प्रकाशित मन बाहरी दुखों और सुखों से विरक्त रहता है; भीतर शाश्वत शांति में रहता है।

सुँदरु चतुरु तत का बेता ॥
समदरसी एक द्रसटेता ॥

जो गुरु के ज्ञान में रहता है वह वास्तव में सुंदर और बुद्धिमान है; वह सबमें एक को देखता है

इह फल तिसु जन कै मुखि भने ॥
गुर नानक नाम बचन मनि सुने ॥६॥

ये सभी गुण उन लोगों को प्राप्त होते हैं, जो गुरु के वचनों/ज्ञान को सुनते/अंतरात्मा में धारण करते हैं और उनका अभ्यास करते हैं

इहु निधानु जपै मनि कोइ ॥
सभ जुग महि ता की गति होइ ॥

जो लोग दिव्य गुणों के खजाने का अभ्यास करते हैं वे हर समय (दुष्प्रवृत्तियों से) मुक्त रहते हैं।

गुण गोबिंद नाम धुनि बाणी ॥
सिमृति सासत्र बेद बखाणी ॥

सभी धार्मिक शास्त्रों का ज्ञान दिव्य गुणों की धुन में सुंदर आत्म के निर्माण के लिए कहता है

सगल मताँत केवल हरि नाम ॥
गोबिंद भगत कै मनि बिस्राम ॥

पूरे धार्मिक ज्ञान का सार दिव्य गुण हैं; और यह सार भक्त जनों के हृदय में बसता है

कोटि अप्राध साधसंगि मिटै ॥
संत कृपा ते जम ते छुटै ॥

गुरु की संगति/ज्ञान, भीतर से लाखों दुर्गुणों को समाप्त कर देता है। गुरु की कृपा/ज्ञान से हम यम/दुर्गुणों से मुक्ति पाते हैं।

जा कै मसतकि करम प्रभि पाए ॥
साध सरणि नानक ते आए ॥७॥

जिस व्यक्ति को यह ज्ञान प्राप्त हो जाता है, वह गुरु के ज्ञान की शरण में आ जाता है

जिसु मनि बसै सुनै लाइ प्रीति ॥
तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥

जो लोग गुरु के ज्ञान को सुनते हैं और उसे आत्मसात करके उसका अभ्यास करते हैं। ऐसे भक्त जनों का हृदय/मन सृष्टिकर्ता की याद में रहता है।

जनम मरन ता का दूखु निवारै ॥

दुलभ देह ततकाल उधारै ॥

जो लोग ईश्वरीय ज्ञान के अनुसार जीवन जीते हैं, वे विकारों में भीतरी जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाते हैं। (दुष्प्रवृत्तियों से छुटकारा पाकर) वे अपने बहुमूल्य जीवन को उद्देश्यपूर्ण बनाने में देर नहीं करते।

निरमल सोभा अंमृत ता की बानी ॥

एकु नामु मन माहि समानी ॥

जो लोग ईश्वरीय ज्ञान को आत्मसात करते हैं, वे आंतरिक शुद्धता प्राप्त करते हैं; और उनका आचरण जीवन का अमृत बन जाता है

दूख रोग बिनसे भै भरम ॥

साध नाम निरमल ता के करम ॥

गुरु के ज्ञान को अच्छे कर्मों में लागू करके, वे सभी आंतरिक दुख, बीमारियों, भय और भ्रम से छुटकारा पा लेते हैं

सभ ते ऊच ता की सोभा बनी ॥

नानक इह गुणि नामु सुखमनी ॥८॥२४॥

भक्तों को सर्वोच्च महिमा (दुख, बीमारियों, भय और भ्रम से छुटकारा पाने की) प्राप्त होती है। यह गुण दिव्य ज्ञान से प्राप्त होती है, जो सुखमनी है - वास्तविक दार्शनिक मणि - शांति का स्रोत।

This book is published by **Guru Nanak Foundation for Humanity**
O/A **Sikhs for Humanity** - Edmonton, Alberta, Canada
Email us at **allisone1469@gmail.com**